॥ राधास्वामी ॥

# प्रेम बानी राधास्वामी

## तीसरा भाग

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

# प्रेमबानी राधास्वामी

## तीसरा भाग

जिसको कि

परम सन्त सतगुरू हुज़ूर महाराज ने
अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया

जो बाइजाज़त
राधास्वामी ट्रस्ट के छापी गई

तेरहवीं बार) सन् 2017 (1000 प्रतियाँ

प्रकाशक
राधास्वामी ट्रस्ट,
स्वामीबाग़, आगरा 282005

**All rights reserved**

कोई साहब बिना इजाजत इस पोथी को नहीं छाप सकते

| | | |
|---|---|---|
| पहली बार | सन् 1896 | १००० प्रतियाँ |
| दूसरी बार | | |
| तीसरी बार | सन् 1902 | १००० प्रतियाँ |
| चौथी बार | सन् 1913 | १००० प्रतियाँ |
| पाचवीं बार | सन् 1926 | १००० प्रतियाँ |
| छटी बार | सन् 1946 | १००० प्रतियाँ |
| सातवीं बार | सन् 1948 | १००० प्रतियाँ |
| आठवीं बार | सन् 1968 | १००० प्रतियाँ |
| नवीं बार | सन् 1977 | १००० प्रतियाँ |
| दसवीं बार | सन् 1982 | १००० प्रतियाँ |
| ग्यारहवीं बार | सन् 1992 | १००० प्रतियाँ |
| बारहवीं बार | सन् 1992 | ३००० प्रतियाँ |
| तेरहवीं बार | सन् 2003 | ३००० प्रतियाँ |
| चौदहवीं बार) | सन् 2017 | (१००० प्रतियाँ |

50 रुपये

संगणक लेखक :

कोमल डेस्क टॉप प्रिंटिंग,

जैन मंदिर, तुमसर 441912

मुद्रक :

इमेजिनेशन डिज़ाइंस, 509/B एटलान्टिस हाईट्स

साराभाई मेन रोड, वडीवाडी, वडोदरा 390017

फोन 0265-2337808 मो 9898707808

* * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * *

# प्रेमबानी राधास्वामी

## तीसरा भाग

* * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * *

# राधास्वामी सहाय

## सूचीपत्र प्रेमबानी तीसरा भाग


| शब्द की टेक | | सफ़ा |
|---|---|---|
| अतोला तेरी कर न सके कोई तोल | -- -- | १ |
| अमी की बरखा हुइ भारी | -- -- | ३०६ |
| अरी हे पड़ोसिन प्यारी कोई जतन बता दो | -- | १४४ |
| अरी हे सहेली प्यारी क्या सोवे जग माहीं | -- | १५९ |
| अरी हे सहेली प्यारी क्यों न सुने गुरु बैना | -- | १५८ |
| अरी हे सहेली प्यारी गुरु का ध्यान सम्हारो | -- | १५० |
| अरी हे सहेली प्यारी गुरु की महिमा भारी | -- | १५१ |
| अरी हे सहेली प्यारी गुरु की सरन सम्हारो | -- | १५४ |
| अरी हे सहेली प्यारी गुरु बिन कौन उतारे | -- | १४७ |
| अरी हे सहेली प्यारी गुरु सँग फाग रचाओ | -- | १४२ |
| अरी हे सहेली प्यारी घट में शब्द जगाओ | -- | १४८ |
| अरी हे सहेली प्यारी चेत करो सतसंगा | -- | १४९ |
| अरी हे सहेली प्यारी जग है विष का ख़ाना | -- | १५२ |
| अरी हे सहेली प्यारी जुड़ मिल गुरु गुन गाओ | | १४० |
| अरी हे सहेली प्यारी दूत बिरोधी भारी | -- | १५४ |
| अरी हे सहेली प्यारी प्रीतम दरस दिखादे | -- | १३५ |
| अरी हे सहेली प्यारी प्रेम की दौलत भारी | -- | १५३ |
| अरी हे सहेली प्यारी मन से क्यों तू हारे | -- | १५७ |
| अरी हे सहेली प्यारी यह जग रैन का सुपना | | १५५ |
| अरी हे सहेली प्यारी हँगता बैरन भारी-- | -- | १५६ |
| अरी हे सहेली प्यारी हिल मिल गुरु सँग चालो | -- -- | १४३ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| अरी हे सुहागन हेली तू बड़ भागन भारी | | -- | १४६ |
| अरी हे सुहावन आली प्रीतम ख़बर सुनादे | | -- | १३६ |
| अरे मन क्यों नहिं धारे गुरु ज्ञान | -- | -- | ३३६ |
| अहो मेरे प्यारे सतगुरु अमृत धार बहा दो | | -- | १३९ |
| अहो मेरे प्यारे सतगुरु अचरज शब्द सुना दो | | | १३८ |
| अहो मेरे प्यारे सतगुरु प्रेम दान मोहिं | | -- | १३७ |
| अहो हे दयाला सतगुरु मेरी सुरत चढ़ा दो | | -- | १३६ |
| आओ रे जीव आओ आज | -- | -- | २०९ |
| आज आई बहार बसंत | -- | -- | २५३ |
| आज आया बसंत नवीन | -- | -- | २५९ |
| आज गुरु आये जीव उबारन | -- | -- | २०१ |
| आज गुरु खेलन आये होरी | -- | -- | २८२ |
| आज मेरे आनँद बजत बधाई | -- | -- | २६१ |
| आज मैं गुरु सँग खेलूँगी होरी | -- | -- | २७५ |
| आज मैं पाई सरन गुरु पूरे | -- | -- | १८२ |
| आज मैं पाया दरस गुरु प्यारे | -- | -- | १८३ |
| आज सँग सतगुरु खेलूँगी होरी | -- | -- | २६३ |
| आज सखि गुरु सँग खेलो री होरी | -- | -- | २८७ |
| आज हुआ मन मगन मोर | -- | -- | २०३ |
| आया मास असाढ़, बिरह के | -- | -- | २९८ |
| उमँग मन गुरु चरनन में लाग | -- | -- | ७ |
| उमँग मन फूल रहा गुरु दरशन पाया री | | -- | १९० |
| उमर सारी बीत गई जग में | -- | -- | ३१७ |
| उलट पलट कर खेली होली | -- | -- | २७२ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| ऋतु बसंत आये सतगुरु जग में | -- | -- | २५५ |
| ऋतु बसंत फूली जग माहीं मन और सुरत | | -- | २५७ |
| ऋतु बसंत फूली जग माहीं मिल सतगुरु घट | | | २५६ |
| ऐसी गहरी पिरेमन नार | -- | -- | ३०५ |
| ऐसी चौपड़ खेलो जग में | -- | -- | ३३१ |
| कठोरा मनुआँ सुने न बैन | -- | -- | १९५ |
| करो री सुरत गुरु चरन अधारा | -- | -- | १७६ |
| कस प्रीतम से जाय मिलूँ मैं | -- | -- | १६२ |
| कामना जग की तज मन यार | -- | -- | ४ |
| काहे को डरपे मन नादान | -- | -- | ३२७ |
| काहे री चरन गुरु भूली री सुरतिया | | -- | १७६ |
| कैसे उतरूँ पार भौसागर का चौड़ा फाट | | -- | १८४ |
| कैसे गहूँ री सरन गुरु बिन परतीत | -- | -- | १७५ |
| कैसे गाऊँ गुरु महिमा अति अगम अपार | | -- | १७३ |
| कैसे चलूँ री अधर चढ़ सुन नगरी | -- | -- | १७४ |
| कैसे मिलूँ री पिया से चढ़ गगन गली | | -- | १७३ |
| क्या भूल रही जग माहिं | -- | -- | ३०३ |
| क्या सोय रही उठ जाग सखी | -- | -- | २७९ |
| खेल ले सतगुरु सँग तू फाग | -- | -- | २८१ |
| खोजी जन सरस मन सुन सुन गुरु बचना | | -- | २०७ |
| खोजो री शब्द घर सुरत पियारी | -- | -- | १७७ |
| गगन में बाजत आज बधाई | -- | -- | २४३ |
| गुरु चरनन प्यार लाओ मन मेरे उमँग से | | -- | १८५ |
| गुरु दरशन बिन चैन न आवे मैं कौन | | -- | १८९ |

| शब्द की टेक | सफ़ा |
|---|---|
| गुरु धरा सीस पर हाथ मन क्यों सोच करे -- | २४६ |
| गुरु नैन रसीले निरखे -- -- | ३२५ |
| गुरु प्यारे करें आज जगत उद्धार -- -- | ४४ |
| गुरु प्यारे करें तेरी आज सहाय -- -- | ५० |
| गुरु प्यारे करो अब मेहर बनाय -- -- | ५० |
| गुरु प्यारे का कर दीदारा घट प्रीत जगाय | ७९ |
| गुरु प्यारे का दरस निहारत -- -- | ८९ |
| गुरु प्यारे का देश अति ऊँचा -- -- | ७० |
| गुरु प्यारे का धार भरोसा करें कारज पूर -- | ७८ |
| गुरु प्यारे का पंथ निराला -- -- | ७६ |
| गुरु प्यारे का प्यारी सुन उपदेश -- -- | २३ |
| गुरु प्यारे का महल सुहावन कस देखूँ जाय -- | ७२ |
| गुरु प्यारे का मारग झीना कोई गुरुमुख -- | ७३ |
| गुरु प्यारे का मुखड़ा झाँक रहूँ -- -- | २० |
| गुरु प्यारे का रँग अति निरमल -- -- | ७० |
| गुरु प्यारे का रँग चटकीला -- -- | ६९ |
| गुरु प्यारे का ले तू नाम सम्हार -- -- | ३४ |
| गुरु प्यारे का शब्द सुनो धर प्यार -- -- | ३३ |
| गुरु प्यारे का संग अमोला सुख का भंडार -- | ६८ |
| गुरु प्यारे का सँग कर जग से भाग -- -- | ३६ |
| गुरु प्यारे का सँग करो हे मन मीत -- -- | ५७ |
| गुरु प्यारे का सँग बड़ भागी पाय -- -- | ६३ |
| गुरु प्यारे का सतसँग अमल अमोल -- -- | ६३ |
| गुरु प्यारे का सतसँग करो दिन रात -- -- | २६ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| गुरु प्यारे का सतसँग करो बनाय | -- | -- | ६२ |
| गुरु प्यारे का सुन्दर रूप निरखत मोह रही | | | ८२ |
| गुरु प्यारे की अस्तुत गाओ री | -- | -- | ३५ |
| गुरु प्यारे की आरत करो बनाय | -- | -- | ६१ |
| गुरु प्यारे की कर परतीती होय जीव उबार | -- | | ७७ |
| गुरु प्यारे की चाल अनोखी जग से न्यारी | -- | | ६७ |
| गुरु प्यारे की छबि पर बल बल जाऊँ | -- | | १८ |
| गुरु प्यारे की छबि मन मोहन | -- | -- | ७५ |
| गुरु प्यारे की जुगत कमाओ | -- | -- | ७८ |
| गुरु प्यारे की दम दम शुकर गुज़ार | -- | -- | ५९ |
| गुरु प्यारे की निंदा मत कर यार | -- | -- | २८ |
| गुरु प्यारे की प्यारी कर परतीत | -- | -- | २७ |
| गुरु प्यारे की प्यारी मानो बात | -- | -- | २५ |
| गुरु प्यारे की प्रीत प्यारी हिरदे धार | -- | -- | २७ |
| गुरु प्यारे की बतियाँ सुनत रहूँ | -- | -- | २१ |
| गुरु प्यारे की महिमा क्या कहुँ गाय | -- | -- | २२ |
| गुरु प्यारे की मानो बात सही | -- | -- | ३७ |
| गुरु प्यारे की मेहर कहूँ कस गाय | -- | -- | ५४ |
| गुरु प्यारे की मौज रहो तुम धार | -- | -- | ६० |
| गुरु प्यारे की लीला देख नई | -- | -- | ४० |
| गुरु प्यारे की लीला सार | -- | -- | ८३ |
| गुरु प्यारे की सरन सम्हारो धर मन परतीत | | | ८८ |
| गुरु प्यारे की सरनी आवो धाय | -- | -- | २४ |
| गुरु प्यारे की सरनी जो जन आय | -- | -- | २३ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| गुरु प्यारे की सेवा धारो तज मन अभिमान | | | ८४ |
| गुरु प्यारे की सेवा लाग रहूँ | -- | -- | ५४ |
| गुरु प्यारे के चरनन मचल रही | -- | -- | ६२ |
| गुरु प्यारे के चरनों की हो जा धूर | -- | -- | २८ |
| गुरु प्यारे के दर्शन करत रहूँ | -- | -- | २१ |
| गुरु प्यारे के नैन रँगीले मेरा मन हर लीन्ह | | | ६६ |
| गुरु प्यारे के नैना ताक रहूँ | -- | -- | १९ |
| गुरु प्यारे के बचन अमृत की धार | -- | -- | ३३ |
| गुरु प्यारे के बचन अमोला उर धार रहूँ | | -- | ८७ |
| गुरु प्यारे के बैन रसीले अमृत की खान | | -- | ६५ |
| गुरु प्यारे के सँग आनँद भारी | -- | -- | ६४ |
| गुरु प्यारे के सँग करूँ आज बिलास | -- | -- | ३८ |
| गुरु प्यारे के सँग चलो घर की ओर | -- | -- | २५ |
| गुरु प्यारे के सँग चलो महल अपने | -- | -- | ५२ |
| गुरु प्यारे के सँग चलो हे मन यार | -- | -- | ४८ |
| गुरु प्यारे के सँग तू निज घर जाव | -- | -- | ५६ |
| गुरु प्यारे के सँग प्यारी खेलो फाग | -- | -- | ४९ |
| गुरु प्यारे के सँग प्यारी चलो निज धाम | | -- | ४२ |
| गुरु प्यारे के सँग प्यारी सुरत धुलाय | | -- | ४३ |
| गुरु प्यारे के सँग मन माँजो आय | -- | -- | ४६ |
| गुरु प्यारे के सतसँग में तू जाग | -- | -- | ३५ |
| गुरु प्यारे को प्यारी ले पहिचान | -- | -- | ४५ |
| गुरु प्यारे चरन का लाऊँ ध्यान | -- | -- | १६ |
| गुरु प्यारे चरन पकड़े मज़बूत | -- | -- | १५ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| गुरु प्यारे चरन पर जाउँ बलिहार | -- | -- | ११ |
| गुरु प्यारे चरन पर सीस नवाय | -- | -- | ५२ |
| गुरु प्यारे चरन मन भावन | -- | -- | ७४ |
| गुरु प्यारे चरन में भाव लाओ मन से प्यारी | | | ८१ |
| गुरु प्यारे चरन मेरे प्राण अधार | -- | -- | १२ |
| गुरु प्यारे चरन मोहिं लगे प्यारे | -- | -- | १२ |
| गुरु प्यारे चरन रचना की जान | -- | -- | १५ |
| गुरु प्यारे चरन से लिपट रहूँ | -- | -- | ११ |
| गुरु प्यारे चरन हिये बस गये री | -- | -- | १३ |
| गुरु प्यारे दया करो आज नई | -- | -- | १४ |
| गुरु प्यारे नज़र करो मेहर भरी | -- | -- | १० |
| गुरु प्यारे ने दी मेरी सुरत जगाय | -- | -- | ४८ |
| गुरु प्यारे बचन सुन हो गई दीन | -- | -- | १७ |
| गुरु प्यारे लगावें तुझ को पार | -- | -- | ५३ |
| गुरु प्यारे सिखावें भक्ती रीत | -- | -- | ४७ |
| गुरु प्यारे सुनो इक अरज़ मेरी | -- | -- | १७ |
| गुरु प्यारे सुनो फ़रियाद मेरी | -- | -- | १४ |
| गुरु प्यारे से करना प्रीत ज़रूर | -- | -- | ४३ |
| गुरु प्यारे से खेलो फाग रचाय | -- | -- | ५५ |
| गुरु प्यारे से दिन दिन प्रीत बढ़ाय | -- | -- | ३९ |
| गुरु प्यारे से प्यार बढ़ाना सुन घट में धुन | | -- | ८६ |
| गुरु प्यारे से प्यारी नाता जोड़ | -- | -- | ३० |
| गुरु प्यारे से प्यारी मत कर मान | -- | -- | ३६ |
| गुरु प्यारे से प्यारी मत कर रोष | -- | -- | ३० |

| शब्द की टेक | सफ़ा |
|---|---|
| गुरु प्यारे से प्यारी लगन लगाय -- -- | ३१ |
| गुरु प्यारे से प्रीत बढ़ाओ तज मन का मान | ८५ |
| गुरु प्यारे से प्रीत लगाना मन सरधा लाय | ८० |
| गुरु प्यारे से मत कर तू अभिमान -- -- | ३२ |
| गुरु प्यारे से माँगो भक्ती दान -- -- | ३१ |
| गुरु प्यारे से मिल घट कपट हटाय -- -- | ५८ |
| गुरु प्यारे मिल तू मन मत त्याग -- -- | ५८ |
| गुरु प्यारे से मिलना उमँग उमंग -- -- | २९ |
| गुरु प्यारे से मिल हुई आज निहाल -- -- | ४१ |
| गुरु प्यारे से रलियाँ करलो आज -- -- | ५१ |
| गुरु प्यारे से ले घट पाट खुलाय -- -- | ४० |
| गुरु प्यारे से होली खेलो आय -- -- | ५६ |
| गुरु बचन सम्हारो, क्यों मन संग भरमइयाँ हो | २३१ |
| गुरु ले पहिचान काज करें तेरा छिन में -- | १८५ |
| गुरु सँग प्रीत न कोई करे -- -- | ३३८ |
| गुरु सतसंग करो तन मन से -- -- | १६३ |
| गुरू बिन घट का भेद न पाय -- -- | ९ |
| गुरू सँग खेलन फाग चली -- -- | २८० |
| चंचल चित चपल मन नित जग में भरमावत | २०८ |
| चरन गुरु ध्याओ री तज जग भय आस -- | १९२ |
| चरनन में चित्त लगाओ जग आसा दूर हटाओ | २२८ |
| चरन में बिनती करूँ बनाय -- -- | २५० |
| चरन में राधास्वामी करूँ पुकार -- -- | २५१ |
| चल खेलिये सतगुरु से रँग होली -- -- | २२४ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| चल देखिये गुरु द्वारे जहाँ प्रेम समाज | | -- | २२३ |
| चल देखिये सतसँग में जहाँ निरमल फाग | | -- | २२० |
| चल री सुर्त गुरु के देस धर हिये अनुरागा | | | २१५ |
| चलो आज गुरू दरबारा | -- | -- | २२१ |
| चलो घट में दौरा करो री सखी | -- | -- | २१७ |
| चलो घर गुरु सँग धर मन धीर | -- | -- | ३ |
| चलो घर प्यारे क्यों जग में नित्त फसइयाँ हो | | | २३० |
| चलो प्रेम सभा से मिलो री सखी | -- | -- | २१७ |
| चलो री सखी सुनो अगम सँदेशा | -- | -- | ३०८ |
| चलो सतगुरु घाट सखीरी | -- | -- | २२२ |
| चहुँ दिस धूम मची सतगुरु अब आये | -- | -- | १६६ |
| चेतो चेतो सखी ऋतु आई बसंत | -- | -- | २५४ |
| जगत बिच भूल पड़ी जिव कैसे के उतरे पार | | | १८७ |
| जग भाव तजो प्यारी मन से | -- | -- | २२५ |
| जब से मैं देखा राधास्वामी का मुखड़ा | | -- | १८० |
| जागी है उमँग मेरे हिये में | -- | -- | १९७ |
| जीव उबारन जग में आये | -- | -- | २३८ |
| जो जन राधास्वामी सरना पड़े | -- | -- | ३३२ |
| ठुमक चढ़त सुरत अधर सुन सुन घट धुनियाँ | | | २०३ |
| तड़पत रही बेहाल दरस बिन मन नहिं माने | | | २९५ |
| त्याग दे प्यारी जग व्यवहार | -- | -- | ७ |
| तुम सोचो अपने मन में या जग में दुक्ख | | -- | २२८ |
| दया के सिंध सतगुरु जीवन के हितकारी हो | | | २३४ |
| दरस देओ प्यारे अब क्यों देर लगइयाँ हो | | | २२९ |

| शब्द की टेक | सफ़ा |
| --- | --- |
| दरस पाय मन बिगस रहा गुरु लागे प्यारे री | १९१ |
| दास हुआ चरनन में लौलीन -- -- | ३२३ |
| दिवाला पूजें जीव अजान -- -- | २९३ |
| देख जग का व्यवहार असार -- -- | ३१२ |
| धुर धाम नियार लखे कोइ गुरुमुख जाय -- | १८४ |
| निज घट में खोज पिया को सखी -- -- | २१८ |
| निरखो निरखो सखी ऋतु आई बसंत -- | २५८ |
| नौ द्वारन में सब कोइ बरते -- -- | २०२ |
| परम गुरु राधास्वामी प्यारे जगत में देह -- | २०० |
| परम पुरुष प्यारे राधास्वामी धर संत स्वरूपा | १६६ |
| पूरन भक्ति देओ गुरु दाता -- -- | ३२८ |
| प्यारी क्यों सोच करे प्यारे राधास्वामी -- | २१६ |
| प्यारी ज़रा कर बिचार यहाँ सदा नहीं रहना | २१२ |
| प्यारे लागेंरी मेरे दातार सतगुरु प्यारे लागें -- | १६७ |
| प्रेम घटा घट छाय रही -- -- | ३१८ |
| प्रेम भक्ति गुरु धार हिये में आया सेवक -- | २३७ |
| प्रेम रंग बरसावत चहुँ दिस -- -- | २७१ |
| प्रेम रंग ले खेलो री गुरु से -- -- | २९० |
| प्रेमी जन बिकल मन गुरु दरशन चाहत -- | २०६ |
| प्रेमी सुर्त उमँग उमँग गुरु सन्मुख आई -- | २०५ |
| फागुन की ऋतु आई सखी आज गुरु सँग -- | २७५ |
| फागुन की ऋतु आई सखी मिल सतगुरु -- | २६४ |
| बारहमासा -- -- | २९८ |
| बिकल जिया तरस रहा -- -- | १८७ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| बिनती करूँ चरन में आज | -- | -- | २४७ |
| बिन सतगुरु की भक्ति जन्म बिरथा | -- | -- | २९६ |
| बिमल चित्त जोड़ रही घट शब्द गुरू धर प्यार | | | १८६ |
| बिरहन सुर्त तजत भोग गुरु चरनन रतियाँ | | -- | २०४ |
| भक्ति कर लीजिये जग जीवन थोड़ा | -- | -- | २४२ |
| भाग चलो जग से तुम अब के | -- | -- | १६२ |
| भाव धर गुरु सन्मुख आई | -- | -- | ५ |
| भूल भरम में जग अटकाना | -- | -- | ३११ |
| भोग का शब्द | | | |
| राधास्वामी सेव करत धर प्यारा | | -- | ३३९ |
| भोग बासना मन में धरी | -- | -- | २३४ |
| मगन मन केल करत घट धुन सँग लागा री | | | १९० |
| मगन हुआ मन गुरु भक्ती धार | -- | -- | ६ |
| मन इन्द्री आज घट में रोक | -- | -- | २१० |
| मन इन्द्री को घट में घेर गुरु जुगत कमाओ | | | २११ |
| मन रे क्यों न धरे गुरु ध्याना | -- | -- | ३३४ |
| मन रे क्यों माने नाहिं जग सँग क्या लेना | | | २१३ |
| मन रे चल गुरु के पास घर का भेद लीजे | | | २१४ |
| मन रे सतसँग गुरु का करो | -- | -- | ३३३ |
| मन हुआ मेरा गुरु चरनन में लीना | -- | -- | १८१ |
| मनुआँ क्यों सोचे नाहिं जग में दुख भारी | | -- | २११ |
| मनुआँ सिपाही चरनन लागा | -- | -- | ३२० |
| मनुआँ हठीला कहन न माने भोगन में रस लेत | | | ३०६ |
| मूरख मनुआँ भोग न छोड़े | -- | -- | १९६ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| मेरा जिया ना माने सजनी जाऊँगी गुरु दरबार | -- | -- | ३१९ |
| मेरे धूम भई अति भारी दरस राधास्वामी | | -- | १६० |
| मेरे लगी प्रेम की चोट बिकल मन अति | | -- | ३२२ |
| मेरे हिये में बजत बधाई संत सँग पाया रे | | -- | १६० |
| मैं गुरु प्यारे के चरनों की दासी | -- | -- | १७८ |
| मैं तो आय पड़ी परदेश गैल कोइ घर की | | -- | १८८ |
| मैं तो होली खेलन को ठाड़ी | -- | -- | २७६ |
| मैं पड़ी अपने गुरु प्यारे की सरना | -- | -- | १७९ |
| मैं हुई सखी अपने प्यारे की प्यारी | -- | -- | १८० |
| मोहिं दरस देओ गुरु प्यारे क्यों एती देर लगइयाँ | -- | -- | २२६ |
| यह देश मुझे नहिं भावे | -- | -- | २३२ |
| रागी जन माया के पाले पड़े | -- | -- | ३३४ |
| राधास्वामी चरनन आओ रे मना | -- | -- | ३३० |
| राधास्वामी छबि निरखत मुसकानी | -- | -- | १६१ |
| राधास्वामी छबि मेरे हिये बस गई री | -- | -- | १८१ |
| राधास्वामी दयाल सुनो मेरी बिनती | -- | -- | २४० |
| राधास्वामी दाता दीनदयाला | -- | -- | २३६ |
| राधास्वामी दीनदयाला मेरे सद किरपाला | | -- | १६४ |
| राधास्वामी दीनदयाला मोहिं दरशन दीजे | | -- | २५२ |
| राधास्वामी संग लगाई मोहिं बचन | -- | -- | १६४ |
| राधास्वामी सतगुरु पूरे मैं आया सरन हुज़ूरे | | | ३२५ |
| राधास्वामी सेव करत धर प्यारा | -- | -- | ३३९ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| लागो रे चरन गुरु जीव अनाड़ी | -- | -- | १७७ |
| सखी चल फाग की देख बहार | -- | -- | २८१ |
| सखी री ऐसी होली खेल | -- | -- | २६५ |
| सखी री मैं निस दिन रहूँ घबरानी | -- | -- | २८९ |
| सतगुरु के मुख सेहरा चमकीला | -- | -- | २१९ |
| सतगुरु प्यारे ने खिलाई अब के नइ होरी हो | -- | -- | ११७ |
| सतगुरु प्यारे ने खिलाई घट फुलवारी हो | | -- | ११४ |
| सतगुरु प्यारे ने खिलाया निज परशाद निवाला हो | -- | -- | ९९ |
| सतगुरु प्यारे ने खुलाया घट प्रेम ख़ज़ाना हो | | | १३० |
| सतगुरु प्यारे ने गिराया काल कराला हो | | -- | ११० |
| सतगुरु प्यारे ने चिताये जीव घनेरे हो | | -- | १२५ |
| सतगुरु प्यारे ने चुकाया काल का क़रजा हो | | | १२४ |
| सतगुरु प्यारे ने छुड़ाई आवागवन की डोरी हो | | | १०६ |
| सतगुरु प्यारे ने छुड़ाया जग व्यवहार असारा | | | १२६ |
| सतगुरु प्यारे ने जगाया अचरज भागा हो | | | १०४ |
| सतगुरु प्यारे ने जगाया सोता मनुआँ हो | | | ९५ |
| सतगुरु प्यारे ने जनाया घट भेद अपारा हो | | | ९२ |
| सतगुरु प्यारे ने जिताई काल से बाज़ी हो | | | १०० |
| सतगुरु प्यारे ने दया कर मोहिं लीन्ह उबारी हो | | | ९६ |
| सतगुरु प्यारे ने दिखाई गगन अटारी हो | | -- | १०८ |
| सतगुरु प्यारे ने दिखाई घट उजियारी हो | | | ९० |
| सतगुरु प्यारे ने दिलाया शब्द में भावा हो | | | ११० |

| शब्द की टेक | सफ़ा |
|---|---|
| सतगुरु प्यारे ने दृढ़ाया निज नाम पियारा हो | ९९ |
| सतगुरु प्यारे ने नचाया मनुआँ नटवा हो -- | ११२ |
| सतगुरु प्यारे ने निकारे मन के बिकारा हो -- | १२१ |
| सतगुरु प्यारे ने निभाई खेप हमारी हो -- | ११८ |
| सतगुरु प्यारे ने पढ़ाई घट की पोथी हो -- | १३३ |
| सतगुरु प्यारे ने पिलाया प्रेम पियाला हो -- | ९५ |
| सतगुरु प्यारे ने बजाई प्रेम मुरलिया हो -- | १२७ |
| सतगुरु प्यारे ने बसाई उजड़ी बाड़ी हो -- | ११२ |
| सतगुरु प्यारे ने बसाई हिये भक्ति करारी हो | १२० |
| सतगुरु प्यारे ने मचाई जग बिच होरी हो -- | ११८ |
| सतगुरु प्यारे ने मिटाया काल कलेशा हो -- | १०६ |
| सतगुरु प्यारे ने मिलाया प्रीतम प्यारा हो -- | ९४ |
| सतगुरु प्यारे ने मेहर से दिया भक्ती दाना हो | १२३ |
| सतगुरु प्यारे ने मेहर से मेरा काज सँवारी हो | ९७ |
| सतगुरु प्यारे ने लखाया निज रूप अपारा हो | १०१ |
| सतगुरु प्यारे ने लखाया पिया देश नियारा हो | ९३ |
| सतगुरु प्यारे ने लगाई बिरह करारी हो -- | १०३ |
| सतगुरु प्यारे ने लजाये माया ब्रह्म खिलाड़ी हो -- -- | ११९ |
| सतगुरु प्यारे ने सँवारी मेरी सुरत -- -- | ११५ |
| सतगुरु प्यारे ने सिंगारी सुरत रँगीली हो -- | १३१ |
| सतगुरु प्यारे ने सिंचाई प्रेम कियारी हो -- | ११३ |
| सतगुरु प्यारे ने सिखाई भक्ती रीती हो -- | १०५ |
| सतगुरु प्यारे ने सुधारा मनुआँ अनाड़ी हो -- | ११६ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| सतगुरु प्यारे ने सुनाई अचरज बानी हो | | -- | १०७ |
| सतगुरु प्यारे ने सुनाई घट झनकारी हो | | -- | ९१ |
| सतगुरु प्यारे ने सुनाई जुगत निराली हो | | -- | १२८ |
| सतगुरु प्यारे ने सुनाई प्रेमा बानी हो | | -- | १३४ |
| सतगुरु प्यारे ने हटाये बिघन अनेका हो | | -- | १२२ |
| सतसँग की क़दर न जानी | -- | -- | २२७ |
| सरन गुरु धार री धर दृढ़ परतीत | -- | -- | १९३ |
| सरन गुरु मोहिं मिला भेवा | -- | -- | ३०७ |
| सावन मास मेघ घिर आये | -- | -- | २९१ |
| सिंध से आई सूरत नार | -- | -- | ३१५ |
| सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी | -- | -- | २८८ |
| सुन सुन महिमा गुरु प्यारे की | -- | -- | १६१ |
| सुनी मैं महिमा सतसँग सार | -- | -- | ११९ |
| सुनो बीनती स्वामी महाराज | -- | -- | २४८ |
| सुरत आज खेलत फाग नई | -- | -- | २७८ |
| सुरत प्यारी खेलन आई फाग | -- | -- | २७८ |
| सुरत रँगीली खेलत होरी | -- | -- | २७३ |
| सुरत लगी गुरु चरनन चित जोड़ | -- | -- | ५ |
| सुरत लाई आरत सरधा धार | -- | -- | ४ |
| सुरत सिरोमन फाग रचाया जग बिच | | -- | २८६ |
| सुरत सिरोमन फाग रचाया सब जुड़ मिल | | -- | २८४ |
| सुरतिया सोग(विरह) भरी रहे निस दिन | | -- | २ |
| सोइ तो सुरत पिया की प्यारी | -- | -- | २८५ |
| स्वामी प्यारे क्यों नहिं दरशन देत | -- | -- | २४१ |

| शब्द की टेक | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|
| हंसनी क्यों न सुने गुरु बानी | -- | -- | ३३५ |
| हठीला मनुआँ माने न बात | -- | -- | १९४ |
| हमें घर जाने दे मन क्यों तू विघन कराय | | -- | २३३ |
| हे प्यारे मनुआँ नेक लगा दे कान | -- | -- | १९६ |
| हे मेरे प्यारे सतगुरु तुम दाता अपर अपारा | | | २४५ |
| हे मेरे प्यारे सतगुरु मोहिं दरशन दीजे | | -- | २४४ |
| होली के दिन आये सखी उठ खेलो फाग नई | -- | -- | २६७ |
| होली खेलत सतगुरु नाल पिरेमी सुरत | | -- | २७४ |
| होली खेलत सतगुरु संग पिरेमन रंग भरी | | -- | २७७ |
| होली खेलत सुरत रँगीली गुरु सँग प्रीत | | -- | २८६ |
| होली खेलन आये सतगुरु जग में | -- | -- | २७० |
| होली खेलन ऋतु आई सखी री | -- | -- | २६६ |
| होली खेल न जाने बावरिया | -- | -- | २६९ |
| होली खेलूँगी सतगुरु साथ सुरत मन चरन | | | २६० |
| होली खेले सयानी गुरु के रंग रँगानी | | -- | २८३ |
| ज्ञान तज भक्ती पंथ सम्हार | -- | - | ८ |

# राधास्वामी सहाय

# प्रेमबानी भाग तीसरा भाग

## सूचीपत्र बचनों का


| बचन | | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|---|
| १६ | प्रेम प्रकाश भाग पहला | -- | -- | १ |
| १७ | प्रेम प्रकाश भाग दूसरा गुरु प्यारे | -- | -- | १० |
| १८ | प्रेम प्रकाश भाग तीसरा गुरु प्यारे | -- | -- | ६५ |
| १९ | प्रेम प्रकाश भाग चौथा सतगुरु प्यारे | -- | -- | ९० |
| २० | प्रेम प्रकाश भाग पाँचवाँ अरी हे सहेली | -- | -- | १३५ |
| २१ | प्रेम तरंग भाग पहिला | -- | -- | १६० |
| २२ | प्रेम तरंग भाग दूसरा | -- | -- | १६४ |
| २३ | प्रेम तरंग भाग तीसरा(कजली) | -- | -- | १७३ |
| २४ | प्रेम तरंग भाग चौथा | -- | -- | १७८ |
| २५ | प्रेम तरंग भाग पाँचवाँ | -- | -- | १८४ |
| २६ | प्रेम तरंग भाग छठवाँ | -- | -- | १९२ |
| २७ | प्रेम तरंग भाग सातवाँ | -- | -- | १९७ |
| २८ | प्रेम लहर भाग पहिला | -- | -- | २०३ |
| २९ | प्रेम लहर भाग दूसरा | -- | -- | २१७ |
| ३० | प्रेम लहर भाग तीसरा(होली) | -- | -- | २२० |
| ३१ | प्रेम लहर भाग चौथा | -- | -- | २२९ |

| बचन | | | | सफ़ा |
|---|---|---|---|---|
| ३२ | प्रेम लहर भाग पाँचवाँ | -- | -- | २३२ |
| ३३ | प्रेम लहर भाग छठवाँ | -- | -- | २३४ |
| ३४ | प्रेम लहर भाग सातवाँ | -- | -- | २४१ |
| ३५ | बिनती और प्रार्थना | -- | -- | २४४ |
| ३६ | बसन्त और होली | -- | -- | २५३ |
| | अंग पहला -- बसन्त | -- | -- | २५३ |
| | अंग दूसरा -- होली | -- | -- | २६० |
| ३७ | सावन लावनी और बारहमासा | -- | -- | २९१ |
| | सावन | -- | -- | २९१ |
| | दिवाली | -- | -- | २९३ |
| | लावनी | -- | -- | २९५ |
| | बारहमासा | -- | -- | २९८ |
| ३८ | मिश्रित अंग | -- | -- | ३०३ |
| | भोग | -- | -- | ३३९ |

## राधास्वामी दयाल की दया
## राधास्वामी सहाय

# प्रेम बानी राधास्वामी
# तीसरा भाग

### बचन सोलहवाँ

### प्रेम प्रकाश भाग पहिला

।। शब्द १ ।।

अतोला तेरी कर न सके कोइ तोल ।। टेक ।।
जिन पर मेहर मिले सतगुरु से।
सतसँग में उन बनिया डौल ।। १ ।।
उमँग सहित लागे अब घट में।
सुनत रहे नित अनहद बोल ।। २ ।।
सुन सुन धुन सुर्त चढ़त अधर में।
काल करम का छूटा हौल ।। ३ ।।
चढ़ चढ़ पहुँची सत्तलोक में।
दूर हुए सब माया खोल ।। ४ ।।
राधास्वामी दरस मेहर से मिलिया।
पाय गई पद अगम अडोल ।। ५ ।।

।। शब्द २ ।।

सुरतिया सोग (विरह) भरी।
रहे निस दिन चित्त उदास।। टेक।।
प्रीतम प्यारे का व्योग सतावे।
नहिं भावे कुछ भोग बिलास।। १ ।।
बेकल तड़प उठत मन माहीं।
बढ़त अधिक दर्शन की प्यास।। २ ।।
गुरु प्यारे मेरे बसें अधर में।
मैं तो किया मृत्युलोक निवास।। ३ ।।
कैसे चढ़ूँ दरस कस पाऊँ।
यहि मेरे मन में सोच और आस।। ४ ।।
बिन दर्शन मोहिं कल न पड़त है।
रटत रहूँ पिया पिया हर स्वाँस।। ५ ।।
कैसी करूँ कौन जुगत कमाऊँ।
किस विधि लखूँ प्रीतम परकाश।। ६ ।।
कासे पूछूँ राह रकाना।
प्रीतम का कोइ मिले निज दास।। ७ ।।
मैं तो अजान भेद नहिं जानूँ।
चहत रहूँ पिया चरनन बास।। ८ ।।
प्रीतम आपहि मरम जनावें।
घट में दिखावें शब्द उजास।। ९ ।।

मेहर करें सुर्त गगन चढ़ावें।
पहुँचूँ शब्द गुरू के पास।।१० ।।
आगे सत्तलोक जाय परसूँ।
सतगुरु चरन निज सुख की रास।। ११ ।।
आगे चल पहुँचूँ धुर धामा।
खेलूँ नित पिया राधास्वामी पास।। १२ ।।

।। शब्द ३ ।।

चलो घर गुरु सँग धर मन धीर।।टेक ।।
यह तो देश बिगाना जानो।
सुद्ध करो निज घर की बीर।। १ ।।
सतगुरु घट का भेद लखावें।
मिल उन से तू खोज शरीर।। २ ।।
मथ मथ शब्द लखो परकाशा।
छान करो तुम नीर और छीर।। ३ ।।
निरमल होय चढ़े सुर्त ऊँचे।
निरखे सत पद गहिर गँभीर।। ४ ।।
दया हुई सुर्त अधर सिधारी।
पहुँची राधास्वामी चरनन तीर।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ४ ।।

कामना जग की तज मन यार ।। टेक ।।
जगत गुनावन विष कर जानो ।
ता में बहत सुरत की धार ।। १ ।।
ज़हर हलाहल नित ही खावत ।
अमृत रस नहिं चाखत सार ।। २ ।।
गुरु सतसँग कर शब्द भेद ले ।
सुरत चढ़ाओ धुन की लार ।। ३ ।।
गगन जाय गुरु रूप निहारे ।
सुन में निरखे बिमल बहार ।। ४ ।।
राधास्वामी चरन बसाय हिये में ।
पहुँची सत्त पुरुष दरबार ।। ५ ।।

।। शब्द ५ ।।

सुरत लाई आरत सरधा धार ।। टेक ।।
उमँग उमँग गुरु चरनन लागी ।
सतसँगियन में बाढ़ा प्यार ।। १ ।।
आरत सामाँ सजे बनाई ।
अनेक पदारथ धरे सम्हार ।। २ ।।
प्रेमी जन मिल आरत गावें ।
घंटा संख धूम अति डार ।। ३ ।।

गगन मँडल में बजी बधाई।
हुए प्रसन्न अब गुरू दयार।। ४ ।।
राधास्वामी दया बिचारी।
दिया मोहिं निज चरन अधार।। ५ ।।

।। शब्द ६ ।।

सुरत लगी गुरु चरनन चित जोड़।।टेक।।
बचन सुनत जागा अनुरागा।
मन को लीन्हा जग से मोड़।। १ ।।
दर्शन कर हिये बढ़त उमंगा।
रूप सुहावन हुआ चित चोर।। २ ।।
गुरु चरनन में बासा चाहत।
जग जीवन से नाता तोड़।। ३ ।।
गुरु सेवा लागी अति प्यारी।
प्रेम रंग भींजत सरबोर।। ४ ।।
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा।
काल करम सिर दीन्हा फोड़।। ५ ।।

।। शब्द ७ ।।

भाव धर गुरु सन्मुख आई।।टेक।।
सुरत पियारी बँध रही तन में।
बचन सुनत हिये उमगाई।। १ ।।

जगत भाव और तन मन प्रीती।
तोड़ फोड़ गुरु सरनाई।। २ ।।
दर्शन पाय हरष रही मन में।
गुरु छबि निरखत बल जाई।। ३ ।।
उमगा प्रेम हिये में भारी।
गुरु चरनन रही लिपटाई।। ४ ।।
मेहर करी गुरु लिया अपनाई।
राधास्वामी गुन निस दिन गाई।। ५ ।।

।। शब्द ८ ।।

मगन हुआ मन गुरु भक्ती धार।।टेक।।
जगत भोग से कर बैरागा।
गुरु परशादी मिला अधार।। १ ।।
आसा मनसा जग की छोड़ी।
गुरु चरनन में लागा प्यार।। २ ।।
गुरु विश्वास धार अब चित में।
करम धरम सब दिये निकार।। ३ ।।
चरन सरन गुरु दई मेहर से।
अपना कर लिया मोहिं सुधार।। ४ ।।
राधास्वामी चरन अब बसे हिये में।
नित्त रहूँ मैं चरन सम्हार।। ५ ।।

॥ शब्द ९ ॥

उमँग मन गुरु चरनन में लाग ॥ टेक ॥
भोग रोग तज चेत जगत से।
सतसँग में अब जाग ॥ १ ॥
सुरत समेट लगो घट धुन में।
सुन ले अनहद राग ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत धरो गुरु चरनन।
सेवा करत बढ़ाओ भाग ॥ ३ ॥
सुरत चढ़ाय चलो गगनापुर।
धोवो कल मल दाग़ ॥ ४ ॥
वहाँ से आगे चलो उमँग से।
राधास्वामी चरनन पाग ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

त्याग दे प्यारी जग व्यवहार ॥ टेक ॥
बिरध अवस्था आ कर छाई।
अब ग़फलत तज हो हुशियार ॥ १ ॥
सतसँग कर गुरु बचन सम्हारो।
भेद लेव तुम सत करतार ॥ २ ॥
घर चलने की जुगत कमाओ।
गुरु चरनन में लाओ प्यार ॥ ३ ॥

विरह अंग ले चालो घट में।
मन के निकारो सबहि विकार ।। ४ ।।
राधास्वामी दया संग ले अपने।
सहजहि उतरो भौ जल पार ।। ५ ।।

।। शब्द ११ ।।

ज्ञान तज भक्ती पंथ सम्हार ।। टेक ।।
बाचक ज्ञान कुछ काम न आवे।
मन में बढ़े थोथा अहंकार ।। १ ।।
अंतर में कुछ असर न होवे।
बाहर बातें करें लबार ।। २ ।।
नास्तिक मत इन का तुम जानो।
ख़बर न पाई कुल करतार ।। ३ ।।
ब्रह्म मान अपने को बैठे।
सच्चा मालिक दिया बिसार ।। ४ ।।
मन इंद्री की गति नहिं जानी।
भरम रहे वे माया लार ।। ५ ।।
यह मत जाल बिछाया काला।
विद्यावान घेर लिये झाड़ ।। ६ ।।
इनका संग करो मत कोई।
जो तुम चाहो अपन उद्धार ।। ७ ।।

गुरु भक्ती हित चित से धारो।
राधास्वामी सरन सम्हार।। ८ ।।
सुरत शब्द की जुगत कमाओ।
तब होवे सच्चा निरवार।। ९ ।।
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें।
सहज उतारें भौजल पार।।१० ।।

।। शब्द १२ ।।

गुरू बिन घट का भेद न पाय।।टेक।।
षट शास्तर और वेद पुराना।
पढ़ पढ़ बिरथा बैस बिताय।। १ ।।
काल जाल से कभी न छूटे।
माया हद्द के पार न जाय।। २ ।।
खट पट में नित रहे भरमाई।
करम धरम सँग रहे फँसाय।। ३ ।।
निज घट का है भेद नियारा।
बिन सतगुरु वह कौन सुनाय।। ४ ।।
याते संत संग अब कीजे।
उनके चरन में प्रीत बढ़ाय।। ५ ।।
भेद लेव मारग का उन से।
प्रेम सहित उन जुगत कमाय।। ६ ।।

रा धा स्वा मी सरन सम्हारो।
मेहर से दें वे काज बनाय।। ७ ।।

## बचन १७ प्रेम प्रकाश भाग दूसरा

।। शब्द १ ।।

गुरु प्यारे नज़र करो मेहर भरी।। टेक ।।
मैं भई दासी तुम्हरे चरन की।
सब तज तुम्हरे द्वारे पड़ी।। १ ।।
तुम्हरे चरन की ओट गही अब।
काल करम से नाहिं डरी।। २ ।।
जब से तुम्हरी सरना लीन्ही।
माया ममता सकल जरी।। ३ ।।
प्रीत प्रतीत बढ़त गुरु चरनन।
जग से छिन छिन सहज तरी।। ४ ।।
शब्द भेद ले सुरत लगाऊँ।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी।। ५ ।।
दरश दिखाय किया गुरु प्यारा।
तन मन तज हुई आज छड़ी।। ६ ।।
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला।
अब मो पै पूरन दया करी।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द २ ।।

गुरु प्यारे चरन से लिपट रहूँ।।टेक।।
दर्शन कर मन उमँगा भारी।
छिन छिन तन मन वार धरूँ।। १ ।।
रूप अनूपम बसा हिये में।
मस्त हुई जग लाज तजूँ।। २ ।।
प्रीत लगी चरनों में भारी।
सब तज उनकी सरन पड़ूँ।। ३ ।।
क्या ले अब मैं गुरू रिझाऊँ।
निस दिन यही मैं सोच करूँ।। ४ ।।
राधास्वामी प्यारे रक्षक मेरे।
अब जम से मैं नाहिं डरूँ।। ५ ।।

।। शब्द ३ ।।

गुरु प्यारे चरन पर जाउँ बलिहार।।टेक।।
दया करी मोहिं खैंच बुलाया।
सतसँग बचन सुनाये सार।। १ ।।
अपने चरन की प्रीत घनेरी।
(मेरे) हिये बसाई कर के प्यार।। २ ।।
दया करी घट भेद सुनाया।
दिन दिन दई परतीत सम्हार।। ३ ।।

छबि अनूप लख जब धरा ध्याना।
घट में निरखी बिमल बहार।। ४ ।।
राधास्वामी द्याल दया की न्यारी।
शब्द सुनाय उतारा पार।। ५ ।।

।। शब्द ४ ।।

गुरु प्यारे चरन मेरे प्राण अधार।। टेक ।।
क्या महिमा चरनन की गाऊँ।
जीव पकड़ उन उतरें पार।। १ ।।
मैं तो बसाय रही उन उर में।
प्रीत सहित करूँ ध्यान सम्हार।। २ ।।
ध्यान धरत हुआ घट परकाशा।
सुनत रही अनहद झनकार।। ३ ।।
चरन सरन गुरु हियरे धारी।
नित्त रहूँ गुरु दया निहार।। ४ ।।
राधास्वामी दया चली अब घट में।
सुन सुन धुन सुर्त हो गई सार।। ५ ।।

।। शब्द ५ ।।

गुरु प्यारे चरन मोहिं लगे प्यारे।। टेक ।।
जब से राधास्वामी सरना लीन्ही।
छुट गये करम भरम सारे।। १ ।।

मन और सुरत प्रेम रस पागे।
जगत भोग तज हुए न्यारे।। २ ।।
आसा मनसा जग की त्यागी।
सतगुरु चरन सीस धारे।। ३ ।।
सरन धार सुर्त अधर सिधारी।
तीन लोक के गई पारे।। ४ ।।
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ।
कोटिन जीव लिये तारे।। ५ ।।

।। शब्द ६ ।।

गुरु प्यारे चरन हिये बस गये री।।टेक।।
भाग जगे सतसँग में आई।
बचन सार गुरु रस लिये री।। १ ।।
मन और सुरत उमँग कर आये।
धर प्रतीत गुरु चरन लये री।। २ ।।
प्रेम अंग ले चाली घट में।
काल करम दोउ थक रहे री।। ३ ।।
माया ममता त्याग दई अब।
मन इन्द्री के बिकार दहे री।। ४ ।।
धुन रस पाय सुरत मगनानी।
दृढ़ कर राधास्वामी चरन गहेरी।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ७ ।।

गुरु प्यारे दया करो आज नई।।टेक।।
मन और सुरत चढ़ाओ घट में।
निज स्वरूप का दरस दई।। १ ।।
शब्द रूप तुम्हरा अगम अपारा।
तिस से मिल आनंद लई।। २ ।।
नौ द्वारन में चैन न पाऊँ।
अनेक प्रकार के कष्ट सही।। ३ ।।
जब सुर्त चढ़े अधर दस द्वारे।
शब्द अमी रस चाख चखी।। ४ ।।
राधास्वामी दया करो अब पूरी।
मैं ग़रीब तुम सरन पई।। ५ ।।

।। शब्द ८ ।।

गुरु प्यारे सुनो फ़रियाद मेरी।।टेक।।
इस मन से मैं हार गई अब।
बचन सुने नहिं चित्त धरी।। १ ।।
फिर फिर मोहिं जग में भरमावत।
भोग बासना नाहिं जरी।। २ ।।
मन को मारो इन्द्री जारो।
आसा मनसा सकल हरी।। ३ ।।

करम काट निज घर पहुँचाओ।
सुफल होय मेरी देह नरी।। ४ ।।
राधास्वामी बिन कोई नाहिं सहाई।
उनके चरन लग आज तरी।। ५ ।।

।। शब्द ९ ।।

गुरु प्यारे चरन पकड़े मज़बूत।।टेक।।
चरनन में नित प्रीत बढ़ाती।
छोड़ दई जग की करतूत।। १ ।।
शब्द जुगत ले जूझूँ घट में।
सहज करूँ बस मन का भूत।। २ ।।
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊँ।
धुन से लागे मेरा सूत।। ३ ।।
नभ को फोड़ गगन में धाऊँ।
सैर करूँ आलम लाहूत।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से आगे चाली।
सतगुरु दरस मिला जाय हूत।। ५ ।।

।। शब्द १० ।।

गुरु प्यारे चरन रचना की जान।।टेक।।
आदि धार चेतन जो निकसी।
उसने रची सब रचना आन।। १ ।।

वही धार गुरु चरन पिछानो।
वही पिंड ब्रह्मंड समान।। २ ।।
उसी धार का सकल पसारा।
वोही धुन और नाम कहान।। ३ ।।
जुगती ले गुरु से सुर्त अपनी।
उसी धार को पकड़ चढ़ान।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी।
निज स्वरूप घट में दरसान।। ५ ।।

।। शब्द ११ ।।

गुरु प्यारे चरन का लाऊँ ध्यान।।टेक।।
मन और सुरत जमा हर द्वारे।
धुन घंटा सुन अधर चढ़ान।। १ ।।
त्रिकुटी धुन सुन गगन सिधारूँ।
लाल रंग जहँ सूर दिखान।। २ ।।
सुन की धुन सुन चढ़ी सुर्त आगे।
मानसरोवर किये अस्नान।। ३ ।।
गुरु सँग गई महा सुन पारा।
मुरली धुन सुनी गुफा ठिकान।। ४ ।।
सत्त शब्द धुन डोर पकड़ के।
सतगुरु रूप करी पहिचान।। ५ ।।

अलख अगम धुन सुनती चाली।
धाम अनामी निरखा आन।। ६ ।।
शब्द धार चढ़ निज घर आई।
रा धा स्वा मी चरन समान।। ७ ।।

।। शब्द १२ ।।

गुरु प्यारे बचन सुन हो गई दीन।।टेक।।
जग व्यवहार असार पिछाना।
मन इन्द्री को ठगिया चीन्ह।। १ ।।
गुरु सतसँग की महिमा जानी।
चरनन में हुई दीन अधीन।। २ ।।
शब्द उपदेश निवारनहारा।
गुरु से लिया मन धार यक़ीन।। ३ ।।
नित अभ्यास करूँ मैं उमँग से।
सुन सुन धुन अब मन हुआ लीन।। ४ ।।
राधास्वामी चरन पकड़ घर चाली।
मेहर दया उन गहिरी कीन।। ५ ।।

।। शब्द १३ ।।

गुरु प्यारे सुनो इक अरज़ मेरी।।टेक।।
जब से दर्शन पायो तुम्हारा।
चरनन में रहे सुरत अड़ी।। १ ।।

मन भी मोह रहा दर्शन में।
नैनन में छबि रहे भरी।। २ ।।
पर बिन दर्शन शब्द स्वरूपा।
मन और सुर्त नहिं शांति धरी।। ३ ।।
मेहर से देव अंतर दीदारा।
चिंता बिपता सकल हरी।। ४ ।।
तुम्हरी दया का वार न पारा।
अब क्यों एती देर करी।। ५ ।।
हे दयाल मेरी अरज़ी मानो।
मैं हठ कर अब चरन पड़ी।। ६ ।।
राधास्वामी प्यारे परम उदारा।
गाऊँ तुम गुन घड़ी घड़ी।। ७ ।।

।। शब्द १४ ।।

गुरु प्यारे की छबि पर बल बल जाऊँ।। टेक ।।
रूप अनूप देख हरखानी।
सोभा वाकी कस कह गाऊँ।। १ ।।
प्रीत धसी अब हिये अन्तर में।
निस दिन रूपहि रूप धियाऊँ।। २ ।।
तन मन से हुइ गुरु की दासी।
गुरु गुरु मैं गुरु मनाऊँ।। ३ ।।

कौन सके गुरु महिमा गाई।
कहत कहत मैं कहत लजाऊँ।। ४ ।।
अचरज दरस दिखाया प्यारे।
दया मेहर अब किसे जनाऊँ।। ५ ।।
वाह वाह मेरे गुरू दयाला।
चरनन में नई प्रीत जगाऊँ।। ६ ।।
मैं तो निबल निकाम अजाना।
यही हवस मन माहिं समाऊँ।। ७ ।।
क्या सेवा कर गुरू रिझाऊँ।
भक्ति भाव क्या क्या दिखलाऊँ।। ८ ।।
दया करो राधास्वामी गुरु प्यारे।
मैंअब राधास्वामी राधास्वामी गाऊँ।। ९ ।।

।। शब्द १५ ।।

गुरु प्यारे के नैना ताक रहूँ।।टेक।।
दृष्टि जोड़ गुरु नैन कँवल में।
सीतल होय धुन शब्द सुनूँ।। १ ।।
सुरत लगाय धसूँ तिल द्वारे।
घट में दौरा करत रहूँ।। २ ।।
घंटा संख सुनूँ नभपुर में।
जोत रूप लख गगन चढ़ूँ।। ३ ।।

गुरु स्वरूप का दर्शन करके।
सुन में हंसन संग मिलूँ। ४ ।।
भँवरगुफा लख सतपुर धाऊँ।
अलख अगम के पार बसूँ।। ५ ।।
राधास्वामी प्यारे मेरा भाग जगाया।
सरन धार उन चरन पड़ूँ।। ६ ।।

।। शब्द १६ ।।

गुरु प्यारे का मुखड़ा झाँक रहूँ।। टेक ।।
अदभुत छबि निरखत हुई मोहित।
हरख हरख दृष्टि तान रहूँ।। १ ।।
लगन लगी गाढ़ी गुरु चरनन।
दर्शन रस ले मगन रहूँ।। २ ।।
बचन सार गुरु सुने सतसँग में।
अब तन मन की व्याध हरूँ।। ३ ।।
शब्द संग नित सुरत लगाऊँ।
घट में धुन झनकार सुनूँ।। ४ ।।
रूप सुहावन राधास्वामी प्यारे।
ध्यान धरत घट माहिं लखूँ।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द १७ ।।

गुरु प्यारे के दर्शन करत रहूँ।।टेक।।
दर्शन कहो चाहे जीव अधारा।
बिन दर्शन अति बिकल रहूँ।। १ ।।
दर्शन कर मोहिं मिलत अनंदा।
बिन दर्शन मैं तड़प रहूँ।। २ ।।
दर्शन कर दुख होवत दूरा।
बिन दर्शन मैं दुखित रहूँ।। ३ ।।
दर्शन कर सुर्त मन घिर आवें।
बिन दर्शन मैं बिपत सहूँ।। ४ ।।
नित प्रति दर्शन देव राधास्वामी।
बार बार तुम चरन पड़ूँ।। ५ ।।

।। शब्द १८ ।।

गुरु प्यारे की बतियाँ सुनत रहूँ।।टेक।।
सुन सुन बतियाँ हुई मतवाली।
चरन पकड़ अब लिपट रहूँ।। १ ।।
जग का भय और भाव बिसारा।
उमँग उमँग गुरु सेव करूँ।। २ ।।
गुरु सतसंगत लागी प्यारी।
प्रेमी जन सँग मेल करूँ।। ३ ।।

शब्द जुगत गुरु दीन्ह बताई।
प्रीत लाय धुन गगन सुनूँ।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर करी अब न्यारी।
उनके चरन में सुरत भरूँ।। ५ ।।

।। शब्द १९ ।।

गुरु प्यारे की महिमा क्या कहूँ गाय।। टेक ।।
नित नई लीला बिमल बिलासा।
देख देख मन अति हरखाय।। १ ।।
जग कारज की सुध बिसरानी।
रैन दिवस आनँद बरखाय।। २ ।।
दर्शन शोभा कस कहुँ गाई।
मन और सूरत रहे लुभाय।। ३ ।।
जान और प्रान वार देउँ गुरु पर।
जस मोपै मेहर उन करी बनाय।। ४ ।।
कुमत हटाय सुमत अब दीन्ही।
मन और सूरत शब्द लगाय।। ५ ।।
माया के सब बिघन निकारे।
काल करम भी दूर पराय।। ६ ।।
राधास्वामी चरन अधार जिऊँ मैं।
राधास्वामी रूप रहूँ नित ध्याय।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द २० ।।

गुरु प्यारे की सरनी जो जन आय।।टेक।।
सतसँग में गुरु लेहैं लगाई।
अमृत रूपी बचन सुनाय।। १ ।।
करम भरम की टेक छुड़ावें।
सुरत शब्द मारग दरसाय।। २ ।।
उमँग जगाय करावें सेवा।
मन और सूरत शब्द लगाय।। ३ ।।
जस जस मेहर करें गुरु प्यारे।
तस तस सूरत अधर चढ़ाय।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर करें फिर अपनी।
इक दिन दें निज धाम लखाय।। ५ ।।

।। शब्द २१ ।।

गुरु प्यारे का प्यारी सुन उपदेश।।टेक।।
निज घर का वे भेद सुनावें।
तिरलोकी जानो परदेश।। १ ।।
शब्द संग तुम सुरत चढ़ाओ।
छोड़ चलो यह माया देश।। २ ।।
तरुन अवस्था मुफ़्त बिताई।
सेत हुए अब सारे केश।। ३ ।।

अब चेतो गुरु बचन सम्हालो।
सुफल होय तेरी सारी बैस।। ४ ।।
राधास्वामी चरनन धर परतीती।
हिये में धारो भक्ती भेष।। ५ ।।
तब कारज तेरा होवे पूरा।
काल करम का छूटे लेश।। ६ ।।
राधास्वामी धाम करे विश्रामा।
जहाँ परम सुख नाहीं द्वेष।। ७ ।।

।। शब्द २२ ।।

गुरु प्यारे की सरनी आवो धाय।।टेक।।
तन मन संग नित रहो बँधानी।
फिर फिर जन्मो जग में आय।। १ ।।
देह धार नित दुख सुख सहना।
निकसन की कोई जुगत न पाय।। २ ।।
याते प्यारी कहना मानो।
सतगुरु से लो मेल मिलाय।। ३ ।।
सतसँग करो पड़ो उन चरनन।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाय।। ४ ।।
सरन धार करो शब्द कमाई।
राधास्वामी दें तेरा काज बनाय।। ५ ।।

।। शब्द २३ ।।

गुरु प्यारे की प्यारी मानो बात।।टेक।।
सतगुरु हैं हितकारी तेरे।
और वोही हैं पित और मात।। १ ।।
दया मेहर से बचन सुनावें।
उनका सतसँग कर दिन रात।। २ ।।
मन माया ने घेरा डाला।
जीव की करते बहु विधि घात।। ३ ।।
बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे।
दृढ़ कर पकड़ो उनका हाथ।। ४ ।।
वे दयाल तोहि लेहैं सम्हारी।
काल करम से टूटे नात।। ५ ।।
अपना बल दे भजन करावें।
सुरत शब्द मारग दरसात।। ६ ।।
रा धा स्वा मी धाम लखावें।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ात।। ७ ।।

।। शब्द २४ ।।

गुरु प्यारे के सँग चलो घर की ओर।।टेक।।
इस नगरी में सुख नहिं चैना।
भाग चलो सब बंधन तोड़।। १ ।।

जग जीवन की प्रीत है काची।
तू सतगुरु से नाता जोड़।। २ ।।
वो ही हैं सच्चे हितकारी।
वो ही हैं तेरे बंदी छोड़।। ३ ।।
घट में तुझ से करावें करनी।
मन और सूरत धुन सँग मोड़।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से जाय भौ पारा।
काल करम का माथा फोड़।। ५ ।।

।। शब्द २५ ।।

गुरु प्यारे का सतसँग करो दिन रात।। टेक ।।
सुन सुन बचन मगन होय मन में।
चरनन में नित प्रीत बढ़ात।। १ ।।
दरस अमी रस पीवत प्यारी।
तन मन की सब सुद्ध भुलात।। २ ।।
शब्द भेद ले चालत घट में।
मधुर मधुर धुन शब्द सुनात।। ३ ।।
गुरु गुन गावत मन हुलसाना।
जग भय भाव अब चित न समात।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से जागी सूरत।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ात।। ५ ।।

।। शब्द २६ ।।

गुरु प्यारे की प्यारी कर परतीत।।टेक।।
भाव सहित सतसँग कर उनका।
धार हिये में गहिरी प्रीत।। १ ।।
सुरत शब्द की जुगत बतावें।
और सिखावें भक्ती रीत।। २ ।।
करम भरम से खूँट छुड़ावें।
और करें तेरा निरमल चीत।। ३ ।।
जो तू गुरु के बचन सम्हारे।
जावे निज घर भौजल जीत।। ४ ।।
राधास्वामी चरन पकड़ ले दृढ़ कर।
वोही हैं तेरे सच्चे मीत।। ५ ।।

।। शब्द २७ ।।

गुरु प्यारे की प्रीत प्यारी हिरदे धार।।टेक।।
जगत मोह दुखदाई जानो।
मन से उसको तू तज डार।। १ ।।
कुटुम्ब जगत की प्रीत न साँची।
स्वारथ सँग सब लगे लबार।। २ ।।
निज घर की अब सुद्ध सम्हालो।
शब्द भेद ले गुरु से सार।। ३ ।।

प्रेम सहित उन जुगत कमाओ।
घट में सुन अनहद झनकार।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से पार लगावें।
उनके चरन का कर आधार।। ५ ।।

।। शब्द २८ ।।

गुरु प्यारे के चरनों की हो जा धूर।।टेक।।
दीन होय गुरु सन्मुख आओ।
जग परमारथ जानो कूड़।। १ ।।
देवी देवा भाव बिसारो।
साखा तज अब पकड़ो मूर।। २ ।।
गुरु दयाल तोहि जुगत बतावें।
घट में सुनावें अनहद तूर।। ३ ।।
प्रेम सहित जब जुगत कमावे।
देखे नभ में अद्‌भुत नूर।। ४ ।।
राधास्वामी चरन सरन गहो दृढ़ कर।
मेहर करें तुझ पर भरपूर।। ५ ।।

।। शब्द २९ ।।

गुरु प्यारे की निंदा मत कर यार।।टेक।।
निंदा कर क्यों पाप बढ़ावे।
वृथा उठावे करमन भार।। १ ।।

यह करतूत न जावे ख़ाली।
दुक्ख सहे तू बारम्बार।। २ ।।
जो कुल जीवन के हितकारी।
तिन को औगुन धरे गँवार।। ३ ।।
अंत समय तेरे वेही रक्षक।
जस तस उन में लाओ प्यार।। ४ ।।
राधास्वामी नाम सुमिर ले अब के।
राधास्वामी लें फिर तोहि सम्हार।। ५ ।।

।। शब्द ३० ।।

गुरु प्यारे से मिलना उमँग उमंग।।टेक।।
चित दे सुनो गुरू के बचना।
सीखो उनसे भक्ती ढंग।। १ ।।
करम भरम सब दूर निकारो।
छोड़ो सबहि कुसंग।। २ ।।
सुरत लगाय सुनो घट धुन को।
चढ़े प्रेम का रंग।। ३ ।।
गुरु का बल ले चढ़ो गगन को।
काल कर्म रहे दंग।। ४ ।।
दीन हीन मोहिं चीन्ह दया से।
राधास्वामी मिलाया अपने अंग।। ५ ।।

* * * * *

॥ शब्द ३१ ॥

गुरु प्यारे से प्यारी नाता जोड़॥टेक॥
या जग में साँचा सुख नाहीं।
काल करम का मच रहा शोर॥ १ ॥
मन इन्द्री लागे भोगन में।
काम क्रोध का भारी ज़ोर॥ २ ॥
याते बेग गिरो गुरु चरनन।
सतसँग करो कपट को छोड़॥ ३ ॥
दीन होय ले शब्द उपदेशा।
सुन ले घट में अनहद घोर॥ ४ ॥
दया होय तब चढ़े अधर में।
राधास्वामी चरनन पावे ठौर॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

गुरु प्यारे से प्यारी मत कर रोष॥टेक॥
तू अन समझ चेत नहिं लावे।
भोगन संग रहे बेहोश॥ १ ॥
गुरु हर दम तेरी दया बिचारें।
हँगता ममता लेवें खोस॥ २ ॥
मसलहत उनकी तू नहिं समझे।
उनको लगावे उलटा दोष॥ ३ ॥

अब ही चेत प्रीत करो उन से।
काम न आवे फिर अफ़सोस।। ४ ।।
धर परतीत सरन गहो दृढ़ कर।
राधास्वामी करें तेरा सब विधि पोष।। ५ ।।

।। शब्द ३३ ।।

गुरु प्यारे से माँगो भक्ती दान।।टेक।।
दीन होय गिर गुरु चरनन में।
करम भरम तज और अभिमान।। १ ।।
सतसँग कर मानो गुरु बचना।
घट में परखो शब्द निशान।। २ ।।
प्रीत प्रतीत धार हिये अंतर।
सेवा करो उमँग से आन।। ३ ।।
गुरु को परसन करले प्यारी।
तब घट धुन में सुरत लगान।। ४ ।।
राधास्वामी चरन प्रीत बढ़े छिन छिन।
घट में बिमल बिलास दिखान।। ५ ।।

।। शब्द ३४ ।।

गुरु प्यारे से प्यारी लगन लगाय।।टेक।।
जग का मोह छुड़ावें दिन दिन।
भोग बासना सहज हटाय।। १ ।।

बचन सुना तेरे भरम मिटावें।
मन और सूरत देहैं जगाय।। २ ।।
घट में सहज करावें करनी।
सुरत शब्द की जुगत बताय।। ३ ।।
उमँग जगाय करावें सेवा।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाय।। ४ ।।
इक दिन मेहर करें गुरु पूरी।
राधास्वामी पद में दें पहुँचाय।। ५ ।।

।। शब्द ३५ ।।

गुरु प्यारे से मत कर तू अभिमान।। टेक ।।
जो तू उनसे करे अहंकारा।
मुफ़्त सहे भारी नुक़सान।। १ ।।
वे नित करते जीव उबारा।
उनकी महिमा वेद न जान।। २ ।।
जो तू चाहे अपन उधारा।
प्रीत करो उन चरनन आन।। ३ ।।
बचन सुनो उपदेश सम्हारो।
गुरु स्वरूप का लाओ ध्यान।। ४ ।।
शब्द शब्द धुन सुन सुन घट में।
राधास्वामी की कर पहिचान।। ५ ।।

।। शब्द ३६ ।।

गुरु प्यारे के बचन अमृत की धार ।। टेक ।।
सुन सुन मैं तिरपत हुई मन में।
हियरे उमगा अधिक पियार ।। १ ।।
सतसँग करत भर्म सब नासे।
और इष्ट सब दिये बिसार ।। २ ।।
दिन दिन बढ़त प्रतीत चरन में।
नित प्रति दर्शन करूँ सम्हार ।। ३ ।।
शब्द जुगत ले करूँ अभ्यासा।
घट में सुनूँ अनहद झनकार ।। ४ ।।
ऐसा सतसँग मिला दया से।
राधास्वामी गुन गाऊँ हर बार ।। ५ ।।

।। शब्द ३७ ।।

गुरु प्यारे का शब्द सुनो धर प्यार ।। टेक ।।
जो जुगती गुरु देयँ बताई।
उसका करो अभ्यास सम्हार ।। १ ।।
शब्द गाज रहा घट में हर दम।
वाहि सुनो हिये परतीत धार ।। २ ।।
इसी शब्द ने रची त्रिलोकी।
यही शब्द करे जीव उबार ।। ३ ।।

याते दृढ़ कर पकड़ो धुन को।
और जुगत सब देओ बिसार।। ४ ।।
शब्द शब्द को सुनो अधर चढ़।
मन माया से गहो किनार।। ५ ।।
राधास्वामी सरन धार अब मन में।
पहुँचो इक दिन धुर दरबार।। ६ ।।

।। शब्द ३८ ।।

गुरु प्यारे का ले तू नाम सम्हार।।टेक।।
राधास्वामी धाम का बाँध निशाना।
राधास्वामी नाम सुमिर हर बार।। १ ।।
यही नाम निज नाम पिछानो।
और नाम सब तज दो झाड़।। २ ।।
इसी नाम का लेकर भेदा।
सुन सुन धुन घट में चढ़ यार।। ३ ।।
प्रीत प्रतीत धार अब मन में।
राधास्वामी नाम का कर आधार।। ४ ।।
राधास्वामी दया संग ले अपने।
सहज चलो भौसागर पार।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ३९ ।।

गुरु प्यारे के सतसँग में तू जाग।।टेक।।
दर्शन करो भाव से उनके।
बचन सुनो धर हिये अनुराग।। १ ।।
जो तू गुरु के बचन सम्हारे।
जाग उठे तेरा सोता भाग।। २ ।।
मन इन्द्रिन का मुख अब मोड़ो।
विषयन से तू कर बैराग।। ३ ।।
तब सुर्त तेरी पकड़े धुन को।
घट में सुने तू अनहद राग।। ४ ।।
रा धा स्वा मी चरन पकड़ के।
जैसे बने तू जग से भाग।। ५ ।।

।। शब्द ४० ।।

गुरु प्यारे की अस्तुत गाओ री।।टेक।।
धर विश्वास गुरू का प्यारी।
चरन सरन में धाओ री।। १ ।।
जो कुछ दया करें गुरु प्यारे।
चित से कभी न भुलाओ री।। २ ।।
भूल भरम को दूर निकारो।
प्रेम चरन में लाओ री।। ३ ।।

नित्त भजन कर गुरु प्यारे का।
धुन में सुरत लगाओ री।। ४ ।।
छिन २ मेहर परख सतगुरु की।
राधास्वामी चरन समाओ री।। ५ ।।

।। शब्द ४१ ।।

गुरु प्यारे का सँग कर जग से भाग।। टेक ।।
जब लग मन अटका रहे जग में।
बढ़े न चित में बिमल अनुराग।। १ ।।
काम क्रोध मद दूर बहावो।
छोड़ देओ संगत मन काग।। २ ।।
निरमल चित होय कर सतसँगा।
गुरु चरनन में लाओ राग।। ३ ।।
शब्द संग तुम सुरत सँवारो।
उमँग उमँग घट धुन में लाग।। ४ ।।
प्रीत प्रतीत जगाय हिये में।
राधास्वामी सँग नित खेलो फाग।। ५ ।।

।। शब्द ४२ ।।

गुरु प्यारे से प्यारी मत कर मान।। टेक ।।
सब को ख़्वार करत अभिमाना।
परमारथ की करता हान।। १ ।।

जब लग साँचा दीन न होवे।
दया मेहर नहिं लेवे आन।। २ ।।
दर्शन में कुछ रस नहिं पावे।
बचन सुने नहिं देकर कान।। ३ ।।
याते प्यारी अब ही समझो।
गुरु चरनन पड़ो तज अभिमान।। ४ ।।
तेरा काज उन्हीं से होगा।
मत भटके तू अनेक ठिकान।। ५ ।।
सेवा कर तन मन धन अरपो।
सरधा लाय धरो उन ध्यान।। ६ ।।
संशय भरम बिसारो चित से।
हित से सूरत शब्द लगान।। ७ ।।
अपने जीव की दया विचारो।
नहिं भटको तुम चारों खान।। ८ ।।
राधास्वामी तेरा काज बनावें।
पहुँचावें तोहि अधर ठिकान।। ९ ।।

।। शब्द ४३ ।।

गुरु प्यारे की मानो बात सही।।टेक।।
उनके बचन अनुभवी जानो।
तू ग्रन्थन में अटक रही।। १ ।।

बुधि चतुराई काम न आवे।
दीन होय गुरु चरन गही।। २ ।।
करनी कर परखो उन कहनी।
सार वस्तु तब हाथ लई।। ३ ।।
विद्यावान न पावें भेदा।
करम भरम में भटक रही।। ४ ।।
प्रीत सहित करो शब्द कमाई।
तब जागे परतीत नई।। ५ ।।
सेवा कर आरत कर गुरु की।
उमँग उमँग उन चरन पई।। ६ ।।
राधास्वामी मेहर से लें अपनाई।
निज चरनन की सरन दई।। ७ ।।

।। शब्द ४४ ।।

गुरु प्यारे के सँग करूँ आज बिलास।। टेक ।।
नई नई सेवा धार उमँग से।
घट में नित प्रति बढ़त हुलास।। १ ।।
उमँग उमँग कर आरत धारूँ।
देखूँ घट में अजब प्रकाश।। २ ।।
मेहर भरी दृष्टी गुरु डारी।
पूरन हुई मेरे मन की आस।। ३ ।।

मन और सुरत सिमट कर दोऊ।
गगन ओर चढ़ते निस बास।। ४ ।।
राधास्वामी द्याल गुरू प्यारे के।
चरन मिले निज सुख की रास।। ५ ।।

।। शब्द ४५ ।।

गुरु प्यारे से दिन दिन प्रीत बढ़ाय।। टेक ।।
लोक लाज और जगत भाव में।
और भोगन सँग रहा भुलाय।। १ ।।
साधारन करे शब्द अभ्यासा।
मन माया की परख न पाय।। २ ।।
याते होय हुशियार जगत से।
गुरु चरनन में प्रीत जगाय।। ३ ।।
जस जस प्रीत बढ़े गुरु चरनन।
घट में पावे रस अधिकाय।। ४ ।।
मन माया का बंधन छूटे।
सुन सुन धुन सुर्त गगन चढ़ाय।। ५ ।।
जोत उजियार लखे घट माहीं।
सूर चंद्र निरखत हरखाय।। ६ ।।
मुरली बीन सुनत हरखानी।
रा धा स्वा मी के दर्शन पाय।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द ४६ ।।

गुरु प्यारे से ले घट पाट खुलाय।।टेक।।
सतसँग करो बचन उर धारो।
दर्शन करो मन सुरत लगाय।। १ ।।
गुरु आज्ञा हित चित से मानो।
जुगत कमाओ उमँग जगाय।। २ ।।
प्रीत लाओ गुरु चरनन पूरी।
सरन गहो परतीत पकाय।। ३ ।।
घट में करो अभ्यास उमँग से।
शब्द संग नित सुरत लगाय।। ४ ।।
राधास्वामी होय प्रसन्न मेहर से।
तिल पट के दें पार चढ़ाय।। ५ ।।

।। शब्द ४७ ।।

गुरु प्यारे की लीला देख नई।।टेक।।
दीन होय जो सरनी आवे।
ताको गुरु अपनाय लई।। १ ।।
अगिनित जीव अस लिये हैं उबारी।
उन मेहर की महिमा कौन कही।। २ ।।
मेहर दया जीवन पर भारी।
सहज सबन को तार दई।। ३ ।।

कोई दिन सतसंग करा के।
शब्द का सहज उपदेश दई।। ४ ।।
जैसी बने तैसी करनी करावें।
काल करम से छुटाय लई।। ५ ।।
ऐसी दया कोई नहिं कीनी।
याते सब जिव कर्म बही।। ६ ।।
राधास्वामी द्याल नई जुगत उपाई।
सहज सुरत भौ पार गई।। ७ ।।
मैं गुन उनके कैसे गाऊँ।।
हार हार उन चरन पई।। ८ ।।

।। शब्द ४८ ।।

गुरु प्यारे से मिल हुई आज निहाल।। टेक ।।
जब लग गुरु सतसँग नहिं पाया।
फँसी रही माया के जाल।। १ ।।
मेहर हुई गुरु दर्शन पाया।
छूटा काल करम जंजाल।। २ ।।
सुरत लगी घट में अब चढ़ने।
निरखा अद्‌भुत जोत जमाल।। ३ ।।
मस्त हुई सुर्त आगे चाली।
त्रिकुटी में लखा सूरज लाल।। ४ ।।

राधास्वामी दया गई सतपुर में।
दंग रहे काल और महाकाल ।। ५ ।।

।। शब्द ४९ ।।

गुरु प्यारे के सँग प्यारी चलो निज धाम ।। टेक ।।
यह तो देश तुम्हारा नाहीं।
नहिं पावे यहाँ तू आराम ।। १ ।।
माया भारी जाल बिछाया।
घेरे जीव ख़ास और आम ।। २ ।।
बिन गुरु दया छुटे नहिं कोई।
गुरु के चरन लो दृढ़ कर थाम ।। ३ ।।
वे दयाल तोहिं लेहैं उबारी।
प्रीत सहित जप गुरु का नाम ।। ४ ।।
मन माया के बिघन हटा कर।
तोहि लखावें शब्द मुक़ाम ।। ५ ।।
प्रीत प्रतीत जगा तेरे हिये में।
धुन में सुरत लगावें ताम ।। ६ ।।
उनकी दया का करो भरोसा।
राधास्वामी करें तेरा पूरन काम ।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द ५० ।।

गुरु प्यारे के सँग प्यारी सुरत धुलाय।।टेक।।
जनम जनम की भूली सूरत।
भोगन सँग नित मैल भराय।। १ ।।
काम क्रोध की कीचड़ सानी।
मन इन्द्री सँग रही लिपटाय।। २ ।।
बिन सतसंग मैल नहिं छूटे।
याते सुनो बचन गुरु आय।। ३ ।।
शब्द संग माँजो मन सूरत।
और ध्यान गुरु रूप लगाय।। ४ ।।
राधास्वामी दया दृष्टि से हेरें।
तब सुर्त निरमल होय घर जाय।। ५ ।।

।। शब्द ५१ ।।

गुरु प्यारे से करना प्रीत ज़रूर।।टेक।।
बिन गुरु भक्ति कुमत नहीं छूटे।
बिन सतसंग न मन होय चूर।। १ ।।
याते भक्तिहि भक्ति कमाओ।
गुरु चरनन की होजा धूर।। २ ।।
दया करें गुरु दें उपदेशा।
घट में सुन फिर अनहद तूर।। ३ ।।

काल करम को काढ़ निकारें।
गुरु बल मन होय घट में सूर।। ४ ।।
मन और सुरत चढ़ें तब घट में।
राधास्वामी करें तेरा कारज पूर।। ५ ।।

।। शब्द ५२ ।।

गुरु प्यारे करें आज जगत उद्धार।। टेक।।
जीवन को अति दुखी देख कर।
उमँगी दया जा का वार न पार।। १ ।।
नर स्वरूप धर जग में आये।
भेद सुनाया घर का सार।। २ ।।
दीन होय जो चरनन लागे।
उन जीवन को लिया सम्हार।। ३ ।।
बाक़ी जीव जन्तु पर जग में।
मेहर दृष्टि करी गुरू दयार।। ४ ।।
जस तस उनका काज बनाया।
अपनी दया से किरपा धार।। ५ ।।
कोई जीव ख़ाली नहिं छोड़ा।
सब पर मेहर की दृष्टी डार।। ६ ।।
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे।
जीव जंतु सब लीन्हे तार।। ७ ।।

कौन सके उन महिमा गाई।
शेष महेश रहे सब हार।। ८ ।।
दोउ कर जोर करूँ मैं बिनती।
शुकर करूँ मैं बारम्बार।। ९ ।।
राधास्वामी सम समरथ नहिं कोई।
राधास्वामी करें अस दया अपार।।१० ।।
मैं बालक उन सरन अधीना।
चरन लगाया मोहिं कर प्यार।। ११ ।।

।। शब्द ५३ ।।

गुरु प्यारे को प्यारी ले पहिचान।।टेक।।
वोही हैं तेरे साँचे मीता।
वही हैं चेतन पुरुष सुजान।। १ ।।
वही हैं बंद छुड़ावन हारे।
वही सच्चे हितकारी जान।। २ ।।
बचन सुनो उन हिये धर प्यारा।
आज्ञा उनकी चित से मान।। ३ ।।
अंतरमुख करो शब्द कमाई।
गुरु स्वरूप का धारो ध्यान।। ४ ।।
प्रीत प्रतीत बढ़ाओ दिन दिन।
गुरु प्रसन्नता लेओ आन।। ५ ।।

सहज सहज निरमल होय सूरत।
शब्द शब्द सँग अधर चढ़ान।। ६ ।।
दया करें जब राधास्वामी।
निज घर अपने जाय बसान।। ७ ।।

।। शब्द ५४ ।।

गुरु प्यारे के सँग मन माँजो आय।।टेक।।
माया संग भुलाना भारी।
विषयन में रहा अधिक फँसाय।। १ ।।
करम धरम सँग हुआ बावरा।
देवी देवा रहा अटकाय।। २ ।।
जब लग सतसँग गुरु नहिं धारे।
समझ बूझ निरमल नहिं पाय।। ३ ।।
याते चेत सुनो गुरु बचना।
और अंतरमुख शब्द कमाय।। ४ ।।
तब मन निश्चल चित होय निरमल।
भजन करत घट धुन रस पाय।। ५ ।।
गुरु बल चढ़े अधर में सूरत।
मगन होय निज भाग सराय।। ६ ।।
राधास्वामी दया मेहर ले साथा।
सहज सहज सुर्त निज घर जाय।। ७ ।।

।। शब्द ५५ ।।

गुरु प्यारे सिखावें भक्ती रीत।।टेक।।
निरमल भक्ति रीत है झीनी।
कौन सिखावे बिन गुरु मीत।। १ ।।
कुल मालिक का भेद सुना कर।
चरन कँवल में लगावें प्रीत।। २ ।।
मालिक से मालिक को चाहे।
यही है निरमल भक्ती रीत।। ३ ।।
और चाह सब दूर बहाओ।
चरन गहो तज माया तीत।। ४ ।।
गुरु सतगुरु मालिक को जानो।
वही हैं संत और वे ही अतीत।। ५ ।।
धर परतीत करो दृढ़ प्रीती।
त्यागो जग की चाल अनीत।। ६ ।।
शब्द संग मन सुरत चढ़ाओ।
सतगुरु बल धर अपने चीत।। ७ ।।
राधास्वामी मेहर से निज घर जाओ।
काल करम और माया जीत।। ८ ।।

* * * * *

॥ शब्द ५६ ॥

गुरु प्यारे के सँग चलो हे मन यार ॥ टेक ॥
निज घर की वह राह बतावें।
सुरत शब्द की जुगती सार ॥ १ ॥
राधास्वामी चरनन प्रीत बढ़ावें।
घट में सुनावें धुन झनकार ॥ २ ॥
परचे दे परतीत दृढ़ावें।
बचन सुना करें हिये सिंगार ॥ ३ ॥
मन के मैल बिकार निकारें।
भोग बासना काटें झाड़ ॥ ४ ॥
अस करनी कहो कौन करावे।
बिन गुरु सतगुरु परम उदार ॥ ५ ॥
निरमल होय सुर्त चढ़े अधर में।
मगन होय लख बिमल बहार ॥ ६ ॥
परम बिलास मिला निज घर में।
रा धा स्वा मी रूप निहार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

गुरु प्यारे ने दी मेरी सुरत जगाय ॥ टेक ॥
किरपा कर सतसंग में खैंचा।
दया भरे मोहिं बचन सुनाय ॥ १ ॥

ध्यान धरत मन रूप समाना।
घट में रस पावत हरखाय।। २ ।।
निज घर का दिया भेद बताई।
सुरत शब्द में दीन्ह लगाय।। ३ ।।
सुन सुन धुन हिये होत अनंदा।
उमँग सहित नित जुगत कमाय।। ४ ।।
राधास्वामी दया परख अंतर में।
छिन छिन अपना भाग सराय।। ५ ।।

।। शब्द ५८ ।।

गुरु प्यारे के सँग प्यारी खेलो फाग।। टेक ।।
प्रेम रंग ले खेलो होली।
आसा मन्सा जग की त्याग।। १ ।।
मोह नींद में सब जग सोता।
तू सतसँग में गुरु के जाग।। २ ।।
मन इन्द्री और सुरत समेटो।
उमँग उमँग गुरु चरनन लाग।। ३ ।।
मेहर दया से शब्द सुनावें।
दिन दिन बढ़े घट में अनुराग।। ४ ।।
राधास्वामी चरनन जाय समाई।
जाग उठा मेरा अचरज भाग।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ५९ ।।

गुरु प्यारे करो अब मेहर बनाय।।टेक।।
मैं तो अजान लिपट रही जग में।
सतसँग बचन न चित ठहराय।। १ ।।
सुरत शब्द की जुगती भारी।
सो भी मुझ से गई न कमाय।। २ ।।
मैं तो सब बिधि हीन अधीनी।
चरन सरन गही तुम्हरी आय।। ३ ।।
जैसे बने मोहिं लेओ सुधारी।
चरनन में लेओ सुरत लगाय।। ४ ।।
राधास्वामी दयाल जीव हितकारी।
जस तस देओ मेरा काज बनाय।। ५ ।।

।। शब्द ६० ।।

गुरु प्यारे करें तेरी आज सहाय।।टेक।।
क्यों घबरावे मन में प्यारी।
गुरु परताप रहा हिये छाय।। १ ।।
सब बिधि तेरा काज बनावें।
तू उन चरनन प्रीत बढ़ाय।। २ ।।
संशय छोड़ करो विश्वासा।
जैसी बने तैसी जुगत कमाय।। ३ ।।

सतसँग कर उन सेवा धारो।
प्रेमी जन से मेल मिलाय।। ४ ।।
अपनी दया से राधास्वामी प्यारे।।
इक दिन देंगे घर पहुँचाय।। ५ ।।

।। शब्द ६१ ।।

गुरु प्यारे से रलियाँ कर लो आज।। टेक ।।
भाग जगे सतसँग में आई।
भक्ति भाव का पाया साज।। १ ।।
सुरत सम्हार करो अभ्यासा।।
शब्द रहा तेरे घट में गाज।। २ ।।
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन।
आज बनाओ अपना काज।। ३ ।।
मन इन्द्री के भोग बिसारो।
छोड़ो जग का भय और लाज।। ४ ।।
गुरु की दया ले सुरत चढ़ाओ।
पिंड अंड से छिन छिन भाज।। ५ ।।
सुन में जाय करो अश्नाना।
काल करम का छूटे बाज।। ६ ।।
राधास्वामी मेहर से आगे चालो।
चार लोक चढ़ भोगो राज।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द ६२ ।।

गुरु प्यारे के सँग चलो महल अपने।।टेक।।
कब लग मन सँग दुख सुख सहना।
छोड़ चलो यह जग सुपने।। १ ।।
गुरु के संग बाँध जुग चालो।
चरन कँवल में अब रचने।। २ ।।
सतसँग कर सब भरम निकारो।
बिषय भोग दिन दिन तजने।। ३ ।।
गुरु का शब्द कमाओ हित से।
घर की ओर नित्त भजने।। ४ ।।
जोत निरख त्रिकुटी में धाओ।
काल करम से वहाँ बचने।। ५ ।।
चंद्र मँडल लख गई गुफा में।
मुरली धुन जहाँ लगी बजने।। ६ ।।
सत्त अलख और अगम के पारा।
राधास्वामी चरन सुरत सजने।। ७ ।।

।। शब्द ६३ ।।

गुरु प्यारे चरन पर सीस नवाय।।टेक।।
मद और मोह काम को तज कर।
सतसँग गुरु का करो बनाय।। १ ।।

करम भरम और टेक पुरानी।
मन से सब को देओ भुलाय।। २ ।।
गुरु का ध्यान धरो तुम मन में।
सुरत शब्द में नित्त लगाय।। ३ ।।
सेवा कर निज भाग जगाओ।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाय।। ४ ।।
प्रेम सहित गुरु आरत धारो।
हिये में नइ नइ उमँग जगाय।। ५ ।।
दया मेहर ले चढ़ो अधर में।
घट में धुन झनकार सुनाय।। ६ ।।
सतगुरु दरस पाय सतपुर में।
रा धा स्वा मी चरन समाय।। ७ ।।

।। शब्द ६४ ।।

गुरु प्यारे लगावें तुझ को पार।।टेक।।
कर विश्वास गुरू का प्यारे।
उनकी गत मत अगम अपार।। १ ।।
सतसँग कर सेवा कर उनकी।
जुगत कमाओ धर कर प्यार।। २ ।।
जगत जीव स्वारथ के मीता।
मन से इनका सँग तज डार।। ३ ।।

सुरत लगाओ शब्द अधर में।
सुन सुन धुन जग से होय न्यार।। ४ ।।
राधास्वामी तेरा काज बनावें।
चरन सरन उन हिरदे धार।। ५ ।।

।। शब्द ६५ ।।

गुरु प्यारे की सेवा लाग रहूँ।।टेक।।
अचरज सतसँग मिला भाग से।
प्रीत सहित गुरु बचन सुनूँ।। १ ।।
भेद पाय गुरु जुगत कमाऊँ।
घट में नित धुन शब्द गुनूँ।। २ ।।
सतगुरु सेवा दुरलभ कहिये।
उमँग उमँग मैं सेव करूँ।। ३ ।।
ध्यान धरत घट हुआ उजियारा।
शब्द डोर गह गगन चढ़ूँ।। ४ ।।
राधास्वामी दया मेहर मैं पाई।
चरन सरन गह शांति धरूँ।। ५ ।।

।। शब्द ६६ ।।

गुरु प्यारे की मेहर कहूँ कस गाय।।टेक।।
जगत सँग मैं रही अजानी।
चरनन में लिया आप बुलाय।। १ ।।

दया भरे मोहिं बचन सुनाये।
मोह जाल से लिया छुड़ाय।। २ ।।
परमारथ की क़दर जनाई।
धुन सँग सूरत दीन्ह लगाय।। ३ ।।
प्रेम धार घट भीतर उमँगी।
अमृत रस पी रहूँ तृपताय।। ४ ।।
राधास्वामी दाता गुरू दयाला।
मुझ सी अधम को दिया पार लगाय।। ५ ।।

।। शब्द ६७ ।।

गुरु प्यारे से खेलो फाग रचाय।।टेक।।
नर देह अजब मिली किरपा से।
हित से भक्ती पंथ कमाय।। १ ।।
यह औसर फागुन ऋतु जानो।
जीव का अपने काज बनाय।। २ ।।
प्रीत धार करो संग गुरू का।
सेवा कर नई उमँग बढ़ाय।। ३ ।।
या बिधि होली खेलो गुरु से।
प्रेम रंग घट माहिं भराय।। ४ ।।
ध्यान धरो घट धुन को साधो।।
मन और सूरत गगन चढ़ाय।। ५ ।।

तन मन धन की धूल उड़ा कर।
शब्द गुरू से भेटो जाय।। ६ ।।
बिरह अनुराग नवीन जगा कर।
राधास्वामी प्रीतम लेओ रिझाय।। ७ ।।

।। शब्द ६८ ।।

गुरु प्यारे से होली खेलो आय।।टेक।।
ऐसा फाग रचो मन मेरे।
धरन गगन में धूम मचाय।। १ ।।
सखी सहेली सँग ले अपने।
प्रेम रंग की बरखा लाय।। २ ।।
शब्द शोर होवत घट माहीं।
राग रागिनी नई बिधि गाय।। ३ ।।
मन और सुरत उमँग कर चढ़ते।
शब्द धुनन सँग केल कराय।। ४ ।।
भक्ति दान फगुआ लिया गुरु से।
उमँग उमँग राधास्वामी गुन गाय।। ५ ।।

।। शब्द ६९ ।।

गुरु प्यारे के सँग तू निज घर जाव।।टेक।।
नर देह पाई सतगुरु भेटे।
अब के पड़ा प्यारी तेरा दाव।। १ ।।

काल देस में दुक्ख घनेरा।
इसको तज ऊपर चढ़ जाव।। २ ।।
अधर देस प्रीतम का डेरा।
उनके चरन में लाओ भाव।। ३ ।।
वा घर की गुरु गैल बतावें।
मन और सूरत शब्द लगाव।। ४ ।।
धर परतीत कमावो जुगती।
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाव।। ५ ।।
शब्द गुरू के चरन परस के।
सत्तपुरुष का दर्शन पाव।। ६ ।।
राधास्वामी मेहर से आगे चालो।
धाम अनामी जाय समाव।। ७ ।।

।। शब्द ७० ।।

गुरु प्यारे का सँग करो हे मन मीत।। टेक ।।
कुमत छोड़ गुरु संगत धारो।
बचन सुनो उन देकर चीत।। १ ।।
दया करें गुरु संग लगावें।
नित्त बढ़ावें तेरी प्रीत।। २ ।।
धुन रस घट में तोहि पिलावें।
चरनन में देवें परतीत।। ३ ।।

मन माया से पीछा छूटे।
धारे निरमल भक्ती रीत।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से लें अपनाई।
निज घर जाय काल को जीत।। ५ ।।

।। शब्द ७१ ।।

गुरु प्यारे से मिल घट कपट हटाय।। टेक ।।
जब लग मन में दुचिता रहती।
परमारथ की बूझ न पाय।। १ ।।
दुबिधा छोड़ करो सतसंगा।
बचन सार रस पियो अघाय।। २ ।।
शब्द भेद जो गुरू बतावें।
धार हिये करो भजन बनाय।। ३ ।।
बिमल प्रकाश लखो घट अंतर।
नइ नइ धुन झनकार सुनाय।। ४ ।।
लीला देख अजब मन माना।
रा धा स्वा मी सरन पड़ाय।। ५ ।।

।। शब्द ७२ ।।

गुरु प्यारे से मिल तू मन मत त्याग।। टेक ।।
भक्ति दान माँगो सतगुरु से।
दीन होय गुरु चरनन लाग।। १ ।।

मेहर करें गुरु दे हैं जगाई।
जुगन जुगन का सोया भाग।। २ ।।
उमँग जगाय करावें सतसँग।
घट में सुनावें अनहद राग।। ३ ।।
अपना बल दे सुरत चढ़ावें।
सहज छुड़ावें कलमल दाग़।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से कीन्ही न्यारी।
सुरत रही सुन धुन में पाग।। ५ ।।

।। शब्द ७३ ।।

गुरु प्यारे की दम दम शुकर गुज़ार।। टेक ।।
दया करी मोहिं संग लगाया।
भेद दिया मोहिं घट का सार।। १ ।।
सुमत सिखाय छुड़ाई मनमत।
जगत बासना दई निकार।। २ ।।
मन माया के बंधन काटे।
करम धरम का कूड़ा टार।। ३ ।।
निज चरनन में प्रीत बढ़ाई।
और दई परतीत सम्हार।। ४ ।।
शब्द संग सुर्त अधर चढ़ा कर।
पहुँचाया राधास्वामी दरबार।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ७४ ।।

गुरु प्यारे की मौज रहो तुम धार।।टेक।।
वे हर दम तेरी दया बिचारें।
निस दिन रक्षा करें सम्हार।। १ ।।
हँगता ममता भूल और भरमा।
मन के निकारें सबहि बिकार।। २ ।।
जिस में तेरी होय भलाई।
स्वारथ और परमारथ सार।। ३ ।।
वैसी ही करें मौज दया से।
दोऊ में हित मानो यार।। ४ ।।
चाहे मन माने या नाहीं।
मौज गुरू की दया निहार।। ५ ।।
जिस बिधि राखें उस बिधि रहना।
शुकर की रखना समझ बिचार।। ६ ।।
ऐसी समझ धार रहे मन में।
सो निरखे गुरु मेहर अपार।। ७ ।।
राधास्वामी समरथ और न कोई।
चरन पकड़ धर प्रेम पियार।। ८ ।।

* * * * *

।। शब्द ७५ ।।

गुरु प्यारे की आरत करो बनाय।।टेक।।
मन इन्द्री घट माहिं समेटो।
दृष्टि जोड़ सुर्त चरन लगाय।। १ ।।
धुन की होत जहाँ झनकारी।
और बिमल परकाश दिखाय।। २ ।।
दिन दिन बढ़त प्रीत चरनन में।
उमँग उमँग गुरु जुगत कमाय।। ३ ।।
रस पावत घट में नित चालत।
सुन सुन धुन मन अति हरखाय।। ४ ।।
मेहर करी गुरु अधर चढ़ाया।
नभ में जोत रूप दरसाय।। ५ ।।
त्रिकुटि जाय गुरु शब्द समानी।
तिस परे मुरली बीन सुनाय।। ६ ।।
काल करम दोउ थक रहे मग में।
माया भी सिर धुनत लजाय।। ७ ।।
राधास्वामी दया करी अब न्यारी।
निज घर मुझको दिया पहुँचाय।। ८ ।।

* * * * *

।। शब्द ७६ ।।

गुरु प्यारे का सतसँग करो बनाय।।टेक।।
सहज सहज निरमल हुआ मनुआँ।
दरशन कर हिये कँवल खिलाय।। १ ।।
प्रीत धसी घट में चरनन की।
उमँग उमँग गुरु रूप धियाय।। २ ।।
सुन सुन बचन बढ़ा अनुरागा।
भेद पाय सुर्त शब्द लगाय।। ३ ।।
साँचा नाम मिला निज घट में।
दुरमत मन की गई नसाय।। ४ ।।
मगन हुई देख हंस बिलासा।
राधास्वामी राधास्वामी चहुँ दिस गाय।। ५ ।।

।। शब्द ७७ ।।

गुरु प्यारे के चरनन मचल रही।।टेक।।
भोली बाली प्यारी सुरतिया।
घट में दरशन माँग रही।। १ ।।
निज स्वरूप की सुन सुन महिमा।
मन में अचरज करत रही।। २ ।।
प्रेम भरी धावत अब घट में।
उमँग उमँग सुर्त अधर गई।। ३ ।।

गुरु स्वरूप निरखा त्रिकुटी में।
सतपुर सतगुरु दरस दई।।४।।
मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे।
निज चरनन में मेल लई।।५।।

।। शब्द ७८ ।।

गुरु प्यारे का सतसँग अमल अमोल।।टेक।।
चित से बचन सुनो उर धारो।
कब लग रहो तुम डावाँडोल।।१।।
शब्द कमाओ प्रेम भक्ति से।
घट का दें गुरु परदा खोल।।२।।
धुन संग चढ़ो अधर में प्यारी।
माया के सब उतरें ख़ोल।।३।।
गुरु परताप करो यह करनी।
सुफल होय जीवन अनमोल।।४।।
राधास्वामी मेहर से धुर पद पावे।
अकह अपार अनाम अबोल।।५।।

।। शब्द ७९ ।।

गुरु प्यारे का सँग बड़ भागी पाय।।टेक।।
जिन सज्जन गुरु महिमा जानी।
वे सतसंग करें नित आय।।१।।

परमारथ की क़दर जान कर।
जग आसा सब दई हटाय।। २ ।।
मन इन्द्री का सोधन कर के।
राधास्वामी चरनन प्रेम जगाय।। ३ ।।
सुरत लगावें शब्द अधर में।
घट में निस दिन आनँद पाय।। ४ ।।
जग का मोह न व्यापे उनको।
दुख सुख में रहें चरन धियाय।। ५ ।।
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन।
सेवा कर लें गुरू रिझाय।। ६ ।।
मन इच्छा को रोक जुगत से।
मगन होय गुरु रज़ा कमाय।। ७ ।।
सुखी रहें चरनन में हर दम।
राधास्वामी प्यारे हुए सहाय।। ८ ।।

।। शब्द ८० ।।

गुरु प्यारे के सँग आनँद भारी।।टेक।।
जग व्यवहार सुहावे नाहीं।
छोड़ दई कृत संसारी।। १ ।।
दरशन बचन भजन और सेवा।
यह करतूत लगी प्यारी।। २ ।।

मन और सुरत प्रेम रँग भीजें।
सुन सुन अनहद झनकारी।। ३ ।।
उमँग उमँग अब चढ़त अधर में।
छिन छिन होय तन से न्यारी।। ४ ।।
गुरु सतगुरु पद परस दया से।
राधास्वामी चरन सीस धारी।। ५ ।।

## बचन १८

## प्रेम प्रकाश भाग ३

।। शब्द १ ।।

गुरु प्यारे के बैन रसीले, अमृत की खान।। टेक ।।
प्रेम भरे नित बचन सुनावें।
लगे कलेजे बान।
हुई घायल जान।। १ ।।
जगत मोह जंजाल छुड़ाया।
खैंच धरे मन प्रान।
गुरु चरनन आन।। २ ।।
शब्द भेद दिया घट का सारा।
सुरत लगाई तान।
चढ़ कर असमान।। ३ ।।

गुरु का रूप लखा त्रिकुटी में।
सत्तपुरुष का धारा ध्यान।
सतलोक ठिकान।। ४ ।।
आगे चल पहुँची धुर धामा।
राधास्वामी अचरज दरस दिखान।
मैं रही हैरान।। ५ ।।

।। शब्द २ ।।

गुरु प्यारे के नैन रँगीले।
मेरा मन हर लीन।।टेक ।।
अद्भुत छबि निरखत नर नारी।
बचन सुनत हुए दीन।
मन धार यक़ीन।। १ ।।
सुन्दर रूप बसा नैनन में।
दरस बिना तड़पत ग़मगीन।
जस जल बिन मीन।। २ ।।
जब गुरु दरशन मिला भाग से।
मगन हुई रस पियत अमीं।
गुरु किरपा चीन।। ३ ।।
सतसँग कर गुरु सेवा लागी।
निरमल हुई मेरी सुरत मलीन।
हुए अघ सब छीन।। ४ ।।

शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई।
राधास्वामी मेहर अनोखी कीन।
हुई चरनन लीन।। ५ ।।

।। शब्द ३ ।।

गुरु प्यारे की चाल अनोखी।
जग से न्यारी।।टेक।।
बाहरमुख जग का परमारथ।
नक़ल से मेल मिला री।
नहीं असल सम्हारी।। १ ।।
अंतरमुख जो करते करनी।
पिंड के पार न जा री।
सतपद नहिं पा री।। २ ।।
संत देश ऊँचे से ऊँचा।
पिंड अंड ब्रह्मंड निहारी।
तिस पार सिधारी।। ३ ।।
सुरत शब्द मारग समझावें।
मन और सूरत अधर चढ़ावें।
सुन धुन झनकारी।। ४ ।।
जो जिव राधास्वामी सरनी आये।
मेहर दया से पार लगाये।
हुए महा सुखियारी।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ४ ।।

गुरु प्यारे का संग अमोला।
सुख का भंडार।।टेक।।
जिन जिन संग करा हित चित से।
पाया उन घर भेद अपार।
पिया अमृत सार।। १ ।।
प्रेम प्रीत उन घट में जागी।
राधास्वामी चरन उर धरे सम्हार।
हुआ हिये उजियार।। २ ।।
जगत भाव और भोग बासना।
मन से उनके दई निकार।
मल धोये झाड़।। ३ ।।
निरमल होय सुरत अलगानी।
मगन हुई गुरु रूप निहार।
सुन धुन झनकार।। ४ ।।
नभ में होय गई त्रिकुटी में।
वहाँ से पहुँची सुन्न मँझार।
सुनी सारँग सार।। ५ ।।
मुरली बीन सुनी धुन दोई।
पहुँची अलख पुरुष दरबार।
गई अगम के पार।। ६ ।।

आगे राधास्वामी धाम निहारा।
मिला वहाँ आनन्द अपार।
हुआ जीव उबार।। ७ ।।

।। शब्द ५ ।।

गुरु प्यारे का रँग चटकीला।
कभी उतरे नाहिं।।टेक।।
जिन पर मेहर करी गुरु प्यारे।
सतसँग में उन लिया मिलाय।
दई चरनन छाँह।। १ ।।
करम भरम से लीन्ह बचाई।
निरमल कर उन लिया अपनाय।
गई काल की दायँ।। २ ।।
प्रीत प्रतीत दई चरनन में।
शब्द की महिमा दई बसाय।
उन हिरदे माहिं।। ३ ।।
शब्द सुनाय सुर्त गगन चढ़ाई।
लीला देख सब रहे हरखाय।
मिल गुरु गुन गायँ।। ४ ।।
ऐसा रंग रँगा राधास्वामी।
सब जिव चरन सरन में धायँ।
दृढ़ पकड़ी बाँह।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ६ ।।

गुरु प्यारे का रँग अति निरमल।
कभी मैला न होय।।टेक।।
सतसँग धारा नितही जारी।
काल जाल और करम कटाय।
दिये कलमल धोय।। १ ।।
हिरदे में नई प्रीत जगावें।
चरनन में परतीत बढ़ावें।
करम भरम दिये खोय।। २ ।।
जुगत बताय करावें करनी।
मन सूरत धुन में धरनी।
मिला आनन्द मोहिं।। ३ ।।
शब्द शब्द का भेद सुनाया।
धुर पद का मोहिं मरम लखाया।
जहाँ एक न दोय।। ४ ।।
राधास्वामी सँग की महिमा भारी।
मेहर दया पर जाउँ बलिहारी।
सुर्त चरन समोय।। ५ ।।

।। शब्द ७ ।।

गुरु प्यारे का देश अति ऊँचा।
कस पहुँचूँ धाय।।टेक।।

बिन गुरु दया काज नहिं होई।
सतसँग में अब बैठूँ जाय।
चित चरन लगाय।। १ ।।
सुन सुन बचन सुरत मन माँजूँ।
गुरु मूरत का ध्यान लगाय।
घट ताकूँ जाय।। २ ।।
शब्द जुगत गुरु दीन्ह बताई।
प्रेम सहित रहूँ ताहि कमाय।
मन सुरत जमाय।। ३ ।।
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊँ।
सहसकँवल सुनूँ घंटा जाय।
फिर गगन चढ़ाय।। ४ ।।
सुन्न और महासुन्न के पारा।
गुफा परे सत पद दरसाय।
धुन बीन सुनाय।। ५ ।।
उमँग जगाय चढ़ी आगे को।
अलख अगम का दरस दिखाय।
तिस पार चलाय।। ६ ।।
राधास्वामी रूप निरख मगनानी।
महिमा वा की को सके गाय।
मैं रही शरमाय।। ८ ।।

* * * * *

।। शब्द ८ ।।

गुरु प्यारे का महल सुहावन।
कस देखूँ जाय।।टेक।।
गुरु बिन कोई भेद न जाने।
उनका सँग अब करूँ बनाय।
हिये उमँग जगाय।। १ ।।
सुन सुन देश की महिमा भारी।
मन में दिन दिन प्रीत बढ़ाय।
विरह हिये रही छाय।। २ ।।
इंद्री भोग नहीं अब भावें।
मन में रहे नित दरद समाय।
पिया पीर सताय।। ३ ।।
बिन गुरु कौन दवा करे मेरी।
मेहर से दें वे सुरत चढ़ाय।
धुन शब्द सुनाय।। ४ ।।
बिमल बिलास लखे अंतर में।
तब तन मन कुछ शांति धराय।
घट पाट खुलाय।। ५ ।।
कँवल कँवल की लीला न्यारी।
मेहर दया से निरखूँ जाय।
अति आनँद पाय।। ६ ।।

बिनय करूँ राधास्वामी चरनन में।
बेग देओ मेरा काज बनाय।
हिये दया उमगाय।। ७ ।।

।। शब्द ९ ।।

गुरु प्यारे का मारग झीना।
कोई गुरुमुख जाय।। टेक ।।
मन इंद्री को रोक अँदर में।
भोग बासना दूर हटाय।
मन मान नसाय।। १ ।।
सतगुरु प्रेम भींज रहे निस दिन।
नया नया भाव और उमँग जगाय।
गुरु सेवा लाय।। २ ।।
होय हुशियार चलत गुरु मारग।
घट में बिमल बिलास दिखाय।
गुरु ध्यान धराय।। ३ ।।
तन मन धन चरनन पर वारत।
मन और सूरत गगन चढ़ाय।
घट शब्द जगाय।। ४ ।।
करम काट गुरु बल चली आगे।
माया दल भी दूर पराय।
दिया काल गिराय।। ५ ।।

ऐसी सुर्त गुरु चरन अधीनी।
सूर होय सत शब्द समाय।
धुन बीन बजाय।। ६ ।।
मेहर हुई सुर्त अधर सिधारी।
राधास्वामी दिया निज घर पहुँचाय।
लिया गोद बिठाय।। ७ ।।

।। शब्द १० ।।

गुरु प्यारे चरन मन भावन।
हिये राखूँ बसाय (छिपाय)।। टेक ।।
सुन सुन बचन गुरू प्यारे के।
संशय भरम सब गये नसाय।
मन भाव बढ़ाय।। १ ।।
चरन सरन की महिमा जानी।
मन और सूरत रहे लुभाय।
दृढ़ लगन लगाय।। २ ।।
चरन भेद ले धारा ध्याना।
नित प्रति रस और आनँद पाय।
निज भाग सराह।। ३ ।।
गुरु चरनन सम और न प्यारा।
बारम्बार उन्हीं में धाय।
मन सुर्त हरखाय।। ४ ।।

राधास्वामी मेहर की क्या कहुँ महिमा।
सहज लिया मोहिं चरन लगाय।
सब बंद छुड़ाय।। ५ ।।

।। शब्द ११ ।।

गुरु प्यारे की छबि मन मोहन।
रही नैनन छाय।।टेक।।
जब से मैं पाये गुरु प्यारे के दरशन।
हिरदे में रही प्रीत समाय।
मन अति अकुलाय।। १ ।।
बार बार दरशन को धावत।
बिन दरशन रहे अति घबराय।
कहीं चैन न पाय।। २ ।।
ऐसी दशा देख गुरु प्यारे।
निज सतसँग में लिया मिलाय।
घट प्रेम बढ़ाय।। ३ ।।
तन मन इंद्री सिथल हुए अब।
दरशन रस ले रहे तृप्ताय।
जग भाव भुलाय।। ४ ।।
गुरु स्वरूप अब बसा हिये में।
हर दम गुरु का ध्यान धराय।
कभी बिसर न जाय।। ५ ।।

प्रीत प्रतीत बढ़ी गुरु चरनन।
गुरु सम जग में कोई न दिखाय।
रही महिमा गाय।। ६ ।।
राधास्वामी मेहर से घट पट खोला।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ाय।
दई घर पहुँचाय।। ७ ।।

।। शब्द १२ ।।

गुरु प्यारे का पंथ निराला।
अति ऊँच ठिकान।।टेक ।।
बेद कतेब पार नहिं पावें।
जोगी ज्ञानी मरम न जान।
पद ब्रह्म ठिकान।। १ ।।
तिरदेवा और दस औतारा।
पीर पैग़म्बर वली भुलान।
गति संत न जान।। २ ।।
मुझ पर दया करी गुरु प्यारे।
सुरत शब्द का भेद बतान।
घट राह चलान।। ३ ।।
प्रेम प्रीति गुरु चरनन धारी।
धुन सँग मन और सुरत लगान।
चढ़ अधर स्थान।। ४ ।।

राधास्वामी गत मत अति से भारी।
बिन किरपा नहिं होय पहिचान।
कस पाय निशान।। ५ ।।

।। शब्द १३ ।।

गुरु प्यारे की कर परतीती।
होय जीव उबार।।टेक।।
संशय भरम निकारो मन से।
कर सतसंग बढ़ाओ प्यार।
रहो नित हुशियार।। १ ।।
काम क्रोध मद लोभ बिकारा।
इन दूतन का सँग तज डार।
गुरु सीख सम्हार।। २ ।।
गुरु बल सील छिमा चित राखो।
और संतोष बिबेक विचार।
अस दूतन टार।। ३ ।।
शब्द जुगत तुम नित्त कमाओ।
गुरु मूरत का ध्यान सम्हार।
घट देख बहार।। ४ ।।
मेहर करें राधास्वामी दयाला।
सुरत चढ़ावें धुन की लार।
जाय निज घर बार।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द १४ ।।

गुरु प्यारे का धार भरोसा।
करें कारज पूर।।टेक।।
सुरत शब्द की जुगत कमाओ।
मेहर से घट में झलके नूर।
बाजे अनहद तूर।। १ ।।
विरहन सुरत पाय घट भेदा।
कार कमावत कर भ्रम चूर।
तज मन्सा कूर।। २ ।।
सुन सुन धुन सूरत मगनानी।
मस्त हुआ मन सूर।
हुइ इच्छा दूर।। ३ ।।
राधास्वामी दृष्टि दया की डारी।
काल करम रहे झूर।
मिली जाय पद मूर।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर की क्या कहुँ महिमा।
पहुँच गई धुर धाम हुज़ूर।
हुइ चरनन धूर।। ५ ।।

।। शब्द १५ ।।

गुरु प्यारे की जुगत कमाओ।
मन धर कर प्यार।।टेक।।

दीन होय कर सतसँग गुरु का।
बचन सुनो चित चेत सम्हार।
उर धारो सार।। १ ।।
संशय छोड़ प्रीत कर गुरु से।
दिन दिन उन परतीत सम्हार।
सब भरम निकार।। २ ।।
जब मन निरमल चित होय निश्चल।
शब्द भेद दें सब का सार।
गुरु किरपा धार।। ३ ।।
घेर घुमर घट में मन सूरत।
शब्द सुनें चढ़ उलटी धार।
लख बिमल बहार।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से जाय अधर में।
सुन्न और महासुन्न के पार।
सत रूप निहार।। ५ ।।

।। शब्द १६ ।।

गुरु प्यारे का कर दीदारा।
घट प्रीत जगाय।।टेक।।
गुरु दरशन की महिमा भारी।
छिन में कोटिन पाप नसाय।
जिव काज बनाय।। १ ।।

बिरही जन कोई जानें रीती।
जस दरपन में दरस दिखाय।
हिये रूप बसाय।। २ ।।
ऐसी लगन लगावें जो जन।
छिन छिन रहें गुरु चरन समाय।
घट आनँद पाय।। ३ ।।
चरन भेद ले सुरत चढ़ावें।
दरशन रस ले रहें तृपताय।
धुन शब्द सुनाय।। ४ ।।
मेहर करें गुरु राधास्वामी प्यारे।
इक दिन लें निज चरन लगाय।
धुर घर पहुँचाय।। ५ ।।

।। शब्द १७ ।।

गुरु प्यारे से प्रीत लगाना।
मन सरधा लाय।।टेक।।
जगत भोग सब जान असारा।
इन से हट सतसंग समाय।
गुरु बचन कमाय।। १ ।।
भूल भरम और करमा धरमा।
इन से नहिं कुछ काज सराय।
सब दूर बहाय।। २ ।।

उमँग सहित गुरु सेवा धारो।
मन और सुर्त धुन संग लगाय।
गुरु रूप धियाय।। ३ ।।
मेहर से घट में मिले अनंदा।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाय।
नई उमँग जगाय।। ४ ।।
दया करें गुरु सुरत चढ़ावें।
सहस कँवल लख त्रिकुटी धाय।
गुरु शब्द सुनाय।। ५ ।।
सुन में जाय सुनी धुन सारँग।
सूरज सेत भँवर दरसाय।
सोहंग धुन गाय।। ६ ।।
सतगुरु रूप लखे सतपुर में।
आगे राधास्वामी धाम दिखाय।
निज चरन समाय।। ७ ।।

।। शब्द १८ ।।

गुरु प्यारे चरन में भाव।
लाओ मन से प्यारी।।टेक।।
जगत बड़ाई धोखा जानो।
भोगन को विष रूप पिछानो।
इनसे होय फिर दुख भारी।।१।।

गुरु सतसँग की महिमा जानो।
सुन सुन बचन चित्त में आनो।
इक दिन होय जग से न्यारी ।। २ ।।
जो यह काम करो नहिं अब के।
माया संग रहो नित अटके।
जनम जनम रहो दुखियारी ।। ३ ।।
याते कहन हमारी मानो।
गुरु चरनन में आरत ठानो।
हित चित से सेवा धारी ।। ४ ।।
मेहर से गुरु तोहि भेद लखावें।
शब्द संग तेरी सुरत चढ़ावें।
निरखे घट में उजियारी ।। ५ ।।
सुन सुन धुन सुर्त घट में रीझे।
काल करम बल छिन छिन छीजे।
जावे गगन शिखर पारी ।। ६ ।।
सत्त शब्द धुन सुन हरषानी।
अलख अगम की सुन लई बानी।
मिल राधास्वामी हुई सुखियारी ।। ७ ।।

।। शब्द १९ ।।

गुरु प्यारे का सुन्दर रूप।
निरखत मोह रही ।। टेक ।।

जग व्यवहार लगा सब फीका।
गुरु चरनन मन लागा नीका।
सतसँग कर मल धोय रही।।१ ।।
गुरु स्वरूप हिये माहिं बसाना।
रैन दिवस उन धरती ध्याना।
शब्द में सुरत समोय रही।।२ ।।
हरख हरख घट सुनती बाजा।
भक्ति भाव का पाया साजा।
कुटिल कुमत सब खोय रही।।३ ।।
प्रीत प्रतीत चरन में बढ़ती।
शब्द संग सुर्त ऊपर चढ़ती।
माया सिर धुन रोय रही।।४ ।।
राधास्वामी मेहर से गई दस द्वारे।
सत्त अलख और अगम के पारे।
निज चरनन सुर्त पोय रही।।५ ।।

।। शब्द २० ।।

गुरु प्यारे की लीला सार।
जग जिव नेक न जान।।टेक।।
यह तो करम भरम में अटके।
लोक वेद में रहे फँसान।
घर आदि भुलान।।१ ।।

गुरु भक्ती की चाल अनोखी।
प्रेमी जन के अति मन भान।
गुरु प्रेम जगान।। २ ।।
प्रेमी जन नित मन से जूझें।
इन्द्रियन को रोकें घट आन।
माया विघन हटान।। ३ ।।
जग जीवन से मेल न होवे।
वे भोगन में रहे अटकान।
रहे मन मत ठान।। ४ ।।
जन्म जन्म वे दुख सुख भोगें।
चौरासी में रहें भरमान।
कहिं चैन न पान।। ५ ।।
गुरु भक्तन की रीत निराली।
गुरु चरनन नित प्रीत बढ़ान।
सरबस वार धरान।। ६ ।।
मेहर दया राधास्वामी की पावें।
छिन छिन घर की ओर चलान।
लख शब्द निशान।। ७ ।।

।। शब्द २१ ।।

गुरु प्यारे की सेवा धारो।
तज मन अभिमान।।टेक।।

अस गुरु संग भाग से पइये।
सेवा कर उन बहुत रिझइये।
तन मन कर कुरबान।। १ ।।
गुरु पूरे जब दया बिचारें।
करम भरम सब छिन में टारें।
दें भक्ती दान।। २ ।।
निज घट का गुरु भेद बतावें।
सुरत शब्द का जोग सिखावें।
लाय घट में ध्यान।। ३ ।।
दीन होय गुरु सतसँग करना।
मन और सुरत शब्द में धरना।
चढ़ अधर ठिकान।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें।
शब्द शब्द का धाम लखावें।
धुर पद दरसान।। ५ ।।

।। शब्द २२ ।।

गुरु प्यारे से प्रीत बढ़ाओ।
तज मन का मान।।टेक।।
मन में मान धार करे सतसँग।
सतगुरु की नहिं होय पहिचान।
घट तिमिर समान।। १ ।।

दीन अधीन होय करे भक्ती।
तब कुछ घट में पाय निशान।
बढ़े प्रेम निदान।। २ ।।
ता ते मान और कपट तियागो।
गुरु चरनन में प्रीत लगान।
परतीत जगान।। ३ ।।
तब गुरु होय प्रसन्न दया से।
देवें घर का पता निशान।
सुर्त अधर चढ़ान।। ४ ।।
प्रेम अंग ले सूरत साजी।
राधास्वामी प्यारे हो गये राज़ी।
घर जाय बसान।। ५ ।।

।। शब्द २३ ।।

गुरु प्यारे से प्यार बढ़ाना।
सुन घट में धुन।।टेक।।
बचन सुनो तुम समझ बूझ के।
दरस करो तुम उमँग प्रेम से।
नित गाओ गुन।। १ ।।
मान मनी तज सतसँग करना।
गुरु चरनन में नित चित धरना।
सुमिर नाम निस दिन।। २ ।।

मन माया के भोग बिसरना।
गुरु की आज्ञा सिर पर धरना।
छाँट बचन चुन चुन।। ३ ।।
करम भरम का कूड़ा झाड़ा।
गुरु स्वरूप अब लागा प्यारा।
झाँक रहूँ छिन छिन।। ४ ।।
राधास्वामी प्यारे किरपा धारी।
जगत जाल से किया मोहिं न्यारी।
मेल लिया चरनन।। ५ ।।

।। शब्द २४ ।।

गुरु प्यारे के बचन अमोला।
उर धार रहूँ।।टेक।।
निज घर का गुरु भेद जनाई।
राधास्वामी महिमा अधिक सुनाई।
हिये उमँग भरूँ।। १ ।।
सहज जोग सुर्त शब्द कहावा।
सो गुरु मेहर से मोहिं समझावा।
सुर्त तान रहूँ।। २ ।।
नित अभ्यास मैं करूँ सम्हारी।
हरखूँ घट में निरख उजारी।
गुरु सेव करूँ।। ३ ।।

प्रीत जगी अब मन में भारी।
गुरु सम रक्षक कोइ न बिचारी।
नित ध्यान धरूँ।। ४ ।।
दीन जान मोपै कीनी दाया।
राधास्वामी प्यारे अंग लगाया।
जस गाय रहूँ।। ५ ।।

।। शब्द २५ ।।

गुरु प्यारे की सरन सम्हारो।
धर मन परतीत।।टेक।।
बिना सरन कोइ बचे न भाई।
सरन बिना कोइ घर नहिं जाई।
तज माया तीत।। १ ।।
जिन जिन सरन गही गुरु पूरे।
उनही जाय लखा पद मूरे।
ले संतन सीत।। २ ।।
जो तुम निज घर जाना चाहो।
सतगुरु से ले जुगत कमाओ।
कर मनुआँ मीत।। ३ ।।
दिन दिन चरनन प्रेम बढ़ाओ।
तन मन धन गुरु भेंट चढ़ाओ।
यही है भक्ती रीत।। ४ ।।

राधास्वामी दया दृष्टि से हेरें।
मन और सुरत दोऊ तेरे घेरें।
दे चरनन प्रीत।। ५ ।।
शब्द संग सुर्त अधर चढ़ावें।
नभ लख गगन शिखर पहुँचावें।
मन माया जीत।। ६ ।।
मुरली धुन सुन सतपुर धाई।
अलख अगम के पार चढ़ाई।
गाऊँ राधास्वामी गीत।। ७ ।।

।। शब्द २६ ।।

गुरु प्यारे का दरस निहारत।
मेरा मन हुआ दीन।।टेक।।
देख देख गुरु भक्ती रीती।
प्रेमी जन की दृढ़ परतीती।
हुई चरनन लीन।। १ ।।
मेहर हुई सतसँग में आई।
बचन सुनत हिये प्रीत अब छाई।
हुई निपट अधीन।। २ ।।
भेद दिया गुरु राधास्वामी देशा।
उमँग सहित लिया शब्द उपदेशा।
मन धार यक़ीन।। ३ ।।

सुरत लगाय सुनूँ धुन काना ।
गुरु स्वरूप का धारूँ ध्याना ।
हुए कलमल छीन ।। ४ ।।
सहज सहज सुर्त घट में चढ़ती ।
गुरु बिश्वास चित्त में धरती ।
रही दया घट चीन ।। ५ ।।
प्रेम प्रीत नइ हिये में जागी ।
उमँग उमँग सुर्त सतसँग लागी ।
तज चाह मलीन ।। ६ ।।
राधास्वामी मेहर से लीन्ह उबारी ।
काल जाल से सुरत निकारी ।
मेरा कारज कीन ।। ७ ।।

## बचन १९

## प्रेम प्रकाश भाग ४

।। शब्द १ ।।

सतगुरु प्यारे ने दिखाई ।
घट उजियारी हो ।।टेक ।।
सतसँग करत प्रीत हिये जागी ।
मन और सुरत चरन में लागी ।
हुए सुखियारी हो ।। १ ।।

जिन सतसँग की सार न जानी।
माया संग रहे लिपटानी।
रहे दुखियारी हो।।२ ।।
मेरी सुरत गुरु गगन चढ़ाई।
भर भर पियत अमी जल लाई।
हुई पनिहारी हो।।३ ।।
सतगुरु प्रीत रीत अब जानी।
छोड़ दई अब विघन पिछानी।
मत संसारी हो।।४ ।।
राधास्वामी प्यारे दया कराई।
दीन निरख मेरे हुए सहाई।
किया भौ पारी हो।।५ ।।

।।शब्द २ ।।

सतगुरु प्यारे ने सुनाई।
घट झनकारी हो।।टेक।।
दीन अधीन पड़ी गुरु चरना।
हुए परसन्न दई निज सरना।
करी दया भारी हो।।१ ।।
भेद सुना दिया शब्द उपदेशा।
निज घर का दिया अजब सँदेशा।
अगम अपारी हो।।२ ।।

मगन होय करती घट करनी।
सुरत निरत दोउ धुन में धरनी।
अधर सिधारी हो।। ३ ।।
घंटा शंख और गरज सुनाई।
साऱँग बजी और मुरली सुहाई।
हुइ बीन अधारी हो।। ४ ।।
राधास्वामी चरन सुरत हुइ लीनी।
प्रेम रंग की बरषा कीनी।
भींज रही सारी हो।। ५ ।।

।। शब्द ३ ।।

सतगुरु प्यारे ने जनाया।
घट भेद अपारा हो।।टेक।।
जग में भरमत बहु जुग बीते।
माया संग रहे कर रीते।
काहू न दीन्ह सहारा हो।। १ ।।
अब के सतगुरु मिले भाग से।
शब्द सीख उन दई मेहर से।
किया जीव उपकारा हो।। २ ।।
सुन सुन धुन घट में अब रीझूँ।
प्रेम रंग तन मन में भीजूँ।
हुआ आज उबारा हो।। ३ ।।

करम भरम का मिटा पसारा।
त्रिय तापन से हुआ छुटकारा।
हुए दूर बिकारा हो।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से अधर चढ़ाया।
भौ सागर के पार कराया।
मिला प्रीतम प्यारा हो।। ५ ।।

।। शब्द ४ ।।

सतगुरु प्यारे ने लखाया।
पिया देश नियारा हो।।टेक।।
देश पिया का ऊँच से ऊँचा।
संत बिना कोई वहाँ न पहुँचा।
माया ब्रह्म के पारा हो।। १ ।।
जगत जीव करमन में अटके।
बाहरमुख पूजा में भटके।
रहे भौ वारा हो।। २ ।।
मुझ को सतगुरु मिले दया कर।
घट का भेद दिया किरपा कर।
लिया आप सुधारा हो।। ३ ।।
सुन सुन धुन सुर्त चढ़त अधर में।
त्रिकुटी होय गइ सुन्न नगर में।
लखा चन्द्र उजारा हो।। ४ ।।

मुरली सुन धुन बीन जगाई।
अलख अगम के पार चढ़ाई।
मिला राधास्वामी चरन अधारा हो।। ५ ।।

।। शब्द ५ ।।

सतगुरु प्यारे ने मिलाया।
प्रीतम प्यारा हो।।टेक।।
बहु दिन जग में खोजत बीते।
पंडित भेष लखे मैं रीते।
कोइ जाने न वह घर न्यारा हो।। १ ।।
मेहर हुई धुर की गुरु मिलिया।
उन सँग मन और सुरत सम्हलिया।
भेद मिला धुन सारा हो।। २ ।।
उमँग सहित घट करी कमाई।
धुन सँग मन और सुरत लगाई।
लखा अचरज उजियारा हो।। ३ ।।
चढ़ चढ़ सुरत गई दस द्वारे।
सतपुर सतगुरु दरस निहारे।
गई अगम के पारा हो।। ४ ।।
मेहर हुई पहुँची धुर धामा।
राधास्वामी चरन मिला विश्रामा।
संत का निज दरबारा हो।। ५ ।।

।। शब्द ६ ।।

सतगुरु प्यारे ने पिलाया।
प्रेम पियाला हो।।टेक।।
प्रीत नवीन हिये में जागी।
जगत मोह तज चरनन लागी।
गुरु लीन्ह सम्हाला हो।। १ ।।
प्रीत प्रतित मेरे हिये धर दीन्ही।
मेहर दया अन्तर में चीन्ही।
गुरु कीन्ह निहाला हो।। २ ।।
उमँग उमँग अब घट में चाली।
सुन सुन धुन सुर्त हुइ मतवाली।
लखा गुरु रूप विशाला हो।। ३ ।।
सुन्न शिखर होय गई सतपुर में।
अटल भक्ति पाय हुई मगन मैं।
दइ सतपुरुष दयाला हो।। ४ ।।
राधास्वामी चरनन आरत धारी।
मेहर दया उन कीन्ही भारी।
दिया निज धाम निराला हो।। ५ ।।

।। शब्द ७ ।।

सतगुरु प्यारे ने जगाया।
सोता मनुआँ हो।।टेक।।

बहु जुग बीते भूल भरम में।
अटक रही नित करम धरम में।
सहत रही मैं तपनुआँ हो।।१ ।।
गुरु दयाल मोहिं खैंच बुलाई।
सतसंगत में लीन्ह लगाई।
भेद दिया घट धुनुआँ हो।।२ ।।
सेवा कर गुरु लीन्ह रिझाई।
मेहर दया उन छिन छिन पाई।
वार रही मन तनुआँ हो।।३ ।।
घट में निस दिन करत कमाई।
धुन डोरी गह सुरत चढ़ाई।
दिन दिन बढ़त लगनुआँ हो।।४ ।।
राधास्वामी मेहर से सतपुर आई।
काल करम बल सबहि नसाई।
गये अहंकार मदनुआँ हो।।५ ।।

।। शब्द ८ ।।

सतगुरु प्यारे ने दया कर।
मोहिं लीन्ह उबारी हो।।टेक।।
जन्म जन्म भोगन में भूली।
ऊँच नीच माया सँग झूली।
रहि दुखियारी हो।।१ ।।

इस औसर गुरु सतसंग पाया।
मेहर हुई मन चरन समाया।
बचन गुरू उर धारी हो।। २ ।।
जग का रंग देख सब मैला।
प्रेमी जन सँग कीन्हा मेला।
भोग लगे सब खारी हो।। ३ ।।
उमँग उमँग सेवा को धाई।
घेर फेर मन शब्द लगाई।
हुई गुरु प्यारी हो।। ४ ।।
अधर चढ़त गइ द्वारे दस में।
भीज रही सुर्त अमृत रस में।
दूर हुए दुख सारी हो।। ५ ।।
सोहं मुरली धुन सुन पाई।
बीन सुनी सतपुर में जाई।
लखी गुरु लीला भारी हो।। ६ ।।
अलख अगम गइ सुरत प्रबीनी।
राधास्वामी चरन हुई लौलीनी।
हुइ सब से अब न्यारी हो।। ७ ।।

।। शब्द ९ ।।

सतगुरु प्यारे ने मेहर से।
मेरा काज सँवारी हो।।टेक।।

भरमत रही जक्त में सारी।
भोगन सँग सब पूँजी हारी।
दुख पाये मैं भारी हो।। १ ।।
जग का हाल देख बहु डरती।
जहँ तहँ खोज जतन का करती।
कोई न जनाया घर पारी हो।। २ ।।
हुई निरास सोच हुआ भारी।
तब गुरु प्यारे दया बिचारी।
आन मिले कर प्यारी हो।। ३ ।।
घट का भेद सार समझाई।
घर चलने की जुगत लखाई।
मेहर करी कुछ न्यारी हो।। ४ ।।
प्रेम प्रीत गुरु चरनन लागी।
जगत मोह तज सूरत जागी।
धुन सँग लागी तारी हो।। ५ ।।
उमँग उमँग सुर्त चालत घट में।
धुन घंटा सुन रही तिल पट में।
लखी जोत उजियारी हो।। ६ ।।
गुरु सतगुरू का दरशन कीना।
राधास्वामी चरन सरन हुइ लीना।
निरभय हुइ सुर्त प्यारी हो।। ७ ।।

।। शब्द १० ।।

सतगुरु प्यारे ने खिलाया।
निज परशाद निवाला हो।।टेक।।
ले परशाद प्रीत हुइ भारी।
सतगुरु ने मोहिं आप सँवारी।
खोल दिया घट ताला हो।। १ ।।
करम भरम सब जड़ से तोड़ा।
जल पषान पूजन अब छोड़ा।
छोड़ा ईंट दिवाला हो।। २ ।।
सतगुरु ने मोहिं भेद जनाई।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ाई।
झाँका गगन शिवाला हो।। ३ ।।
गुरु दयाल मेरे हुए सहाई।
मन माया की पेश न जाई।
थाका काल कराला हो।। ४ ।।
राधास्वामी धाम गई मैं सज के।
राधास्वामी चरन पकड़ लिये धज से।
उन कीन्हा मोहिं निहाला हो।। ५ ।।

।। शब्द ११ ।।

सतगुरु प्यारे ने दृढ़ाया।
निज नाम पियारा हो।।टेक।।

वह निज नाम है राधास्वामी नामा।
ऊँच से ऊँच है तिस का धामा।
कुल रचना का अधारा हो।।१।।
जहँ नहिं पारब्रह्म और माया।
काल करम नहिं और नहिं काया।
वह पद सब से न्यारा हो।।२।।
जहँ धुन नाम रसीली बोले।
सुन सुन सुर्त आनँद में फूले।
लख पद अपर अपारा हो।।३।।
जहँ हंसन का सदा बिलासा।
पुरुष दरस बिन और न आसा।
तज दिये भोग असारा हो।।४।।
मैं अति दीन पड़ी गुरु चरना।
सब बल तज गही राधास्वामी सरना।
नहिं कोइ और सहारा हो।।५।।

।। शब्द १२ ।।

सतगुरु प्यारे ने जिताई।
काल से बाज़ी हो।।टेक।।
भोगन सँग मैं बहु दुख पाये।
जगत जाल में रही भरमाये।
चेता न यह मन पाजी हो।।१।।

जब से सतगुरु सरना लीन्ही।
घट का भेद मेहर कर दीन्ही।
मधुर मधुर धुन गाजी हो।। २ ।।
सुरत चढ़ाय गगन पहुँचाई।
काल बिघन सब दूर कराई।
माया भी रही लाजी हो।। ३ ।।
जगत जीव सब माया चेरे।
जन्में मरें सहें दुक्ख घनेरे।
पंडित भेख और क़ाज़ी हो।। ४ ।।
मेहर से गुरु सेवा बन आई।
सुन सुन धुन सुर्त अधर चढ़ाई।
राधास्वामी हो गये राज़ी हो।। ५ ।।

।। शब्द १३ ।।

सतगुरु प्यारे ने लखाया।
निज रूप अपारा हो।।टेक।।
हद्द हद्द सब मत में गावें।
बेहद रूप संत दरसावें।
माया घेर के पारा हो।। १ ।।
रूप अरूप का भेद सुनावें।
मायक रूप स्थिर न रहावें।
वह निज रूप नियारा हो।। २ ।।

संतन निरमल देश जनाया।
जहँ नहिं काल करम और माया।
वह पद सार का सारा हो।। ३ ।।
सत्तपुरुष जहँ सदा बिराजें।
हंस मंडली अद्‌भुत राजें।
करते प्रेम पियारा हो।। ४ ।।
जिन जिन यहाँ गुरु भक्ती धारी।
सो पहुँचे सतगुरु दरबारी।
राधास्वामी चरन निहारा हो।। ५ ।।
संतन का भगवंत अबिनाशी।
भेद भक्ति जहँ वहँ परकाशी।
सत्तपुरुष दरबारा हो।। ६ ।।
राधास्वामी धाम अनाम अपारा।
जहँ नहिं रंग रूप आकारा।
अभेद भक्ति जहँ धारा हो।। ७ ।।
या बिधि जो कोई कार कमावे।
पिरथम गुरु भक्ती चित लावे।
जग से हो जाय न्यारा हो।। ८ ।।
अंतर सतगुरु भक्ती साधे।
सुरत शब्द मारग आराधे।
सोई जाय भौ पारा हो।। ९।।

सत्तपुरुष का दरशन पावे।
वहाँ से राधास्वामी चरन समावे।
येही सत्त उधारा हो।।१० ।।
और मते सब काल पसारे।
माया के कोइ जाय न पारे।
करम भरम पच हारा हो।।११ ।।
जो चाहो सच्चा उद्धारा।
राधास्वामी मत धारो यह सारा।
बारम्बार पुकारा हो।।१२ ।।

।। शब्द १४ ।।

सतगुरु प्यारे ने लगाई।
बिरह करारी हो।।टेक।।
सुन सुन महिमा प्रीतम प्यारे।
और शोभा निज धाम अपारे।
चाह उठी हिये भारी हो।।१ ।।
सतगुरु चरन हुइ दीन अधीनी।
उमँग उमँग उन सेवा कीनी।
मेहर दृष्टि मो पै डारी हो।।२ ।।
निज घर का मोहिं भेद सुनाई।
राह चलन की जुगत बताई।
सुन धुन पिंड से न्यारी हो।।३ ।।

प्रेम सहित सुर्त धुन में लागी।
शब्द शब्द सुन हुई अनुरागी।
तन मन गुरु पै वारी हो।। ४ ।।
तीन लोक के हो गइ पारा।
द्याल देश संतन दरबारा।
राधास्वामी चरन निहारी हो।। ५ ।।

।। शब्द १५ ।।

सतगुरु प्यारे ने जगाया।
अचरज भागा हो।।टेक।।
बहु दिन सोई मोह नींद में।
मन सँग भरमी जुगन जुगन में।
धर भोगन में रागा हो।। १ ।।
सतगुरु मिले मोहिं बचन सुनाये।
सतसंगत में लीन्ह लगाये।
बढ़त चरन अनुरागा हो।। २ ।।
ध्यान धरत तन मन हुआ निश्चल।
भजन करत मेरा चित हुआ निरमल।
जगत मोह अब त्यागा हो।। ३ ।।
गुरु चरनन में प्रीत बढ़ावत।
संशय तज परतीत दृढ़ावत।
मनुआँ धुन रस पागा हो।। ४ ।।

मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे।
तीन लोक के किया मोहिं पारे।
सहज प्रेम रँग लागा हो।। ५ ।।

।। शब्द १६ ।।

सतगुरु प्यारे ने सिखाई।
भक्ती रीती हो।।टेक।।
सब जिव भूल रहे जग माहीं।
बिन गुरु को घर भेद सुनाई।
को लावे परतीती हो।। १ ।।
जब गुरु मिलें भाग से पूरे।
करम भरम सब होवें दूरे।
चरनन में दें प्रीती हो।। २ ।।
सतसँग कर नित प्रीत बढ़ाना।
सेवा कर नइ उमँग जगाना।
छूटे जग बिपरीती हो।। ३ ।।
शब्द भेद दे सुरत चढ़ावें।
भौ सागर के पार पहुँचावें।
काल करम दल जीती हो।। ४ ।।
राधास्वामी चरन मिला विश्रामा।
दूर हुए सब अर्थ और कामा।
हुइ सुफल उमरिया बीती हो।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द १७ ।।

सतगुरु प्यारे ने छुड़ाई।
आवागवन की डोरी हो।।टेक।।
सतसँग में मोहिं सार बुझाया।
निज घर का सब भेद सुनाया।
करम भरम किये दूरी हो।। १ ।।
गुरु स्वरूप का धारा ध्याना।
धुन सँग किया ब्रह्मण्ड पयाना।
श्याम कंज दल फोड़ी हो।। २ ।।
काल करम बहु अटक लगाये।
माया भी नये चरित्र दिखाये।
गुरु बल उन मुख मोड़ी हो।। ३ ।।
त्रिकुटी जाय सुनी गुरु बानी।
सतपुर सतगुरु रूप पिछानी।
अलख अगम सुर्त जोड़ी हो।। ४ ।।
राधास्वामी निज किरपा धारी।
सुरत हुई उन चरनन प्यारी।
कुल जग से अब तोड़ी हो।। ५ ।।

।। शब्द १८ ।।

सतगुरु प्यारे ने मिटाया।
काल कलेशा हो।।टेक।।

दया करी मोहिं निकट बुलाया।
राधास्वामी चरन प्रतीत दृढ़ाया।
भेद दिया निज देशा हो।।१ ।।
माया काल की हद्द लखाई।
करम भरम सब दूर कराई।
दिया शब्द उपदेशा हो।।२ ।।
मेहर का बल दे सुरत चढ़ाई।
घट में बिमल बिलास दिखाई।
हट गये राग और द्वेषा हो।।३ ।।
जनम मरन की त्रास नसाई।
तीन लोक के पार पहुँचाई।
जहाँ नहिं ब्रह्म महेशा हो।।४ ।।
सत्त अलख और अगम निहारे।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपारे।
पूरन धनी धनेशा हो।।५ ।।

।। शब्द १९ ।।

सतगुरु प्यारे ने सुनाई।
अचरज बानी हो।।टेक।।
भरमत रही जगत में बहु दिन।
देवी देव करत रही पूजन।
पाइ न घर की निशानी हो।।१ ।।

बेद शास्त्र और स्मृत पुराना।
तौरेत अंजील और क़ुराना।
गुरु बिन भरम कहानी हो।। २ ।।
सतगुरु मिले मेहर से आई।
भेद सुनाय जुगत बतलाई।
शब्द सुनूँ अस्मानी हो।। ३ ।।
घट में अद्भुत लीला दरसे।
मन और सुरत चरन जाय परसे।
गुरु स्वरूप पहिचानी हो।। ४ ।।
गुरु की दया ले चाली आगे।
पहुँची जहाँ बीन धुन जागे।
सतगुरु रूप दिखानी हो।। ५ ।।
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे।
उन चरनन में रहूँ सदा रे।
आदि अनादि ठिकानी हो।। ६ ।।
राधास्वामी धाम की महिमा भारी।
सब रचना तिस के आधारी।
सुरत शब्द की खानी हो।। ७ ।।

।। शब्द २० ।।

सतगुरु प्यारे ने दिखाई।
गगन अटारी हो।।टेक।।

जग परमारथ संग भुलानी।
तीरथ बर्त रही लिपटानी।
करम चढ़ाये भारी हो।। १ ।।
निज घर का गुरु पता बताई।
पिया मिलन की गैल लखाई।
सुरत शब्द मत धारी हो।। २ ।।
सतसँग करत भरम सब भागे।
कर अभ्यास सुरत मन जागे।
शब्द सुना घनकारी हो।। ३ ।।
गुरु चरनन में बाढ़ी प्रीती।
सुरत शब्द की हुई परतीती।
त्रिकुटी ओर सिधारी हो।। ४ ।।
गुरु स्वरूप गगना में देखा।
काल करम का मिट गया लेखा।
सुरत हुई गुरु प्यारी हो।। ५ ।।
सुन की धुन सुन सुरत चढ़ाई।
मन माया से खूँट छुड़ाई।
हंसन सँग करी यारी हो।। ६ ।।
मानसरोवर किये अशनाना।
सत्तपुरुष का धारा ध्याना।
राधास्वामी काज सुधारी हो।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द २१ ।।

सतगुरु प्यारे ने दिलाया।
शब्द में भावा हो।।टेक।।
शब्द ने पिरथम करी पुकारा।
शब्द ने चहुँ दिस किया उजारा।
वही सब रचन रचावा हो।। १ ।।
आदि पुकार सुने जो कोई।
देश संत का पावे सोई।
शब्दहि देत बुलावा हो।। २ ।।
शब्दहि फैल रहा चहुँ देशा।
शब्द शब्द सुन करो प्रवेशा।
शब्दहि पार लगावा हो।। ३ ।।
शब्द भेद बड़भागी पावें।
शब्द संग वे सुरत चढ़ावें।।
शब्दहि शब्द मिलावा हो।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से दिया घट भेदा।
सुन सुन शब्द मिटे कर्म खेदा।
नित गुरु महिमा गावा हो।। ५ ।।

।। शब्द २२ ।।

सतगुरु प्यारे ने गिराया।
काल कराला हो।।टेक।।

सुन सुन महिमा सतसँग केरी।
दरशन कर हुई चरनन चेरी।
गुरु लीन सम्हाला हो।। १ ।।
नाद की महिमा गुरु मोहिं सुनाई।
जस उतपत्ति हुई सब गाई।
लखा गुरु देश निराला हो।। २ ।।
ता के नीचे काल पसारा।
माया ब्रह्म और तिरगुन धारा।
सब रचना दुख साला हो।। ३ ।।
गुरु ने निकसन जुगत बताई।
शब्द भेद दे सुरत लगाई।
लखा जोत जमाला हो।। ४ ।।
त्रिकुटी होय गई दस द्वारे।
भँवरगुफा सतलोक निहारे।
मिले पुरुष दयाला हो।। ५ ।।
काल बिघन गुरु दूर कराये।
मन माया भी रहे मुरझाये।
गुरु कीन्ह निहाला हो।। ६ ।।
पुरुष दया कर अंग लगाई।
बल अपना दे अधर चढ़ाई।
जहँ राधास्वामी तेज जलाला हो।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द २३ ।।

सतगुरु प्यारे ने नचाया।
मनुआँ नटवा हो।।टेक।।
जुगन जुगन से जग में बहता।
भोग बासना सँग दुख सहता।
झाँका औघट घटवा हो।। १ ।।
जग व्यवहार लगा अब साँचा।
कुल मालिक का भेद न जाँचा।
भूला घर की बटवा हो।। २ ।।
सतगुरु संत मिले किरपा से।
भेद दिया उन मोहिं दया से।
मन हुआ चरनन लटवा हो।। ३ ।।
मन रहा खेल कला ज्यों नट की।
ख़बर लेत सुर्त चढ़ सर तट की।
सुनत रही धुन छटवा हो।। ४ ।।
राधास्वामी दया गई सुर्त सतपुर।
अलख अगम फिर मिले परम गुरु।
काज किया मेरा झटवा हो।। ५ ।।

।। शब्द २४ ।।

सतगुरु प्यारे ने बसाई।
उजड़ी बाड़ी हो।।टेक।।

जग सँग भूल गई सतनामा।
मन में बसत क्रोध और कामा।
डूब रहि सारी हो।। १ ।।
गुरु दयाल मोहिं जब से भेंटे।
काल करम माया रही ऐंठे।
भेद मिला सत करतारी हो।। २ ।।
सील छिमा चित माहिं बसानी।
काल करम से खूँट छुड़ानी।
सुरत शब्द मत धारी हो।। ३ ।।
मन और सुरत मगन हुए सुन धुन।
पाप और पुण्य मोक्ष हुए छिन छिन।
प्रेम धार घट जारी हो।। ४ ।।
राधास्वामी चरन बसे अब हिय में।
प्रेम बढ़त दिन दिन अब जिय में।
गुरु भौ पार उतारी हो।। ५ ।।

।। शब्द २५ ।।

सतगुरु प्यारे ने सिंचाई।
प्रेम कियारी हो।।टेक।।
जबसे मैं सतगुरु दरशन पाये।
चितवन में दइ प्रीत जगाये।
सुरत हुई गुरु प्यारी हो।। १ ।।

दिन दिन प्रीत बढ़त हिये अंतर।
रटत रहूँ निस दिन गुरु मंतर।
हुई गुरु नाम अधारी हो।।२।।
चित्त रहे गुरु चरन समाना।
गुरु स्वरूप हिये माहिं बसाना।
निरख रही उजियारी हो।।३।।
सतगुरु संग लगा मोहिं प्यारा।
करम भरम हुए दूर असारा।
सुन अनहद झनकारी हो।।४।।
राधास्वामी चरन प्रेम बढ़ा भारी।
तन मन धन सब उन पर वारी।
हुई दरशन मतवारी हो।।५।।

।। शब्द २६ ।।

सतगुरु प्यारे ने खिलाई।
घट फुलवारी हो।।टेक।।
शब्द भेद ले लगी सुर्त घट में।
धुन के फूल खिले तिल पट में।
झाँकी कँवल कियारी हो।।१।।
धुन घंटा और संख सुनाई।
सूरज चाँद अनेक दिखाई।
चढ़ गई गगन अटारी हो।।२।।

सुन्न मँडल का ताला खोला।
शब्द सेत धुन सारँग बोला।
जहँ अमी सरोवर भारी हो।। ३ ।।
आगे चल गइ भँवर स्थाना।
सेत सूर जहाँ नूर दिखाना।
मुरली सँग लगी तारी हो।। ४ ।।
आगे लखा अचरज उजियारा।
सत्त अलख और अगम निहारा।
राधास्वामी चरन बलहारी हो।। ५ ।।

।। शब्द २७ ।।

सतगुरु प्यारे ने सँवारी।
मेरी सुरत निमानी हो।।टेक।।
तज अहंकार गई गुरु पासा।
बचन सुनत मन हुआ हुलासा।
प्रेम प्रीत की खानी हो।। १ ।।
कर सतसंग हुआ मन निरमल।
बढ़ा अनुराग चित्त हुआ निश्चल।
रोम रोम हरखानी हो।। २ ।।
गुरु स्वरूप का धारा ध्याना।
सुरत लगाय सुनी धुन ताना।
यही गुरु ज्ञान बखानी हो।। ३ ।।

चढ़ चढ़ सुरत गई दस द्वारे।
काल बिघन सब दूर निकारे।
गुरु की मेहर पिछानी हो।। ४ ।।
राधास्वामी लिया मोहिं अंग लगाई।
मेहर से दिया सब काज बनाई।
पहुँची अधर ठिकानी हो।। ५ ।।

।। शब्द २८ ।।

सतगुरु प्यारे ने सुधारा।
मनुआँ अनाड़ी हो।।टेक।।
दया करी सतसँग में खींचा।
बचन सुनाय अधिक मन भींचा।
भोग तरंग निकारी हो।। १ ।।
सेवा करत बढ़ा अनुरागा।
सोता मन सुन सुन धुन जागा।
लखी घट जोत उजारी हो।। २ ।।
गुरु की दया ले गई सुर्त आगे।
गगन ओर जहँ ओअं जागे।
हुई गुरु शब्द अधारी हो।। ३ ।।
वहाँ से चल पहुँची सतपुर में।
सतगुरु प्यारे मिले अधर में।
गति मति अगम अपारी हो।। ४ ।।

गुरु प्यारे मोहिं आप सुधारी।
अलख अगम के पार किया री।
राधास्वामी चरन निहारी हो।। ५ ।।

।। शब्द २९ ।।

सतगुरु प्यारे ने खिलाई।
अब के नइ होरी हो।।टेक।।
काम क्रोध को मार हटावा।
सील छिमा हिये माहिं बसावा।
लोभ मोह सिर फोड़ी हो।। १ ।।
मान ईरषा भी दइ त्यागी।
मन हुआ जग से सहज बैरागी।
गुरु चरनन सुर्त जोड़ी हो।। २ ।।
प्रेम रंग घट माहिं भरावा।
पच इंद्री पिचकार बनावा।
गुरु पर भर भर छोड़ी हो।। ३ ।।
दिन दिन प्रीत बढ़त गुरु चरना।
उमँग उमँग हिये धारी सरना।
जग से अब सुर्त मोड़ी हो।। ४ ।।
राधास्वामी दृष्टि मेहर की कीन्ही।
प्रेम दात मोहिं निज कर दीन्ही।
कुल जग नाता तोड़ी हो।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ३० ।।

सतगुरु प्यारे ने मचाई।
जग बिच होरी हो।।टेक।।
हेला मार कहा जीवन को।
सतसँग कर रोको तन मन को।
निज घर सुरत बहोरी हो।। १ ।।
प्रेम प्रीत का रँग बरसाया।
शब्द गुरू सँग फाग खिलाया।
गुन गुलाल घट घोरी हो।। २ ।।
पाँच दूत को मार पछाड़ा।
तीन गुनों का कूड़ा टारा।
काल करम बल तोड़ी हो।। ३ ।।
सुन में जाय फिर फाग रचाया।
हंसन संग अबीर उड़ाया।
धूम मची नहिं थोड़ी हो।। ४ ।।
सतपुर जाय हुई सुर्त निर्मल।
अलख अगम को निरखा चढ़ चल।
राधास्वामी चरनन जोड़ी हो।। ५ ।।

।। शब्द ३१ ।।

सतगुरु प्यारे ने निभाई।
खेप हमारी हो।।टेक।।

नइया मोर बहत मँझधारा।
गुरु बिन कौन लगावे पारा।
वही जीव हितकारी हो।। १ ।।
सतगुरु दीन दयाल हमारे।
मेहर करी मोहिं लीन सम्हारे।
भौ सागर पार उतारी हो।। २ ।।
बचन सुना दई अगम निशानी।
सुरत शब्द मारग दरसानी।
सुर्त गगना ओर सिधारी हो।। ३ ।।
लख लख जोत सूर और चंदा।
तोड़ अंड फोड़ा ब्रह्मंडा।
भँवर गुफा धुन धारी हो।। ४ ।।
मेहर हुई लखिया सत नूरा।
अलख अगम की हो गई धूरा।
राधास्वामी काज सँवारी हो।। ५ ।।

।। शब्द ३२ ।।

सतगुरु प्यारे ने लजाये।
माया ब्रह्म खिलाड़ी हो।।टेक।।
दीन होय जो सरनी आये।
तिन जीवन को लिया अपनाये।
भेद दिया उन भारी हो।। १ ।।

कर अभ्यास बढ़ी हिये प्रीती।
सुरत शब्द की हुई परतीती।
सहज गए भौ पारी हो।। २ ।।
जिन सतगुरु से किया अहंकारा।
उनका हुआ नहिं जीव गुज़ारा।
रहे माया दर के भिखारी हो।। ३ ।।
याते चेत करो सब कोई।
बिन गुरु सरन उबार न होई।
क्यों नर देही हारी हो।। ४ ।।
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला।
सब जीवन की करें प्रतिपाला।
जिन गुरु भक्ती धारी हो।। ५ ।।
करम जाल सब देहिं कटाई।
पाप पुण्य सब सहज नसाई।
माया बाज़ी हारी हो।। ६ ।।
राधास्वामी निज घर भेद लखावें।
सुरत चढ़ाय अधर पहुँचावें।
काल रहा झक मारी हो।। ७ ।।

।। शब्द ३३ ।।

सतगुरु प्यारे ने बसाई।
हिये भक्ति करारी हो।।टेक।।

सुन सुन बचन नसे सब भरमा।
दूर हुए सब कंटक कर्मा।
शब्द संग लगी तारी हो।।१ ।।
अभ्यास करत हिये बढ़त अनंदा।
द्रोह मोह का काटा फंदा।
घूम चली दस द्वारी हो।।२ ।।
नभ में निरखा जोत सरूपा।
त्रिकुटी जाय लखा गुरु रूपा।
सुन में चंद्र उजारी हो।।३ ।।
भँवरगुफा सोहं धुन पाई।
मधुर बाँसरी बजे सुहाई।
सुनी बीना झनकारी हो।।४ ।।
अलख अगम करी मेहर नियारी।
राधास्वामी चरन प्रीत बढ़ी भारी।
अचरज दरस निहारी हो।।५ ।।

।। शब्द ३४ ।।

सतगुरु प्यारे ने निकारे।
मन के बिकारा हो।।टेक।।
सतसँग में गुरु लीन लगाई।
बचन सुना मेरी समझ बढ़ाई।
मेहर से दीन सहारा हो।।१ ।।

अपने चरन की प्रीत बसाई।
सुरत शब्द की राह बताई।
भेद दिया घट सारा हो।। २ ।।
कर अभ्यास मलिनता नाशी।
घट में शब्द किया परकाशी।
सुरत चढ़ी नौ पारा हो।। ३ ।।
पाँच रंग निरखे तत सारा।
चमक बीजली चंद्र निहारा।
फोड़ा तिल का द्वारा हो।। ४ ।।
गुरु पद लख निरखा सत सूरा।
अलख अगम का पाया नूरा।
राधास्वामी धाम निहारा हो।। ५ ।।

।। शब्द ३५ ।।

सतगुरु प्यारे ने हटाये।
बिघन अनेका हो।।टेक।।
परमारथ की सुध जब लीन्ही।
उमँग सहित गुरु सेवा कीन्ही।
धर मन में गुरु टेका हो।। १ ।।
जग जिव देख ऐंठ रहे मन में।
निंदा कर कर फूलें तन में।
जानें न अंत का लेखा हो।। २ ।।

माया बिघन अनेक हटाये।
संशै भरम सब दूर कराये।
काटी करम की रेखा हो।। ३ ।।
सतगुरु दया करूँ क्या वर्णन।
भेद दिया मोहिं राधास्वामी चरनन।
धुर पद अगम अलेखा हो।। ४ ।।
वा घर भेद कोई नहिं जाने।
जोगी ज्ञानी भरम भुलाने।
पंडित शेख़ और भेषा हो।। ५ ।।
मेहर से गुरु मोहिं जुगत बताई।
धुन में मन और सुरत लगाई।
शब्द तेज घट देखा हो।। ६ ।।
राधास्वामी नाम हिये बिच धारा।
रूप अनूप का ध्यान सम्हारा।
अचरज दरशन पेखा हो।। ७ ।।

।। शब्द ३६ ।।

सतगुरु प्यारे ने मेहर से।
दिया भक्ती दाना हो।।टेक।।
सुरत अजान जगत में बहती।
करम भरम सँग दुख सुख सहती।
मिला न ठौर ठिकाना हो।। १ ।।

तीरथ बर्त नेम आचारा।
बाचक ज्ञान बिबेक सम्हारा।।
निज घर भेद न जाना हो।। २ ।।
संत दयाल मिले मोहिं जबही।
घर का भेद दिया उन तबही।
भजन भक्ति और ध्याना हो।। ३ ।।
बचन सुना परतीत बढ़ाई।
घट परचे दे प्रीत जगाई।
हिये में उमँग समाना हो।। ४ ।।
मन और सुरत लगे घट धुन में।
गुरु मारग रहे चलत अपन में।
राधास्वामी धाम निशाना हो।। ५ ।।

।। शब्द ३७ ।।

सतगुरु प्यारे ने चुकाया।
काल का क़रज़ा हो।।टेक।।
मेहर से मोहिं सतसँग में खींचा।
भक्ती पौद लगा गुरु सींचा।
काटे बिघन और हरजा हो।। १ ।।
दया गुरु परख बढ़त परतीती।
सेव करत जागत नई प्रीती।
बढ़त मेरा दिन दिन दरजा हो।। २ ।।

शब्द का मारग दीन्ह लखाई।
सुर्त मेरी धुन सँग दीन्ह मिलाई।
आज घट गगना गरजा हो।। ३ ।।
भरम गुरु मेट दिये मेरे सारे।
करम भी काट दिये अति भारे।
काल भी डर से लरज़ा हो।। ४ ।।
राधास्वामी कीन्ह जगत उपकारा।
चरन सरन दे जीव उबारा।
तार दई सब परजा हो।। ५ ।।

।। शब्द ३८ ।।

सतगुरु प्यारे ने चिताये।
जीव घनेरे हो।।टेक।।
सब जिव भरम रहे जग माहीं।
भोगन संग अधिक लिपटाई।
पड़े अँधेरे हो।। १ ।।
सतगुरु हेला मार सुनावें।
घट में घर की राह लखावें।
चेतो याहि उजेरे हो।। २ ।।
काल शिकारी मग में ठाड़ा।
बिघन अनेक लगावत भारा।
गुरु संग भाग सबेरे हो।। ३ ।।

गुरु उपदेश धार लो मन में।
शब्द संग चढ़ चलो गगन में।
मत कर देर अबेरे हो।। ४ ।।
राधास्वामी दया सेव बन आई।
सुन सुन धुन सुर्त अधर चढ़ाई।
पाय गई पद नेड़े हो।। ५ ।।

।। शब्द ३९ ।।

सतगुरु प्यारे ने छुड़ाया।
जग व्यवहार असारा हो।।टेक।।
मेहर दया गुरु कस कहुँ गाई।
सतसँग में मोहिं खैंच लगाई।
भेद दिया घट सारा हो।। १ ।।
ध्यान धरत गुरु छबि दरसानी।
शब्द सुनत मन हुआ अकामी।
सुरत चली गुरु लारा हो।। २ ।।
जोत सरूप लखा नभपुर में।
गुरु दरशन पाया त्रिकुटी में।
भौजल पार उतारा हो।। ३ ।।
सुन में जाय सरोवर न्हाई।
हंसन संग मिलाप बढ़ाई।
निरखा चंद्र उजारा हो।। ४ ।।

मुरली बीन सुनी धुन दोई।
अलख अगम पद परसे सोई।
राधास्वामी धाम निहारा हो।। ५ ।।

।। शब्द ४० ।।

सतगुरु प्यारे ने बजाई।
प्रेम मुरलिया हो।।टेक।।
सुन सुन धुन मोहित हुई मन में।
प्रेम बढ़ा मेरे रगन रगन में।
जागी बिरह बिकलिया हो।। १ ।।
सतसँग महिमा कस कहुँ गाई।
शब्द जुगत कस करूँ बड़ाई।
हरे बिकार सकलिया हो।। २ ।।
विरह अगिन हिये भड़कन लागी।
बिन पिया दरस चित्त बैरागी।
काम न देत अक़लिया हो।। ३ ।।
सतगुरु प्यारे दया उमगाई।
दरशन दे मेरी प्यास बुझाई।
बरसत प्रेम बदलिया हो।। ४ ।।
जग जिव गुरु महिमा नहिं जानें।
मन मत अपनी फिर फिर ठानें।
अटके जाय नक़लिया हो।। ५ ।।

प्रेम भक्ति की सार न जानी।
भोगन माहिं रहे अटकानी।
फिर फिर काल निगलिया हो।। ६ ।।
मो को सतगुरु लिया अपनाई।
चरन अमीरस नित्त पिलाई।
दिन दिन होत मँगलिया हो।। ७ ।।
सतगुरु दया गई भौ पारा।
सुन्न शब्द की सुनी पुकारा।
झाँका सेत कँवलिया हो।। ८ ।।
वहाँ से सुरत अधर को धाई।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई।
पहुँची सत धाम अमलिया हो।। ९ ।।
राधास्वामी दया बना मम काजा।
अलख अगम का लखा समाजा।
अचल में जाय मचलिया हो।। १० ।।

।। शब्द ४१ ।।

सतगुरु प्यारे ने सुनाई।
जुगत निराली हो।।टेक।।
सुन गुरु बचन हुई परतीती।
गुरु ने सिखाई भक्ती रीती।
लीन्हा मोहिं सम्हाली हो।। १ ।।

सतसंग करत भाव बढ़ा दिन दिन।
प्रीत लगी अब राधास्वामी चरनन।
खुल गया भेद दयाली हो।। २ ।।
उमँग उठी सेवा की भारी।
तन मन धन गुरु चरनन वारी।
हो गई आज निहाली हो।। ३ ।।
शब्द भेद गुरु दीन्ह जनाई।
धुन सँग सूरत उमँग लगाई।
निरखा रूप जमाली हो।। ४ ।।
मन इच्छा गुरु दीन्ह सुलाई।
काल करम बल सबहि नसाई।
बिघन बिकार निकाली हो।। ५ ।।
मेहर से दिया गुरु खेत जिताई।
सरन धार गुरु चरन समाई।
मिट गई ख़ाम ख़याली हो।। ६ ।।
सतगुरु सुरत सिंगार कराया।
राधास्वामी प्यार से गोद बिठाया।
नित घट होत दिवाली हो।। ७ ।।
दरशन कर मेरी गति हुई कैसी।
मीन मगन होय जल में जैसी।
दूर हुए दुख साली हो।। ८ ।।

प्यारे राधास्वामी गुन कस कह गावा।
संत रूप धर काज बनावा।
अटल जोत घट बाली हो।। ९ ।।
आओ रे आओ जिव सरनी आओ।
राधास्वामी चरनन प्रेम बढ़ाओ।
छूटे सबहि बेहाली हो।। १० ।।
मेहर करें राधास्वामी गुरु प्यारे।
छिन छिन तुमको लेहिं उबारे।
गति पावो आज मराली हो।। ११ ।।

।। शब्द ४२ ।।

सतगुरु प्यारे ने खुलाया।
घट प्रेम ख़ज़ाना हो।।टेक।।
मेहर दृष्टि मेरे सतगुरु डाली।
सुरत शब्द सुन घट में चाली।
मन हुआ आज निमाना हो।। १ ।।
रूप अनूप देख हिये माहीं।
सुरत निरत दोउ घट घिर आईं।
मन हुआ प्रेम दिवाना हो।। २ ।।
मद और मोह अहँगता त्यागी।
भक्ति नवीन हिये में जागी।
गुरु पै बल बल जाना हो।। ३ ।।

गुरु छबि मोहिं लगी अति प्यारी।
बार बार चरनन पर वारी।
सुध बुध सब बिसराना हो।। ४ ।।
मेहर दया ले चढ़ी गगन में।
गुरु बतियाँ सुन हुई मगन मैं।
काल और करम हिराना हो।। ५ ।।
सुन में जा हुई हंसन प्यारी।
अमी धार जहाँ हर दम जारी।
पी पी अमी अघाना हो।। ६ ।।
भँवरगुफा जाय लागी ताड़ी।
धुन मुरली जहँ बजत करारी।
छूटा आना जाना हो।। ७ ।।
सतपुर सतगुरु दरस दिखानी।
बीन सुनत सुर्त हुई मस्तानी।
अचरज खेल खिलाना हो।। ८ ।।
अलख अगम के पार ठिकाना।
रा धा स्वा मी दरस दिखाना।
चरनन माहिं समाना हो।। ९ ।।

।। शब्द ४३ ।।

सतगुरु प्यारे ने सिंगारी।
सुरत रँगीली हो।।टेक।।

जग में सुरत रही मेरी अटकी।
करम भरम में बहु बिधि भटकी।
गह रही टेक हठीली हो।। १ ।।
बचन सुनाय गढ़त गुरु कीन्ही।
घट का भेद मेहर कर दीन्ही।
धुन शब्द सुनाई रसीली हो।। २ ।।
सुन सुन धुन सुर्त नभ पर धाई।
गगन फोड़ गई सुन में छाई।
हो गई आज छबीली हो।। ३ ।।
बिघन सबहि गुरु दूर कराई।
काल करम दोउ रहे लजाई।
माया भई शरमीली हो।। ४ ।।
सुन्न शिखर पर चढ़ी सुर्त बिरहन।
भँवरगुफा धुन पड़ी अब सरवन।
छोड़ दिया मठ नीली हो।। ५ ।।
सतपुर जाय किया अब बासा।
हंस करें जहाँ नित्त बिलासा।
सुनी धुन बीन सुरीली हो।। ६ ।।
यहँ से सूरत अधर चढ़ाई।
राधास्वामी दरस पाय हरखाई।
हो गई आज सजीली हो।। ७ ।।

।। शब्द ४४ ।।

सतगुरु प्यारे ने पढ़ाई।
घट की पोथी हो।।टेक।।
जगत भाव में रही भुलानी।
बाहरमुख जुगती रही कमानी।
किरत करी सब थोथी हो।। १ ।।
जब से सतगुरु संग लगाई।
सार बचन मोहिं दिये समझाई।
जाग उठी सुर्त सोती हो।। २ ।।
सतसँग करत बिकार घटाती।
घट धुन में नित सुरत लगाती।
दिन दिन कलमल धोती हो।। ३ ।।
गुरु चरनन बढ़ता अनुरागा।
जग भोगन से चित बैरागा।
धुन में सूरत पोती हो।। ४ ।।
दया हुई सुर्त नभ पर चढ़ती।
घंटा और संख धुन सुनती।
निरख रही घट जोती हो।। ५ ।।
बंक नाल धस त्रिकुटी धाई।
काल करम दोउ रहे मुरझाई।
माया सिर धुन रोती हो।। ६ ।।

सत्त पुरुष के चरनन लागी।
राधास्वामी धुन सँग सूरत पागी।
चली प्रेम कियारी बोती हो।। ७ ।।

।। शब्द ४५ ।।

सतगुरु प्यारे ने सुनाई।
प्रेमा बानी हो।।टेक।।
सुन सुन बचन प्रेम भरा मन में।
फूली नाहिं समाऊँ तन में।
हरख हरख हरखानी हो।। १ ।।
मन और सुरत सिमट कर आये।
गुरु मूरत हिये में दरसाये।
हुई चरनन मस्तानी हो।। २ ।।
छिन छिन मन अस उमँग उठाई।
दरशन रस ले रहूँ अघाई।
चरनन पर क़ुरबानी हो।। ३ ।।
बिन दरशन मोहिं चैन न आवे।
सुमिर सुमिर पिया जिया घबरावे।
भावे अन्न न पानी हो।। ४ ।।
विनय सुनो राधास्वामी प्यारे।
चरनन में मोहिं राखो सदा रे।
तुम समरथ पुरुष सुजानी हो।। ५ ।।

# बचन २० प्रेम प्रकाश भाग ५

।। शब्द १ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, प्रीतम दरस
दिखादे, जियरा बहु तड़पे।।टेक।।
काल करम बहु पेच लगाये।
बिन दरशन मैं रहूँ घबराये।
मनुआँ नित तरसे।। १ ।।
जब जब प्रीतम छबि चित लाऊँ।
नैनन से जल धार बहाऊँ।
हियरा बहु धड़के।। २ ।।
प्रीतम पीर सतावत निस दिन।
बिन सतसंग दुखित रहे तन मन।
भाली ज्यों खड़के।। ३ ।।
जो कोई प्रीतम महिमा गावे।
लीला और बिलास सुनावे।
मनुआँ अति हरखे।। ४ ।।
जब राधास्वामी का दरशन पाऊँ।
उमँग उमँग मैं नित गुन गाऊँ।
घट आनँद बरसे।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द २ ।।

अरी हे सुहावन आली, प्रीतम ख़बर
सुना दे,मनुआँ नित भटके।। टेक।।
जब से मैं बिछड़ी स्वामी प्यारे से।
जगत माहिं बँध रहि तन मन से।
विरह घर की खटके।। १ ।।
जब लग गुरु का संग न पावे।
घर की ओर उलट कस जावे।
जगत मोह झटके।। २ ।।
दया होय सतगुरु आय मेलें।
घर का भेद सुना सुर्त पेलें।
घट धुन सँग लटके।। ३ ।।
मिल गुरु से अब लगन बढ़ाऊँ।
ध्यान धरत घट शब्द जगाऊँ।
रही री नाम रट के।। ४ ।।
राधास्वामी धाम ओर सुर्त दौड़ी।
सुन सुन शब्द हुई घट पोढ़ी।
चली गुरु सँग गठ के।। ५ ।।

।। शब्द ३ ।।

अहो हे दयाला सतगुरु,मेरी सुरत
चढ़ा दो, जग में तपन घनेरी।। टेक ।।

सारी बैस जगत सँग बीती।
फल नहिं मिला रही कर रीती।
दिन दिन फँसियाँ अँधेरी।।१।।
सतगुरु मिले भाग मेरा जागा।
संशै भरम सब छिन में भागा।
दृढ़ कर चरन गहे री।।२।।
शब्द भेद दे किया निहाला।
बचन सुना काटा जम जाला।
घट शब्द सुने री।।३।।
सुन सुन धुन मेरा मन हुआ लीना।
घट में दरशन सतगुरु चीना।
आनँद आज लये री।।४।।
राधास्वामी मेहर से अधर चढ़ाया।
अद्भुत सुख घट में दिखलाया।
सब दुख दूर टलेरी।।५।।

।। शब्द ४ ।।

अहो मेरे प्यारे सतगुरु,प्रेम दान मोहिं
दीजे, दुख सुख बहु भरमावत।।टेक।।
दया करी मोहिं संग लगाया।
मारग का मोहिं भेद जनाया।
घट शब्द जगावत।।१।।

प्रेम बिना मन होय न सूरा।
संशै भरम नहिं होवत दूरा।
धुन रस नहिं पावत।। २ ।।
याते सतगुरु दया विचारो।
प्रेम दान मोहिं देव कर प्यारो।
सूरत अधर चढ़ावत।। ३ ।।
शब्द शब्द धुन सुन रस पावत।
अधर जाय निज भाग जगावत।
गुरु गुन उमँगत गावत।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से पहुँची सुन में।
वहाँ से चल लागी सत धुन में।
सतपुर बीन सुनावत।। ५ ।।
अलख लोक जाय डाला डेरा।
अगम लोक जाय किया बसेरा।
राधास्वामी धाम दिखावत।। ६ ।।
राधास्वामी चरन जाय लिपटानी।
प्रेम बढ़ा अब कहाँ समानी।
आनँद बरना न जावत।। ७ ।।

।। शब्द ५ ।।

अहो मेरे प्यारे सतगुरु, अचरज शब्द
सुना दो, धुन में सुर्त अटके।। टेक ।।

काल करम मोहिं अति भरमाते।
मन इंद्री बहु बिघन लगाते।
भोगन में भटके।। १ ।।
दया करो मेरे सतगुरु प्यारे।
मेहर से लो मोहिं आज सम्हारे।
जगत भाव झटके।। २ ।।
दिन दिन प्रीत बढ़े तुम चरनन।
काट देव बंधन तन मन धन।
सुरत अधर सटके।। ३ ।।
सुन सुन धुन नभ ऊपर धावे।
गगन जाय धुन गरज सुनावे।
सुन में जाय मटके।। ४ ।।
धुन मुरली और बीन बजावे।
अलख अगम धुन अधिक सुहावे।
रही राधास्वामी रटके।। ५ ।।

।। शब्द ६ ।।

अहो मेरे प्यारे सतगुरु, अमृत धार
बहा दो, तन मन सुर्त भींजे।। टेक ।।
प्रेम बिना सब करनी फीकी।
नेकहु मोहिं न लागे नीकी।
घट धुन रस दीजे।। १ ।।

मैं हूँ नीच अधम नाकारा।
तुम चरनन का लीन्ह सहारा।
मोहिं अपना कीजे।। २ ।।
दीन अधीन पड़ा तुम द्वारे।
तुम बिन को मेरी दया विचारे।
मोहिं सरना लीजे।। ३ ।।
तुम समरथ क्यों देर लगाओ।
दरशन दे मेरी सुरत चढ़ाओ।
आयु छिन छिन छीजे।। ४ ।।
प्रेम भंडार तुम्हारे भारी।
मेहर से खोलो गगन किवाड़ी।
मन और सुर्त रीझे।। ५ ।।
आओ रे जीव सरन में आओ।
सतगुरु से अब प्रीत लगाओ।
अमृत रस पीजे।। ६ ।।
राधास्वामी मेरा काज सँवारा।
खोला आदि शब्द भंडारा।
सुर्त धुन संग सीझे।। ७ ।।

।। शब्द ७ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, जुड़ मिल गुरु
गुन गाओ,उनकी मेहर अपारी।। टेक ।।

भरम रही थी बहु विधी जग में।
अटक रही थी जहँ तहँ मग में।
उन सीधी राह दिखा री।। १ ।।
प्यार किया मोहिं संग लगाया।
घट का भेद अजब समझाया।
जुगती सहज बता री।। २ ।।
धर हिये ध्यान लखा गुरु रूपा।
सुन सुन शब्द तजा भौ कूपा।
हियरे हरख बढ़ा री।। ३ ।।
दया करी घट प्रीत बढ़ाई।
सोता मनुआँ लीन जगाई।
सूरत अधर चढ़ा री।। ४ ।।
को सके अस सतगुरु गुन गाई।
को जाने उन अधिक बड़ाई।
अबला जीव उबारी।। ५ ।।
जनम जनम का मारा पीटा।
जोन जोन में काल घसीटा।
मेहर से लीन्ह बचा री।। ६ ।।
मैं गुरु प्रीतम लेत मनाई।
छिन छिन राधास्वामी चरन धियाई।
उन कीन्हा मोर उपकारी।। ७ ।।

* * * * *

॥ शब्द ८ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, गुरु सँग फाग
रचाओ, मिला औसर भारी॥ टेक ॥
ऋतु फागुन अब आन मिली है।
गुरु प्यारे से प्रीत ठनी है।
चूके मत अब प्यारी॥ १ ॥
प्रेम रंग घट माट भराओ।
गुरु पै छिड़क छिड़क हुलसाओ।
निरखो शोभा न्यारी॥ २ ॥
सुरत अबीर मलो चरनन में।
प्रीत प्रतीत धरो निज मन में।
तन मन धन देओ वारी॥ ३ ॥
सेवा कर गुरु लेओ रिझाई।
प्रेमी जन सँग आरत गाई।
देखो अजब बहारी॥ ४ ॥
अस औसर नहिं बारम्बारा।
गुरु चरनन करो प्रेम अधारा।
जग भय लाज बिसारी॥ ५ ॥
गुरु भक्ती की महिमा भारी।
जाने जो जिन जुगत सम्हारी।
प्रेम रँग भींजे सारी॥ ६ ॥

परम गुरु मेरे प्रीतम प्यारे।
राधास्वामी यह सब खेल खिला रे।
उन पर जाऊँ बलिहारी।। ७ ।।

।। शब्द ९ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, हिल मिल गुरु
सँग चालो, मग में काल का पहरा।। टेक ।।
माया जग में जाल बिछाई।
भोग दिखा लिया जीव फँसाई।
दुख सुख पात घनेरा।। १ ।।
बिन गुरु नहिं कोई बंदी छोड़ा।
वे काटें बल काल कठोरा।
उन सँग बाँधो बेड़ा।। २ ।।
गुरु चरनन लाओ प्रीत घनेरी।
छूट जाय चौरासी फेरी।
कर दें आज निबेड़ा।। ३ ।।
बचन सार उन चित दे सुनना।
सुन सुन फिर नित मन में गुनना।
छूटे मेरा तेरा।। ४ ।।
गुरु उपदेश लेओ भ्रम भंगा।
गुरु रक्षा लेओ अपने संगा।
चलो घर आज सबेरा।। ५ ।।

शब्द डोर गह घट में चढ़ना।
गुरु स्वरूप को अगुआ रखना।
बिघन न आवे नेड़ा।। ६ ।।
चढ़ चल पहुँचो सहसकँवल में।
गुरु स्वरूप लख गगन मँडल में।
निरखो चंद्र उजेरा।। ७ ।।
मुरली धुन चढ़ गुफा सम्हारी।
धुन बीना सुनी तिस परे न्यारी।
किया सतपुर डेरा।। ८ ।।
अलख अगम की चढ़ गई घाटी।
राधास्वामी दर की हो गई भाटी।
किया निज धाम बसेरा।। ९ ।।

।। शब्द १० ।।

अरी हे पड़ोसिन प्यारी, कोई जतन
बतादो, कस मिले प्रीतम प्यारा।। टेक ।।
बिरह अगिन नित भड़कत तन में।
पिया की पीर नित खटकत मन में।
सहत रहूँ दुख भारा।। १ ।।
कोई बैद मिलें जब भारी।
रोग बूझ दें दवा बिचारी।
तब कुछ पाऊँ सहारा।। २ ।।

सतगुरु ऐसे बैद कहावें।
प्रीतम से वे तुरत मिलावें।
दें निज चरन अधारा।। ३ ।।
चलो पड़ोसिन गुरु ढिंग जावें।
बिनती कर निज काज बनावें।
छोड़ें जग अंधियारा।। ४ ।।
सतगुरु हैं वे दीन दयाला।
मेहर से छिन में करें निहाला।
अस होय जीव गुज़ारा।। ५ ।।
प्रेम प्रीत गुरु चरनन लावें।
आरत कर उन बहुत रिझावें।
तन मन चरनन वारा।। ६ ।।
भेद सुनावें अति से भारी।
प्रीतम आपहि गुरु तन धारी।
करते जीव उबारा।। ७ ।।
कर पहिचान लिपट रहें चरनन।
प्रीत प्रतीत बढ़ावें छिन छिन।
तज सब भरम पसारा।। ८ ।।
राधास्वामी धाम से सतगुरु आवें।
जीव दया वे हिये बसावें।
उन गति अगम अपारा।। ९ ।।

भाग उदय हुए आज हमारे।
मिल गए राधास्वामी प्रीतम प्यारे।
लखा निज रूप नियारा।। ८ ।।
आओ पड़ोसन गाओ बधाई।
राधास्वामी महिमा अगम अथाई।
दम दम शुकर बिचारा।। ९ ।।

।। शब्द ११ ।।

अरी हे सुहागन हेली, तू बड़ भागन
भारी, तोहि मिल गए निज भरतारा।। टेक ।।
तू करे आनंद प्रीतम साथा।
चरनन में तेरा मन रहे राता।
तोहि मिल गए गुरु दातारा।। १ ।।
मैं पड़ी आय यहाँ भूल भरम में।
अटक रही थोथे करम धरम में।
भेद न पाया सच करतारा।। २ ।।
अब करो मदद मेरी तुम मिल कर।
सतगुरु पै ले चलो दया कर।
वे करें मेहर अपारा।। ३ ।।
दुख सुख सहत रहूँ मैं भारी।
बिन प्रीतम मैं रहूँ दुखारी।
गुरु मोहिं देहिं सहारा।। ४ ।।

प्रीतम का मोहिं भेद बतावें।
मिलने की मोहिं जुगत लखावें।
मिले घट शब्द अधारा।। ५ ।।
गुरु स्वरूप हिये माहिं धियाऊँ।
मेहर पाय सुर्त अधर चढ़ाऊँ।
निरखूँ बिमल बहारा।। ६ ।।
अस करनी कर मिलूँ पिया से।
राधास्वामी चरन पकड़ हिया जिया से।
पहुँचूँ धुर दरबारा।। ७ ।।
सतगुरु दृष्टि मेहर की कीन्ही।
चरन सरन मोहिं निज कर दीन्ही।।
छिन में काज सँवारा।। ८ ।।
सुरत चढ़ाय अधर पहुँचाई।
घट में राधास्वामी दरस दिखाई।
हुआ अब जीव उधारा।। ९ ।।

।। शब्द १२ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, गुरु बिन कौन
उतारे, मोहिं भौ सागर पारा।। टेक ।।
गुरु ही मात पिता पति प्यारे।
गुरु ही सच समरथ करतारे।
गुरु मेरे प्रान अधारा।। १ ।।

जग में फैल रहा तम भारी।
करमन में भरमें जिव सारी।
गुरु बिन घोर अँधियारा।। २ ।।
बचन सुना गुरु समझ बढ़ावें।
घट में शब्द भेद दरसावें।
निरखे अजब उजारा।। ३ ।।
याते गुरु सँग जोड़ो नाता।
मन रहे उन चरनन में राता।
गुरु बिन नहिं और सहारा।। ४ ।।
चरन सरन गुरु दृढ़ कर गहना।
आज्ञा उनकी सिर पर धरना।
ले शब्द का मारग सारा।। ५ ।।
घट में निस दिन करो कमाई।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ाई।
काल से होय छुटकारा।। ६ ।।
राधास्वामी परम गुरू दातारे।
या बिधी जीव को लेहिं उबारे।
उन चरनन धरो प्रेम पियारा।। ७ ।।

।। शब्द १३ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, घट में शब्द
जगाओ,शब्द ही करे निरवारा।। टेक ।।

सतगुरु खोज पड़ो उन चरना।
सुन सुन बचन चित्त में धरना।
वे तोहि लेहिं सुधारा।। १ ।।
शब्द भेद गुरु देहिं बताई।
धुन में मन और सुरत लगाई।
सुन अनहद झनकारा।। २ ।।
गुरु चरनन में प्रीत बढ़ाना।
उमँग सहित नित शब्द कमाना।
घट में होत उजारा।। ३ ।।
मन माया के विघन हटाओ।
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाओ।
निरखो अजब बहारा।। ४ ।।
राधास्वामी सूरत लीन्ह सिंगारी।
तब भौ सागर पार सिधारी।
अस हुआ सहज उधारा।। ५ ।।

।। शब्द १४ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, चेत करो
सतसंगा, छूटे कलमल दाग़ा।। टेक ।।
बिन सतसंग भरम नहिं भागे।
शब्द गुरू में प्रीत न जागे।
छूटे नहिं मति कागा।। १ ।।

याते गुरु उपदेश सम्हारो।
प्रीत प्रतीत चरन में धारो।
तब सतसँग रँग लागा।। २ ।।
ध्यान धरत मन होत अनंदा।
शब्द सुनत कटते जम फंदा।
भाग उदय होय जागा।। ३ ।।
जग व्यवहार अब नेक न भावे।
गुरु चरनन मन छिन छिन धावे।
दिन दिन बढ़त अनुरागा।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से लिया अपनाई।
निज चरनन में सुरत लगाई।
काल देश अब त्यागा।। ५ ।।

।। शब्द १५ ।।

अरी हे सहेली प्यारी,गुरु का ध्यान
सम्हारो,मनमुखता सहज नसावे।। टेक ।।
सतसँग कर बढ़ा भाव गुरू में।
प्रीत लगी अब चरन गुरू में।
नित दरशन को धावे।। १ ।।
गुरु मूरत हिये माहिं बसानी।
छिन छिन गुरु के पास रहानी।
नइ नइ उमँग उठावे।। २ ।।

सेवा को लोचे मन छिन छिन।
प्रेम बढ़त गहिरा अब दिन दिन।
गुरु बिन कछु ना सुहावे।। ३ ।।
ध्यान धरत मन चढ़े अकाशा।
देखे घट में बिमल बिलासा।
शब्दा रस पी तृप्तावे।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से सूरत जागे।
धुन डोरी गह घर को भागे।
चरनन माहिं समावे।। ५ ।।

।। शब्द १६ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, गुरु की महिमा
भारी, धर उन चरनन प्यारा।। टेक ।।
गुरु पूरे सत पुर के बासी।
उन सँग पावे सहज बिलासी।
सहज करें भौ पारा।। १ ।।
गुरु पूरे हितकारी साँचे।
उन सँग जले न जग की आँचे।
सब बिधि लेहिं सुधारा।। २ ।।
दीन दयाल है नाम गुरू का।
दृढ़ कर पकड़ो चरन गुरू का।
कर उन नाम अधारा।। ३ ।।

सतगुरु घर की बाट लखावें।
बल अपना दे सुरत चढ़ावें।
शब्द सुनावें सारा।। ४ ।।
मारग में गुरु पद दरसावें।
सत्तपुरुष का रूप लखावें।
पहुँचे राधास्वामी धाम अपारा।। ५ ।।

।। शब्द १७ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, जग है विष का
ख़ाना, यासे रहो हुशियारा।। टेक ।।
माया ने रचे भोग बिलासा।
घेरे जीव दिखाय तमाशा।
जाल बिछाया भारा।। १ ।।
मन इच्छा सँग जीव मलीना।
रोग सोग और दुख सुख सहना।
करम भार सिर डारा।। २ ।।
कुल कुटुम्ब और भाई बिरादर।
स्वारथ सँग सब करते आदर।
बिन धन देयँ न सहारा।। ३ ।।
याते चेत चलो मेरे भाई।
गुरु बिन नहिं कोइ और सहाई।
उन चरनन में लाओ प्यारा।। ४ ।।

गुरु से शब्द का ले उपदेशा।
कर अभ्यास तजो यह देशा।
राधास्वामी नाम का कर आधारा।। ५ ।।

।। शब्द १८ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, प्रेम की दौलत
भारी, छिन छिन भक्ति कमाओ।। टेक ।।
भक्ति बिना सब बिरथा करनी।
थोथा ज्ञान ध्यान चित धरनी।
यह नहिं मुक्ति उपाओ।। १ ।।
प्रेम बिना कोइ जाय न पारा।
पहुँचे नहिं सतगुरु दरबारा।
क्यों बिरथा बैस गँवाओ।। २ ।।
ऐसा प्रेम गुरू से पावे।
जो कोई उनकी कार कमावे।
उन चरनन पर सीस नवाओ।। ३ ।।
दीन ग़रीबी धारो मन में।
प्रीत बसाओ तुम निज मन में।
घट में शब्द जगाओ।। ४ ।।
दया मेहर से सुरत चढ़ावें।
धुर पद में वे ले पहुँचावें।
राधास्वामी चरन समाओ।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द १९ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, दूत बिरोधी
भारी, गुरु बल इनको मारो।। टेक ।।
काम क्रोध और मोह और लोभा।
मद और मान बड़ाई शोभा।
इन से सब कोई हारो।। १ ।।
गुरु की दया ले इनसे लड़ना।
सुरत शब्द ले ऊपर चढ़ना।
या विधी इनको टारो।। २ ।।
जब लग घट में घाट न बदले।
मन और सुरत रहें यहाँ गदले।
फिर फिर भरमें वारो।। ३ ।।
जिस पर मेहर गुरू की होई।
पार जाय निरमल होय सोई।
काल जाल से न्यारो।। ४ ।।
डरत रहो बैरियन से भाई।
राधास्वामी चरन ओट गहो आई।
सहज करें निरवारो।। ५ ।।

।। शब्द २० ।।

अरी हे सहेली प्यारी, गुरु की सरन
सम्हारो,काज करें वे पूरा।। टेक ।।

सरन धार चरनन में धाओ।
ध्यान लाय सुर्त अधर चढ़ाओ।
बाजे अनहद तूरा।। १ ।।
प्रीत प्रतीत धरो गुरु चरनन।
करम भरम सब कीन्हे मरदन।
गुरु बल मन हुआ सूरा।। २ ।।
सूर होय गगनापुर धावत।
गुरु को पल पल माहिं रिझावत।
निरखत अद्भुत नूरा।। ३ ।।
काल करम से नाता छूटा।
जगत पसार लगा सब झूठा।
खोजत चली पद मूरा।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर करी अब मुझ पर।
सहज पहुँचाय दिया मोहिं धुर घर।
हुई उन चरनन धूरा।। ५ ।।

।। शब्द २१ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, यह जग रैन
का सुपना, करो काज सबेरा।। टेक ।।
भोग बिलास जगत के काँचे।
खोज करो तुम सतगुरु साँचे।
उन सँग बाँधो बेड़ा।। १ ।।

ले उपदेश करो अभ्यासा।
राधास्वामी चरनन बाँधो आसा।
मत कर बहुत अबेरा।। २ ।।
गुरु स्वरूप का धर हिये ध्याना।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाना।
मिटे चौरासी फेरा।। ३ ।।
तन मन से सुर्त होकर न्यारी।
गुरु की दया ले अधर सिधारी।
गगन मँडल किया डेरा।। ४ ।।
सतगुरु ध्यान धरत फिर चाली।
धुन बीना सुन हुई निहाली।
किया राधास्वामी धाम बसेरा।। ५ ।।

।। शब्द २२ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, हँगता बैरन
भारी, दीन ग़रीबी धारो।। टेक ।।
जब लग मन में मान समाना।
घट अंतर में दख़ल न पाना।
मद और मोह बिसारो।। १ ।।
बिना दीनता दया न पावे।
बिना दया नहिं शब्द समावे।
जाय न भौ के पारो।। २ ।।

नीच निकाम जान अपने को।
निपट अजान मान अपने को।
तब पाय मेहर अपारो।। ३ ।।
अस घट प्रेम गुरू का जागे।
झीनी सुरत चरन में लागे।
सुन अनहद झनकारो।। ४ ।।
सुन सुन शब्द गगन को धावे।
वहाँ से सतपुर जाय समावे।
राधास्वामी चरन निहारो।। ५ ।।

।। शब्द २३ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, मन से क्यों तू
हारे, गुरु हैं तेरे सहाई।। टेक ।।
राधास्वामी को तुम समरथ मानो।
प्रीत प्रतीत चरन में आनो।
काल से लेहिं बचाई।। १ ।।
दृढ़ कर उनकी सरन सम्हारो।
हानि लाभ जग कुछ न बिचारो।
घट में प्रेम जगाई।। २ ।।
राधास्वामी तेरी दया बिचारें।
काल बिघन वे सबही टारें।
मन से खूँट छुड़ाई।। ३ ।।

मेहर से घट में दरस दिखावें।
शब्द शब्द धुन अजब सुनावें।
सूरत अधर चढ़ाई।। ४ ।।
गुरु पद परस अधर को धावे।
सत्तपुरुष का दरशन पावे।
राधास्वामी धाम लखाई।। ५ ।।

।। शब्द २४ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, क्यों न सुने
गुरु बैना, वे हैं बंदी छोड़ा।। टेक ।।
सतसँग कर उन सहित पिरीती।
बचन सुनो हिये धर परतीती।
छिन छिन बंधन तोड़ा।। १ ।।
भूल भरम तेरा सबहि मिटावें।
घट में धुन सँग सुरत लगावें।
सुन ले अनहद घोरा।। २ ।।
छिन छिन वे तेरी करें सफ़ाई।
अटक भटक सब देहिं तुड़ाई।
मन इच्छा मुख मोड़ा।। ३ ।।
घट में अचरज दरस दिखावें।
मन और सूरत अधर चढ़ावें।
मारें काल कठोरा।। ४ ।।

राधास्वामी अपनी मेहर करावें।
तब घट में अस मौज दिखावें।
सुर्त निज चरनन जोड़ा।। ५ ।।

।। शब्द २५ ।।

अरी हे सहेली प्यारी, क्या सोवे जग
माहीं, जाग चलो घर अपने।। टेक ।।
बिन गुरु दया कोई नहिं जागे।
मेहर बिना नहिं घट में लागे।
अटके जग सुपने।। १ ।।
गुरु पूरे का जो सँग पावे।
करम भरम तज घट में धावे।
घर की ओर भजने।। २ ।।
याते सतसँग सतगुरु धारो।
सुरत शब्द अभ्यास सम्हारो।
सँग मन माया तजने।। ३ ।।
गुरू सँग प्रीत बढ़ाओ दिन दिन।
धुन में सुरत लगाओ छिन छिन।
चरनन में पकने।। ४ ।।
दीन होय गहो राधास्वामी सरना।
राधास्वामी नाम हिये में धरना।
चरनन में रचने।। ५ ।

* * * * *

# बचन २१ प्रेम तरंग भाग पहिला

।। शब्द १ ।।

मेरे हिये में बजत बधाई।
संत सँग पाया रे।। १ ।।
ढूँढ़ फिरी जग में बहुतेरा।
भेद कहीं नहिं पाया रे।। २ ।।
संत मता अति ऊँचा गहिरा।
बेद कतेब न जाना रे।। ३ ।।
बड़ भागी कोई बिरले प्रेमी।
तिनको मरम जनाया रे।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से जीव उबारें।
उन महिमा अगम अपारा रे।। ५ ।।

।। शब्द २ ।।

मेरे धूम भई अति भारी।
दरस राधास्वामी कीन्हा रे।। १ ।।
भाग जगे मेरे धुर के सजनी।
आज रूप रस लीन्हा रे।। २ ।।
कौन कहे महिमा अब उनकी।
जिन प्रेम दान गुरु दीन्हा रे।। ३ ।।

सुखी भया अब तन मन सारा।
हुई गुरु चरन अधीना रे।। ४ ।।
राधास्वामी चरन रही लिपटानी।
अमृत हर दम पीना रे।। ५ ।।

।। शब्द ३ ।।

राधास्वामी छबि निरखत मुसकानी।
तन मन सुध बिसरानी रे।। १ ।।
बिन दरशन कल नाहिं पड़त है।
भावे अन्न न पानी रे।। २ ।।
देखत रहूँ री रूप गुरु प्यारा।
छिन छिन मन हरखानी रे।। ३ ।।
दया करी गुरु दीन दयाला।
हुई जग से अलगानी रे।। ४ ।।
लिपट रहूँ हर दम चरनन से।
राधास्वामी जान पिरानी रे।। ५ ।।

।। शब्द ४ ।।

सुन सुन महिमा गुरु प्यारे की।
हुई मैं दरस दिवानी रे।। १ ।।
धाय धाय चरनन में धाई।
परगट रूप दिखानी रे।। २ ।।

मोहित हुई अचरज छबि निरखत।
तन मन सुद्ध भुलानी रे।।३ ।।
बार बार बल जाऊँ चरन पर।
कस गुन गाऊँ बखानी रे।।४ ।।
राधास्वामी जान जान के जानाँ।
उन चरनन लिपटानी रे।।५ ।।

।। शब्द ५ ।।

कस प्रीतम से जाय मिलूँ मैं।
कोई जतन बताओ रे।।१ ।।
तड़प रही मैं बिन पिया प्यारे।
कोई दरस दिखाओ रे।।२ ।।
रैन दिवस मोहिं चैन न आवे।
किस बिधि करूँ उपाओ रे।।३ ।।
बिरह अगिन नित सुलगत भड़कत।
प्रेम धार बरसाओ रे।।४ ।।
राधास्वामी द्याल दरस देओ अबकी।
तन मन शांत धराओ रे।।५ ।।

।। शब्द ६ ।।

भाग चलो जग से तुम अबके।
सतसँग में मन दीजो रे।।१ ।।

इंद्री भोग त्याग देओ मन से।
चरन सरन गुरु लीजो रे।। २ ।।
ले उपदेश करो अभ्यासा।
सुरत शब्द रँग भींजो रे।। ३ ।।
प्रीत प्रतीत सहित गुरु सेवा।
तन मन धन से कीजो रे।। ४ ।।
राधास्वामी चरन बसाय हिये में।
नित्त सुधा रस पीजो रे।। ५ ।।

।। शब्द ७ ।।

गुरु सतसंग करो तन मन से।
बचन सुनत नित जागो रे।। १ ।।
मोह नींद में बहु दिन सोये।
अब गुरु चरनन लागो रे।। २ ।।
ले उपदेश शब्द का गुरु से।
घट अन्तर में झाँको रे।। ३ ।।
उमँग अंग ले जोड़ दृष्टि को।
गुरु स्वरूप को ताको रे।। ४ ।।
राधास्वामी दया निरख निज हिये में।
जग से छिन छिन भागो रे।। ५ ।।

* * * * *

# बचन २२ प्रेम तरंग भाग दूसरा

।। शब्द १ ।।

राधास्वामी दीन दयाला, मेरे सद
किरपाला, मोहिं कीन्ह निहाला रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। १ ।।
राधास्वामी परम उदारा, मेरे अति
दातारा, मोहिं लीन्ह उबारा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। २ ।।
राधास्वामी प्रान पियारे, मेरी आँखों
के तारे, मेरे जग उजियारे रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ३ ।।
राधास्वामी लीन्ह सुधारा, मेरे मन
को सँवारा, मेरा किया उपकारा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ४ ।।
राधास्वामी शब्द जनाई, मेरी सुरत
चढ़ाई, मोहिं चरन लगाई रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ५ ।।

।। शब्द २ ।।

राधास्वामी संग लगाई, मोहिं बचन
सुनाई, हिये प्रीत बढ़ाई रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। १ ।।

राधास्वामी सेवा धारी, उन नैन
निहारी, हिये भई उजियारी रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। २ ।।
राधास्वामी भेद बताया, घट शब्द
सुनाया, सोता मनुआँ जगाया रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ३ ।।
मन उमँगत चाला, घट देख उजाला,
लखा रूप दयाला रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ४ ।।
त्रिकुटी घन गाजा, सुन सारँग बाजा,
मुरली धुन साजा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ५ ।।
सतपुर माहिं धावत, धुन बीन सुनावत,
करी सतगुरु आरत रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ६ ।।
लख अलख स्वरूपा, मिल अगम
कुल भूपा, गई धुर धाम अनूपा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ७ ।।
राधास्वामी रूप निहारा, हुआ आनँद
भारा, सब काज सँवारा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ८ ।।

* * * * *

।। शब्द ३ ।।

परम पुरुष प्यारे राधास्वामी,
धर संत स्वरूपा, जग आये री।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। १ ।।
करी मेहर घनेरी, जिव भाग जगेरी,
दल काल दलेरी, मुख माया मोड़ी रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। २ ।।
दिया घर का सँदेशा, किया शब्द उपदेशा,
मेटा सबही अँदेशा, तज काल कलेशा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ३ ।।
मगन हुई सुन सतगुरु बचना, नित चरन
सरन में पकना, भोग जग सबही तजना रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ४ ।।
सुर्त शब्द लगाऊँ, गुरू रूप धियाऊँ,
मन चरनन लाऊँ,
नित राधास्वामी गाऊँ रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ५ ।।

।। शब्द ४ ।।

चहुँ दिस धूम मची, सतगुरु अब आये,
जग जीव जगाये, उन लिया अपनाई रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। १ ।।

राधास्वामी परम हितकारी, अस
लीला धारी, जो जिव दीन दुखारी,
उन लेहैं उबारी रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। २ ।।
जम काल लजाई, माया रही मुरझाई,
कुछ पेश न जाई, सब करम नसाई रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ३ ।।
हुआ जीव उबारा, मिटा भर्म पसारा,
घर काल उजाड़ा, हुआ सत उजियारा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ४ ।।
राधास्वामी महिमा भारी,
कस गाऊँ पुकारी, मैं बाल अनाड़ी,
उन सरन अधारी रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे।। ५ ।।

।। शब्द ५ ।।

प्यारे लागें री मेरे दातार।
सतगुरु प्यारे लागें।। १ ।।
प्यारे लागें री कुल करतार।
सतगुरु प्यारे लागें।। २ ।।

प्यारे लागें री प्रेम भँडार।
सतगुरु प्यारे लागें।। ३ ।।
प्यारे लागें री अकह अपार।
सतगुरु प्यारे लागें।। ४ ।।
प्यारे लागें री प्रान अधार।
सतगुरु प्यारे लागें।। ५ ।।
प्यारे लागें री मेरे दिलदार।
सतगुरु प्यारे लागें।। ६ ।।
प्यारे लागें री परम उदार।
सतगुरु प्यारे लागें।। ७ ।।
प्यारे लागें री अपर अपार।
सतगुरु प्यारे लागें।। ८ ।।
प्यारे लागें री अधर अधार।
सतगुरु प्यारे लागें।। ९ ।।
प्यारे लागें री अमी भंडार।
सतगुरु प्यारे लागें।।१० ।।
प्यारे लागें री संत अवतार।
सतगुरु प्यारे लागें।। ११ ।।
प्यारे लागें री मेरे रछपाल।
सतगुरु प्यारे लागें।।१२ ।।

प्यारे लागें री मेरे किरपाल।
सतगुरु प्यारे लागें।।१३ ।।
प्यारे लागें री दीन दयाल।
सतगुरु प्यारे लागें।।१४ ।।
प्यारे लागें री अमल अरूप।
सतगुरु प्यारे लागें।।१५ ।।
प्यारे लागें री शब्द स्वरूप।
सतगुरु प्यारे लागें।।१६ ।।
प्यारे लागें री मोहन रूप।
सतगुरु प्यारे लागें।।१७ ।।
प्यारे लागें री सुन्दर रूप।
सतगुरु प्यारे लागें।।१८ ।।
प्यारे लागें री आनँद रूप।
सतगुरु प्यारे लागें।।१९ ।।
प्यारे लागें री हैरत रूप।
सतगुरु प्यारे लागें।।२० ।।
प्यारे लागें री सत्त स्वरूप।
सतगुरु प्यारे लागें।।२१ ।।
प्यारे लागें री अगम अनाम।
सतगुरु प्यारे लागें।।२२ ।।

प्यारे लागें री अचरज धाम।
सतगुरु प्यारे लागें।।२३ ।।
प्यारे लागें री अचरज नाम।
सतगुरु प्यारे लागें।।२४ ।।
प्यारे लागें री भौ तारन।
सतगुरु प्यारे लागें।।२५ ।।
प्यारे लागें री जीव उबारन।
सतगुरु प्यारे लागें।।२६ ।।
प्यारे लागें री मन मोहन।
सतगुरु प्यारे लागें।।२७ ।।
प्यारे लागें री काल बिडारन।
सतगुरु प्यारे लागें।।२८ ।।
प्यारे लागें री माया टारन।
सतगुरु प्यारे लागें।। २९ ।।
प्यारे लागें री जान पिरान।
सतगुरु प्यारे लागें।।३० ।।
प्यारे लागें री प्रेम निधान।
सतगुरु प्यारे लागें।।३१ ।।
प्यारे लागें री जग तारन।
सतगुरु प्यारे लागें।।३२ ।।

प्यारे लागें री हे रँगीले।
सतगुरु प्यारे लागें।।३३ ।।
प्यारे लागें री हे छबीले।
सतगुरु प्यारे लागें।।३४ ।।
प्यारे लागें री हे रसीले।
सतगुरु प्यारे लागें।।३५ ।।
प्यारे लागें री अचल अडोल।
सतगुरु प्यारे लागें।।३६ ।।
प्यारे लागें री अगम अतोल।
सतगुरु प्यारे लागें।।३७ ।।
प्यारे लागें री अमल अमोल।
सतगुरु प्यारे लागें।।३८ ।।
प्यारे लागें री जीव हितकारी।
सतगुरु प्यारे लागें।।३९ ।।
प्यारे लागें री पूरन धनी।
सतगुरु प्यारे लागें।।४० ।।
प्यारे लागें री अंतरजामी।
सतगुरु प्यारे लागें।।४१ ।।
प्यारे लागें री अगम अगाध।
सतगुरु प्यारे लागें।।४२ ।।

प्यारे लागें री अलख अथाह।
सतगुरु प्यारे लागें।।४३ ।।
प्यारे लागें री सर्व समरथ।
सतगुरु प्यारे लागें।।४४ ।।
प्यारे लागें री अबल की ओट।
सतगुरु प्यारे लागें।।४५ ।।
प्यारे लागें री प्यारे परवीन।
सतगुरु प्यारे लागें।।४६ ।।
प्यारे लागें री मेरे प्रीतम।
सतगुरु प्यारे लागें।।४७ ।।
प्यारे लागें री गहिर गँभीर।
सतगुरु प्यारे लागें।।४८ ।।
प्यारे लागें री बंदी छोड़।
सतगुरु प्यारे लागें।।४९ ।।
प्यारे लागें री मात पिता।
सतगुरु प्यारे लागें।।५० ।।

* * * * *

# बचन २३ प्रेम तरंग भाग तीसरा

।। कजली ।।

।। शब्द १ ।।

कैसे गाऊँ गुरु महिमा,
अति अगम अपार।।टेक ।।
गुरु प्यारे मेरे राधास्वामी दाता।
उनके चरन पर जाउँ बलिहार।। १ ।।
राधास्वामी मेहर से अंग लगाया।
काल जाल से लिया है निकार।। २ ।।
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई।
घंटा संख सुनी धुन सार।। ३ ।।
लाल सूर लख चंद्र निहारा।
मुरली सुन धुन बीन सम्हार।। ४ ।।
राधास्वामी चरन परस मगनानी।
पहुँच गई अब धुर दरबार।। ५ ।।

।। शब्द २।।

कैसे मिलूँ री पिया से।
चढ़ गगन गली।। १ ।।

रैन अँधेरी और बाट अनेड़ी।
कोइ संग न साथी कहाँ जाऊँ री अली।। १ ।।
खोज करो गुरु दीन दयाला।
जोगी ज्ञानी रहे तली।। २ ।।
शब्द भेद ले सुरत चढ़ाओ।
निरखो नभ चढ़ जोत बली।। ३ ।।
त्रिकुटी जाय सुनो अनहद धुन।
सुन में हंसन संग रली।। ४ ।।
सत्तपुरुष का रूप निरख कर।
राधास्वामी चरनन जाय मिली।। ५ ।।

।। शब्द ३ ।।

कैसे चलूँ री अधर चढ़,सुन नगरी।।टेक।।
मन मेरा चंचल चित्त मलीना।
गैल कठिन कस धरूँ पग री।। १ ।।
गुरु दयाल बिन कौन सहाई।
उनके चरन में रहूँ लग री।। २ ।।
वे दयाल जब दया बिचारें।
तब सुर्त चढ़े अधर डग री।। ३ ।।
काल करम को दूर हटावें।
और निकारें माया मगरी।। ४ ।।

सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी धाई।
सुन में हंसन सँग पग री।।५ ।।
मुरली धुन सुन आगे चाली।
महाकाल भी रहा थक री।।६ ।।
पुरुष दया ले अधर सिधारी।
राधास्वामी चरन माहिं जकड़ी।।७ ।।

।। शब्द ४ ।।

कैसे गहूँ री सरन गुरु,बिन परतीत।।टेक ।।
मन इंद्री भोगन में अटके।
नेक न छोड़ें जग की प्रीत।।१ ।।
बचन सुनत और फिर बिसरावत।
चित्त न धारें भक्ती रीत।।२ ।।
काल करम मोहिं नित भरमावें।
बिन गुरु दया इन्हें कस जीत।।३ ।।
मेहर करें सतगुरु जब अपनी।
दूर हटावें सभी अनीत।।४ ।।
हे राधास्वामी अब दया बिचारो।
मेरे हिये में बसाओ चरन पुनीत।।५ ।।

* * * * *

॥ शब्द ५ ॥

काहे री चरन गुरु, भूली री सुरतिया॥टेक॥
बिन गुरु चरन आसरा नाहीं।
क्यों नहिं उन उर धारो री सुरतिया॥ १ ॥
चेत सुनो अब सतसँग बचना।
प्रीत लाय उन मानो री सुरतिया॥ २ ॥
सेवा कर आरत कर गुरु की।
सत्तपुरुष सम जानो री सुरतिया॥ ३ ॥
दरशन कर उनका हित चित से।
दृष्टि जोड़ सुर्त तानो री सुरतिया॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन बल हिये धर।
काल करम को जारो री सुरतिया॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

करो री सुरत गुरु चरन अधारा॥टेक॥
गुरु सम कोई हितकारी नाहीं।
उनकी दया का लेओ री सहारा॥ १ ॥
बचन सुनाय सुधारें तुझ को।
भेद बतावें धुर दरबारा॥ २ ॥
घर चालन की जुगत बतावें।
सुरत शब्द का मारग सारा॥ ३ ॥

भक्ती रीत सिखावें तुझ को।
जगत जाल से करें नियारा।।४ ।।
परम पुरुष राधास्वामी चरनन में।
मेहर से दें तोहि प्रेम करारा।।५ ।।

।। शब्द ७ ।।

खोजो री शब्द घर सुरत पियारी।।टेक।।
मिल गुरु से लो भेद शब्द का।
धुन अनहद नित घट में जारी।।१ ।।
सुन सुन धुन मन उगलत जग को।
इंद्रियन से सुर्त होवत न्यारी।।२ ।।
घट में अजब बिलास दिखाना।
मगन हुई पाय आनँद भारी।।३ ।।
गुरु की दया ले चढ़त अधर में।
सुन्न परे धुन सोहँग धारी।।४ ।।
सत्त अलख और अगम निरख कर।
राधास्वामी चरनन सूरत वारी।।५ ।।

।। शब्द ८ ।।

लागो रे चरन गुरु जीव अनाड़ी।।टेक।।
करम धरम में कब लग पचना।
तीरथ मूरत कब लग जारी।।१ ।।

या में फल पाओ नहिं नेका।
घर जाने की गैल भुलारी।। २ ।।
जनम मरन से छुटना चाहो।
तो सतगुरु की सरन सम्हारी।। ३ ।।
मेहर करें गुरु बचन सुनावें।
मन और सूरत लेहिं सुधारी।। ४ ।।
निज घर का दें भेद सुनाई।
सुरत शब्द की जुगत बता री।। ५ ।।
बिरह जगाय चलो अब घट में।
सुन सुन धुन हिये बढ़त पियारी।। ६ ।।
राधास्वामी सरन धार हिये अंतर।
सहज चलो सतगुरु दरबारी।। ७ ।।

## बचन २४ प्रेम तरंग भाग चौथा

।। शब्द १ ।।

मैं गुरु प्यारे के चरनों की दासी।।टेक।।
नित उठ दर्शन करूँ उमँग से।
हार चढ़ाउँ अपने गुरु सुख रासी।। १ ।।
मत्था टेक लेउँ परशादी।
करम भरम सब होते नासी।। २ ।।

प्रीत बढ़त गुरु चरनन निस दिन।
जग से रहती सहज उदासी।। ३ ।।
शब्द कमाई करूँ प्रेम से।
मगन होय रहुँ नित गुरु पासी।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से काज बनाओ।
दीजे मोहिं निज चरन बिलासी।। ५ ।।

।। शब्द २ ।।

मैं पड़ी अपने गुरु प्यारे की सरना।।टेक।।
मेहर करी गुरु भेद बताया।
सुरत शब्द में निस दिन भरना।। १ ।।
गुरु के चरन पकड़ हित चित से।
भौसागर से सहजहि तरना।। २ ।।
गुरु का बल सँग लेकर अपने।
मन माया से छिन छिन लड़ना।। ३ ।।
जगत जाल जंजाल जार कर।
गगन ओर धुन सुन सुन चढ़ना।। ४ ।।
राधास्वामी बल अब धार हिये में।
काल करम से काहे को डरना।। ५ ।।

* * * * *

।। शब्द ३ ।।

मैं हुई सखी अपने प्यारे की प्यारी।।टेक।।
सेवा में नित हाज़िर रहती।
हरख हरख नित रूप निहारी।। १ ।।
दरशन शोभा क्योंकर बरनूँ।
छबि पर जाऊँ छिन २ बलिहारी।। २ ।।
मेहर भरी दृष्टी जब डारी।
भूल गई तन मन सुध सारी।। ३ ।।
कस गुन गाऊँ अपने गुरु प्यारे के।
तन मन धन उन चरनों पै वारी।। ४ ।।
राधास्वामी प्यारे से यही बर माँगूँ।
चरनन में रहूँ लीन सदा री।। ५ ।।

।। शब्द ४ ।।

जब से मैं देखा राधास्वामी का मुखड़ा।।टेक।।
मोहित हुई तन मन सुध भूली।
छोड़ दिया सब जग का झगड़ा।। १ ।।
राधास्वामी छबि छा गई नैनन में।
नहीं सुहावे मोहिं अब कोई रगड़ा।। २ ।।
नित्त बिलास करूँ दरशन का।
भर भर प्रेम हुआ मन तकड़ा।। ३ ।।

मेहर हुई सुर्त चढ़त अधर में।
छोड़ चली अब काया छकड़ा।।४ ।।
राधास्वामी मेहर करी अब भारी।
छिन छिन मन चरनन में जकड़ा।।५ ।।

।। शब्द ५ ।।

राधास्वामी छबि मेरे हिये बस गई री।।टेक।।
राधास्वामी शोभा क्यों कर गाऊँ।
नैन कँवल दृष्टी जोड़ दई री।।१ ।।
दरस रूप रस बरनूँ कैसे।
नर देह मेरी आज सुफल भई री।।२ ।।
नित नित ध्याय रहूँ गुरु रूपा।
घट में आनँद बिमल लई री।।३ ।।
बिन प्रीतम बहु जन्म बिताये।
और बिपता बहु भाँति सही री।।४ ।।
अब मोहिं राधास्वामी मिले भाग से।
चरन लगाय निज सरन दई री।।५ ।।

।। शब्द ६ ।।

मन हुआ मेरा गुरु चरनन में लीना।।टेक।।
जग से हट सतसँग में लागी।
भक्ती दान गुरू मोहिं दीन्हा।।१ ।।

शब्द संग मैं सुरत लगाऊँ।
मगन होय नित धुन रस पीना।। २ ।।
सेवा कर नई उमँग जगाऊँ।
मैं हुइ अपने गुरु चरनन की रीना।। ३ ।।
बिन दरशन मोहिं कल न पड़त है।
तड़प रहूँ जैसे जल बिन मीना।। ४ ।।
राधास्वामी प्यारे मेरे प्रान अधारे।
मेहर से उन मेरा कारज कीन्हा।। ५ ।।

।। शब्द ७ ।।

आज मैं पाई सरन गुरु पूरे।।टेक।।
गुरु चरनन मिल हुई बड़ भागी।
बाजे घट में अनहद तूरे।। १ ।।
जगत भाव भय लज्जा त्यागी।
मन कायर हुआ घट में सूरे।। २ ।।
सुन सुन धुन अब चढ़त अधर में।
जोत जगमगी झलकत नूरे।। ३ ।।
त्रिकुटी जाय ओं धुन पाई।
काल और करम रहे दोउ झूरे।। ४ ।।
अक्षर धुन सुन आगे चाली।
तज दिया देश अब माया कूड़े।। ५ ।।

मुरली सुन धुन बीन सम्हारी।
मगन हुई लख सत पद मूरे।। ६ ।।
प्रेम भँडार लखा अब भारी।
मिल गये राधास्वामी चरन हज़ूरे।। ७ ।।
राधास्वामी महिमा अति से भारी।
सुरत हुई उन चरनन धूरे।। ८ ।।

।। शब्द ८ ।।

आज मैं पाया दरस गुरु प्यारे।।टेक।।
दरशन कर हिये होत हुलासा।
बचन सुनत भ्रम मिट गये सारे।। १ ।।
अचरज महिमा सतसँग देखी।
गुरु उपदेश लिया उर धारे।। २ ।।
ध्यान धरत सुर्त घेरी घट में।
गगन ओर चढ़ती धुन लारे।। ३ ।।
मेहर हुई सुर्त अधर चढ़ाई।
तीन लोक के हो गइ पारे।। ४ ।।
राधास्वामी द्याल की महिमा भारी।
कोटिन जीव लिये उन तारे।। ५ ।।

* * * * *

# बचन २५ प्रेम तरंग भाग पाँचवाँ

।। शब्द १ ।।

धुर धाम नियार।
लखे कोई गुरुमुख जाय।। १ ।।
गुरु प्रीति सम्हार।
करे नित सेवा धाय।। २ ।।
गुरु रूप निहार।
ध्यान धर हिये रस पाय।। ३ ।।
गुरु चरन अधार।
सुरत जाय शब्द समाय।। ४ ।।
नई उमँग जगाय।
चरन राधास्वामी परसे आय।। ५ ।।

।। शब्द २ ।।

कैसे उतरूँ पार।
भौ सागर का चौड़ा फाट।। १ ।।
कस होवे जीव उबार।
गुरु बिन कौन लखावे बाट।। २ ।।
सतसँग कर आज सम्हार।
तब मिले भेद गुरु घाट।। ३ ।।

गुरु चरनन धरो पियार।
तब घट का खुले कपाट।। ४ ।।
शब्दा रस लेव सम्हार।
राधास्वामी भरें सुरत का माट।। ५ ।।

।। शब्द ३ ।।

गुरु चरनन प्यार।
लाओ मन मेरे उमँग से।। १ ।।
गुरु आरत धार।
सन्मुख होय प्रेम अँग से।। २ ।।
सुन घट धुन सार।
निकसो जाल उचँग से।। ३ ।।
घट देख बहार।
रँग जाय सुर्त गुरु रंग से।। ४ ।।
राधास्वामी सरन सम्हार।
जीते काल निहँग से।। ५ ।।

।। शब्द ४ ।।

गुरु ले पहिचान।
काज करें तेरा छिन में।। १ ।।
वोही हैं पुरुष सुजान।
प्रगट हुए अब के तन में।। २ ।।

तू सेव चरन धर प्यार।
मत सोच करो कुछ मन में।। ३ ।।
धुन भेद सुनावें तोहि।
और सुरत चढ़ावें गगन में।। ४ ।।
राधास्वामी धरिया नाम।
सुमिरो धर ध्यान अपन में।। ५ ।।

।। शब्द ५ ।।

बिमल चित जोड़ रही।
घट शब्द गुरू धर प्यार।।टेक।।
सुन सुन धुन अब होत मगन मन।
छोड़त किरत असार।। १ ।।
गुरु सतसंगी प्यारे लागें।
नेक न भावे जग व्यवहार।। २ ।।
बचन सुनत मन कँवल खिलाना।
दरशन कर घट होत उजार।। ३ ।।
सुरत चढ़ाय गई नभपुर में।
वहाँ से पहुँची गगन मँझार।। ४ ।।
रा धा स्वा मी किरपा धारी।
मो सी अधम को लिया उबार।। ५ ।।

।। शब्द ६ ।।

जगत बिच भूल पड़ी।
जिव कैसे के उतरे पार।। १ ।।
मन माया का ज़ोर घनेरा।
जीव निबल कस करे सम्हार।। २ ।।
अनेक भोग खैंचें वाहि चहुँ दिस।
भरम रहा इंद्रियन की लार।। ३ ।।
कुटुँब जगत का बंधन भारी।
कस निकसे जिव हुआ लाचार।। ४ ।।
बिना दया सतगुरु पूरे के।
कभी न जग से होय उबार।। ५ ।।
वे दयाल जब जुगत बतावें।
आप होयँ इसके रखवार।। ६ ।।
मन इंद्री तब सीधे चालें।
जुगत कमावें हिये धर प्यार।। ७ ।।
तब निरमल होय चढ़े अधर में।
रा धा स्वा मी चरन निहार।। ८ ।।

।। शब्द ७ ।।

बिकल जिया तरस रहा।
मोहिं दरस दिखा दो जी।।टेक।।

त्रिय तापन सँग तप रही सारी ।
चरन अमी पिला दो जी ।। १ ।।
इंद्रियन सँग नित भरमत डोले ।
सोता मनुआँ जगा दो जी ।। २ ।।
जुगन जुगन से बिछड़ी चरन से ।
अभी पिया से मिला दो जी ।। ३ ।।
शब्द जुगत तुम दीन्ह बताई ।
घट कपट हटा दो जी ।। ४ ।।
राधास्वामी प्यारे गुरू हमारे ।
मोहिं पार लगा दो जी ।। ५ ।।

।। शब्द ८ ।।

मैं तो आय पड़ी परदेश ।
गैल कोई घर की बता दीजो रे ।। १ ।।
मन इन्द्री सँग बहु दुख पाये ।
भेद सुख घर का जना दीजो रे ।। २ ।।
हे गुरु समरथ बन्दी छोड़ा ।
मोहिं चरनों में आज लगा लीजो रे ।। ३ ।।
डरत रहूँ नरकन के दुख से ।
मोहिं जम से आप बचा लीजो रे ।। ४ ।।

शब्द रूप तुम्हरा अगम अपारा।
सोई मोहिं लखा दीजो रे।। ५ ।।
जुगत तुम्हार कमाऊँ उमँग से।
शब्द में सुरत समा दीजो रे।। ६ ।।
रा धा स्वा मी सतगुरु प्यारे।
काज मेरा पूरा बना दीजो रे।। ७ ।।

।। शब्द ९ ।।

गुरु दरशन बिन चैन न आवे।
मैं कौन उपाय करूँ।। १ ।।
काल करम बहु बिघन लगाये।
कैसे उनको दूर करूँ।। २ ।।
मोर जतन कोई पेश न जावे।
अब चरनन में बिनय करूँ।। ३ ।।
हे सतगुरु मोहिं दरस दिखाओ।
निस दिन तुम्हरे बचन सुनूँ।। ४ ।।
बिन सतसँग कुछ काज न सरिहै।
सतसँग में चित जोड़ धरूँ।। ५ ।।
शब्द अभ्यास सम्हार मेहर से।
सुरत गगन में नित्त भरूँ।। ६ ।।
राधास्वामी प्यारे दया बिचारो।
मैं अब तुम्हरी सरन पड़ूँ।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द १० ।।

उमँग मन फूल रहा।
गुरु दरशन पाया री।। १ ।।
तड़प तड़प मोहिं बहु दिन बीते।
आज मेरा भाग जगाया री।। २ ।।
दृष्टि तनी रहती गुरु छबि पर।
मनुआँ चरन समाया री।। ३ ।।
प्रीत बढ़त छिन छिन अब हिये में।
जग व्यवहार भुलाया री।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर करी अब भारी।
मोहिं नीच को लिया अपनाया री।। ५ ।।

।। शब्द ११ ।।

मगन मन केल करत।
घट धुन सँग लागा री।। १ ।।
गुरु चरनन में प्रीत बढ़ावत।
करम भरम सब भागा री।। २ ।।
जन्म जन्म माया सँग भूला।
मेहर से अब के जागा री।। ३ ।।
अस औसर मिले सतगुरु आई।
उन दीन्ह जगाय मेरा भागा री।। ४ ।।

राधास्वामी दया काज हुआ पूरा।
उन सँग खेलूँ फागा री।।५ ।।

।। शब्द १२ ।।

दरस पाय मन बिगस रहा।
गुरु लागे प्यारे री।।१ ।।
बार बार छबि पर बल जाऊँ।
चरन सीस पर धारे री।।२ ।।
कौन वस्तु गुरु आगे राखूँ।
तन मन धन सब वारे री।।३ ।।
क्या मुख ले मैं महिमा गाऊँ।
उन गत मत अगम अपारे री।।४ ।।
जीव पड़े चौरासी भोगें।
गुरु बिन कौन उबारे री।।५ ।।
मेरा भाग जगा किरपा से।
मोहिं जग से कीन्ह नियारे री।।६ ।।
राधास्वामी मेहर से जुगत बताई।
धुन सुन गई दसवें द्वारे री।।७ ।।

* * * * *

# बचन २६ प्रेम तरंग भाग छठा

॥ शब्द १ ॥

चरन गुरु ध्याओ री।
तज जग भय आस॥टेक॥
मन अज्ञानी भरम भुलाना।
फिर फिर चाहत जग में बास॥ १ ॥
बिन सतसंग समझ नहिं आवे।
या ते कर गुरु संग निवास॥ २ ॥
नाम जपत नित शुधता बाढ़े।
राधास्वामी नाम सुमिर हर स्वाँस॥ ३ ॥
सतगुरु चरन ध्यान धर घट में।
निरखे अचरज प्रेम बिलास॥ ४ ॥
दिन दिन मन में बढ़त अनंदा।
उमँग उमँग करता अभ्यास॥ ५ ॥
गुरु की दया परखता छिन छिन।
खेलत रहे नित चरनन पास॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन ओट अब धारी।
पाप पुण्य दोउ हो गये नास॥ ७ ॥

।। शब्द २ ।।

सरन गुरु धार री धर दृढ़ परतीत।।टेक ।।
उमँग अंग ले करो साध सँग।
बचन सुनो तुम देकर चीत।। १ ।।
जग व्यवहार जान सब मिथ्या।
जग जिव सब स्वारथ के मीत।। २ ।।
इन से हट मन चरनन जोड़ो।
हित से धारो भक्ती रीत।। ३ ।।
तन मन इंद्री सब दुखदाई।
बुधि और विद्या सबहि अनीत।। ४ ।।
बिन सतगुरु कोइ भेद न पावे।
मिल अब उनसे कारज कीत।। ५ ।।
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन।
गुरु बल काल करम को जीत।। ६ ।।
मौज निहार करो सब काजा।
मन में धारो गुरु की नीत।। ७ ।।
प्रेम अंग ले ध्यान सम्हारो।
चरन अनंद लेव धर प्रीत।। ८ ।।
अस अभ्यास करो तुम निस दिन।
गुरु रँग भींज रहो तज भीत।। ९ ।।

आस भरोस धार गुरु चरनन।
त्याग देओ जग की विपरीत।।१० ।।
गुरु भक्तन की चाल अनोखी।
धारो रल मिल गुरु संगीत।।११ ।।
घट में परखो अपन उधारा।
गाओ निस दिन राधास्वामी गीत।।१२ ।।

।। शब्द ३ ।।

हठीला मनुआँ माने न बात।।टेक ।।
अपनी ओछी समझ न त्यागे।
सतसँग बचन न चित्त समात।। १ ।।
बारम्बार जक्त संग लिपटे।
भोगन में रहे सदा भुलात।। २ ।।
जग को सत्त जान कर पकड़ा।
निज करता की सुद्ध न लात।। ३ ।।
साध गुरू सँग प्रीत न करता।
जग जीवन सँग मेल मिलात।। ४ ।।
हित का बचन दया कर बोलें।
यह मूरख परतीत न लात।। ५ ।।
जग बंधन हित चित से चाहे।
छूटन की नहिं सुनता बात।। ६ ।।

ऐसे मूरख मन के मौजी।
फिर फिर जग में भटका खात।। ७ ।।
जो चाहें यह जीव गुज़ारा।
तो सतगुरु का पकड़ें हाथ।। ८ ।।
राधास्वामी चरन बसाय हिये में।
भेद पाय फिर सरन समात।। ९ ।।

।। शब्द ४ ।।

कठोरा मनुआँ सुने न बैन।।टेक ।।
जगत भोग में रहे भुलाना।
घट अंतर की परखे न सैन।। १ ।।
दम दम दुखी बिकल रहे तन में।
नहिं पावे सुख चैन।। २ ।।
साध गुरू बहु बिधि समझावें।
नहिं माने उन कहन।। ३ ।।
करम धरम में निस दिन खपता।
पाप और पुण्य भार सिर लेन।। ४ ।।
जब लग सतसँग संत न पावे।
खुले नहिं कभी हिरदे नैन।। ५ ।।
नाम बिना उद्धार न होवे।
राधास्वामी नाम सुमिर दिन रैन।। ६ ।।

राधास्वामी सरन गहो मेरे प्यारे।
छूटे काल करम का देन।। ७ ।।

।। शब्द ५ ।।

मूरख मनुआँ भोग न छोड़े।
याहि कस समझाऊँ री।। १ ।।
बहु बिधि याहि समझौती दीन्ही।
देख भोग ललचाऊँ री।। २ ।।
भोग करे बहु बिधि दुख पावे।
फिर फिर मैं पछताऊँ री।। ३ ।।
बिन गुरु कौन करे मेरी रक्षा।
उन चरनन में धाऊँ री।। ४ ।।
मेहर करें या मन को सम्हालें।
तब निज घर में जाऊँ री।। ५ ।।
सतसँग करूँ बचन उर धारूँ।
शब्द में सुरत लगाऊँ री।। ६ ।।
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला।
मैं तो तुमहीं नित्त मनाऊँ री।। ७ ।।

।। शब्द ६ ।।

हे प्यारे मनुआँ, नेक लगा दे कान।।टेक ।।
खट पट में क्यों अट पट बरते।
झट पट गुरु की कर पहिचान।। १ ।।

शब्द भेद लेकर तू उन से।
सुरत लगा दे धुन में तान।। २ ।।
बिना शब्द उद्धार न होगा।
यह निश्चय कर साँची मान।। ३ ।।
या ते धुन में चित्त लगाओ।।
गुरु की दया संग ले आन।। ४ ।।
सुन सुन धुन घट मिले अनंदा।
सुरत चढ़ाओ अधर ठिकान।। ५ ।।
राधास्वामी चरनन बाँध निशाना।
अलख अगम के पार बसान।। ६ ।।

## बचन २७ प्रेम तरंग भाग सातवाँ

।। शब्द १ ।।

जागी है उमँग मेरे हिये में।
गुरु सतगुरु आरती करूँ मैं।। १ ।।
महिमा सुन सुन बढ़ा पियारा।
गुरु चरन कँवल मिला अधारा।। २ ।।
दृष्टी जोड़ूँ दरस गुरू में।
नित प्रीत सहित बचन सुनूँ मैं।। ३ ।।
ले शब्द भेद नित करूँ अभ्यासा।
देखूँ घट में बिमल तमाशा।। ४ ।।

गुरु स्वरूप धर हिये धियाना।
हैरत में रहूँ निरख के शाना।।५ ।।
चरनन में गुरु के मन हुआ लीन।
हरखत रहे नित्त जैसे जल मीन।।६ ।।
जो जीव चरन में गुरु के लागे।
मन और सुरत उन्हीं के जागे।।७ ।।
जग देखा काल का पसारा।
माया ने उपाये भोग सारा।।८ ।।
जीवन लिया जाल में फँसाई।
निज घर की बाट दी छिपाई।।९ ।।
दुख भोगें दाद को न पावें।
बाहर कोइ जाल से न जावें।।१० ।।
मम भाग उदय हुआ है भारी।
सतगुरु मेरी आप सुध सम्हारी।।११ ।।
चरनों में मुझे लिया बुलाई।
सतसँग में मुझे लिया लगाई।।१२ ।।
निज भेद सुनाय मेहर कीन्ही।
निज चरन सरन की दात दीन्ही।।१३ ।।
मुझ दीन का काज ख़ुद बनाया।
घट में धुन सँग अधर चढ़ाया।।१४ ।।
गुन गाउँ मैं प्यारे गुरु के हर दम।
जपता रहूँ राधास्वामी दम दम।।१५ ।।

॥ शब्द २ ॥

सुनी मैं महिमा सतसँग सार।
जगा मेरे हिये में गहिरा प्यार॥ १ ॥
खोजता आया गुरु के पास।
बचन सुन हुआ चरन विश्वास॥ २ ॥
दरस गुरु आनँद बरना न जाय।
सुरत मन छिन छिन रहे लुभाय॥ ३ ॥
कहूँ क्या सोभा सतसँग गाय।
प्रेम रहा सब के हिरदे छाय॥ ४ ॥
निरख अस लीला उमँगा मन।
पड़ा अब निज कर गुरु चरनन॥ ५ ॥
बचन गुरु लागे अति प्यारे।
मनन कर सार हिये धारे॥ ६ ॥
प्रेम अब दिन दिन रहा उमँगाय।
हिये में नइ परतीत जगाय॥ ७ ॥
उठत अब हिये में नित्त उमंग।
करूँ मैं निस दिन सतगुरु संग॥ ८ ॥
सेव गुरु करता उमँग जगाय।
गुरू परताप रहा हिये छाय॥ ९ ॥
मेहर से दीन्हा शब्द उपदेश।
सुनाया निज घर का संदेश॥१० ॥

सुरत मन धावत घर की ओर।
पकड़ कर घट में धुन की डोर।।११ ।।
ध्यान गुरु धरत मिला आनंद।
कटे सब करम भरम के फंद।।१२ ।।
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार।
गुरु की मेहर लखूँ हर बार।।१३ ।।
शब्द रस पियत रहूँ घट माहिं।
बसूँ मैं गुरु चरनन की छाँह।।१४ ।।
आरती गुरु सन्मुख धारूँ।
चरन पर तन मन धन वारूँ।।१५ ।।
करी राधास्वामी मेहर बनाय।
दिया मेरा बेड़ा पार लगाय।।१६ ।।
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार।
हुआ मोहिं चरन सरन आधार।।१७ ।।

।। शब्द ३ ।।

परम गुरु राधास्वामी प्यारे, जगत में
देह धर आये, शब्द का देके उपदेशा,
हंस जिव लीन्ह मुक्ताये।। १ ।।
किया सतसंग नित जारी, दया जीवों
पै की भारी, करम और भरम गये सारे,
जीव चरनों में घिर आये।। २ ।।

भक्ति का आप दे दाना, दिया जीवन को सामाना, देख हुआ काल हैराना, रही माया भी मुरझाये।। ३ ।।

बढ़ा कर चरन में प्रीती, दई घट शब्द परतीती, काल और करम को जीती, सुरत मन उलट कर धाये।। ४ ।।

जोत लख सूर निरखा री, परे सत शब्द परखा री, अलख और अगम पेखा री, चरन राधास्वामी परसाये।। ५ ।।

।। शब्द ४ ।।

आज गुरु आये जीव उबारन।
आरत उन के सन्मुख वारन।। १ ।।
दीन हीन हिये थाल सजावन।
बिरह अनुराग की जोत जगावन।। २ ।।
चरन कँवल गुरू प्रेम बढ़ावन।
दृढ़ परतीत हिये बिच लावन।। ४ ।।
सुरत शब्द में नित्त लगावन।
नभ की ओर सुरत मन धावन।। ५ ।।
धुन घंटा और संख बजावन।
अदभुत रूप जोत दरसावन।। ६ ।।

त्रिकुटी जाय सुरत हुई पावन।
हंसन संग मानसर न्हावन।। ७ ।।
भँवर गुफा मुरली धुन गावन।
सतपुर सुनी धुन बीन सुहावन।। ८ ।।
रा धा स्वा मी चरन धियावन।
मेहर दया उन छिन छिन पावन।। ९ ।।

।। शब्द ५ ।।

नौ द्वारन में सब कोइ बरते।
दसवाँ निरखे बिरला कोय।। १ ।।
जिन को मेहर से सतगुरु भेंटे।
तिन जाना यह मारग गोय।। २ ।।
भेद पाय उन जुगत कमाई।
निस दिन सूरत शब्द समोय।। ३ ।।
घंटा संख सुनत घट चाली।
गरज मृदंग सुनी धुन दोय।। ४ ।।
माया काल बहु दाव चलाये।
गुरु बल लीन्ही सूरत धोय।। ५ ।।
निरमल होय गई दस द्वारे।
गुफा परे निरखा पद सोय।। ६ ।।
राधास्वामी प्यारे दया करी अब।
चरनन में लई सुरत मिलोय।। ७ ।।

# बचन २८ प्रेम लहर भाग पहला

।। शब्द १ ।।

ठुमक चढ़त सुरत अधर,
सुन सुन घट धुनियाँ।।टेक।।
मन इंद्री सब उठे जाग, सतगुरु के
चरन लाग। जगत भोग छोड़ राग,
गगन ओर चलियाँ।। १ ।।
श्याम कंज द्वार तोड़, ऊपर को चली
दौड़। घंटा संख सुनत शोर,
जोत रूप लखियाँ।। २ ।।
गगन गरज सुनत चली, ररंकार धुन
संग मिली। बेद कतेब सब रहे तली,
काल करम दलियाँ।। ३ ।।
महासुन्न अंध घोर, मुरली धुन करत
शोर। बीन सुनी सतपुर की ओर,
पुरुष गोद पलियाँ।। ४ ।।
वहँ से भी गई पार, अलख अगम धुन
सम्हार। राधास्वामी पद निहार,
चरन सरन रलियाँ।। ५ ।।

।। शब्द २ ।।

आज हुआ मन मगन मोर।
सुन सुन गुरु बतियाँ।।टेक।।

राधास्वामी महिमा अपार। सुरत शब्द जुगत सार। करम धरम दिये निकार।
गुरु चरनन रतियाँ।। १ ।।

गुरु स्वरूप लाय ध्यान। धुन में सुर्त धरी तान। मन के दिये तोड़ मान।
काल जाल कटियाँ।। २ ।।

मन और सुरत अधर धाय। नभ द्वारा दिया तोड़ जाय। जोत रूप रहा जगमगाय।
बंकनाल धसियाँ।। ३ ।।

त्रिकुटी मृदंग बजाय। सारँग सँग रही गाय। मुरली धुन गुफा सुनाय।
सत्त रूप लखियाँ।। ४ ।।

राधास्वामी सतगुरु दयाल। कीन्हा मोहिं अब निहाल। अलख अगम के पार चाल।
चरन अंबु छकियाँ।। ५ ।।

।। शब्द ३ ।।

बिरहन सुर्त तजत भोग।
गुरु चरनन रतियाँ।।टेक ।।

सतसँग कर सुर्त उठी जाग, जगत किरत फीकी लाग, परमारथ का मिला भाग,
धारा सत मतियाँ।। १ ।।

मन चित से हुई दीन, गुरु सँग प्रेम भाव कीन्ह, सुरत शब्द जोग लीन्ह,
सुनती गुरु बतियाँ।। २ ।।

सुन सुन धुन मगन होत, घट में प्रकटी अलख जोत, अमृत का खुला सोत,
पी पी तिरपतियाँ ।। ३ ।।

घुमड़ घुमड़ गरजत गगन, मन माया होवत दमन, सूर चाँद तारा खिलन,
निरखत हरखतियाँ।। ४ ।।

सुन में सुर्त हुई सार, महासुन मैदाँ निहार, मुरली धुन गुफा सम्हार,
लख सत्तपुरुष गतियाँ।। ५ ।।

अलख अगम के पार देख, राधास्वामी पद अलेख, जहँ नहिं रूप रंग रेख,
धुर पद परसतियाँ।। ६ ।।

।। शब्द ४ ।।

प्रेमी सुर्त उमँग उमँग।
गुरु सनमुख आई।।टेक ।।

भाव भक्ति हिये धार। करम धरम भरम टार। भोग बासना तुरत जार।
ले सतगुरु सरनाई।। १ ।।

सतसँग में नित्त जाग। गुरु चरनन बढ़त लाग। परमारथ का जगत भाग।
गुरु की दया पाई।। २ ।।
शब्द जोग नित कमाय। मन और सुरत अधर धाय। घट में आनंद पाय।
दिन दिन मगनाई।। ३ ।।
तिल का लिया ताला तोड़। घट में अब मचा शोर। काल करम का घटा ज़ोर।
गुरु पद परसाई।। ४ ।।
बेनी अश्नान कीन्ह। मुरली धुन सुनी बीन। राधास्वामी चरन हुई दीन।
छिन छिन बल जाई।। ५ ।।

।। शब्द ५ ।।

प्रेमी जन बिकल मन।
गुरु दरशन चाहत।।टेक ।।
सुन सुन सतसँग बिलास। चित में रहे नित उदास। माँगत गुरु सँग निवास।
बार बार धावत।। १ ।।
दरशन पाय मगन होत। आनँद का मानो खुला सोत। कलमल के सब दाग़ धोत।
प्रेम प्रीत लावत ।। २ ।।

तन मन धन गुरु पै वार। भोग बासना
तजत झाड़ । शब्द भेद ले अपार।
गुरु गुन नित गावत।। ३ ।।
घट में दरशन सार पाय। शब्द शोर
सुनत जाय। गुरु सतगुरु पद परस
धाय। मन में हरखावत।। ४ ।।
चढ़ चढ़ सुर्त हुई सार, आगे को
क़दम धार। राधास्वामी पद सोभा अपार।
निरख निरख मुसक्यावत।। ५ ।।

।। शब्द ६ ।।

खोजी जन सरस मन,
सुन सुन गुरु बचना।।टेक।।
कुल मालिक की ख़बर पाय, मारग का
सब भेद गाय। सहज जुगत दई जनाय।
घट धुन में रचना।। १ ।।
घट घट में सुरत सार। शब्द ही सच्चा
करतार। दोऊ मिल उलट चढ़ें पार।
धुर पद जाय लखना।। २ ।।
सतसँग के बचन धार। गुरु चरनन में
लाय प्यार, राधास्वामी सरन सम्हार।
जग से छिन छिन हटना।। ३ ।।

गुरु स्वरूप ध्यान लाय। मन और सुरत अधर धाय। शब्द शोर घट में सुनाय।
सहज सहज चलना।। ४ ।।
सतगुरु मोहिं कीन्हा निहाल। काल करम का काटा जाल। राधास्वामी पद पूरन
दयाल। चढ़ चढ़ जाय मिलना।। ५ ।।

।। शब्द ७ ।।

चंचल चित चपल मन।
नित जग में भरमावत।।टेक ।।
भक्ती की गहो रीत। संतन का लेव सीत। जग में कोइ नाहिं मीत।
धोखा क्यों खावत।। १ ।।
प्रेमी जन सँग मेल लाय। सतसँग में तुम बैठो जाय। छिन छिन राधास्वामी नाम गाय।
अस करम नसावत।। २ ।।
मानो गुरु सीख सार। चरनन में लाओ अधिक प्यार। गुरु ध्यान धरो चित सम्हार।
छिन छिन रस पावत।। ३ ।।
शब्द का ले उपदेश सार। संशय भरम सब देव निकार। सूरत धुन सँग पियार।
नित अधर चढ़ावत।। ४ ।।

नित नेम से करूँ भजन सार। प्यारे राधास्वामी सरन सम्हार। उन चरनन को रहूँ निहार।
दूजा कोइ और न भावत।। ५ ।।

।। शब्द ८ ।।

आओ रे जीव आओ आज।
गहो राधास्वामी सरना।।टेक ।।
आज ही निज करो काज। छोड़ो कुल जग की लाज। भक्ति भाव लाय साज।
चरनन चित धरना।। १ ।।
सतसँग करो चित से चेत। गुरु चरनन में लाओ हेत। राधास्वामी छिन छिन दया लेत।
सुर्त शब्द माहिं भरना।। २ ।।
मन और सुरत उठे जाग। नभ द्वारे से निकल भाग। घट में सुन सुन शब्द राग।
बहुर अधर चढ़ना।। ३ ।।
गगन ओर सुरत तान। त्रिकुटी धुन सुनी कान। गुरु के चरन परस आन।
मन माया हरना।। ४ ।।
तिरबेनी अश्नान कर। मगन होय सुर्त चढ़ी अधर। सत्त शब्द ध्यान धर।
भौ सागर तरना।। ५ ।।

अलख अगम के पार जाय। प्यारे राधास्वामी दरस पाय। छिन छिन रहे उन महिमा गाय।
चरन सरन पड़ना।। ६ ।।

।। शब्द ९ ।।

मन इन्द्री आज घट में रोक।
गुरु मारग चलना।।टेक ।।

गुरु चरनन में लाय प्यार। राधास्वामी धाम की आस धार। काल करम के बिघन टार।
गुरु की गोद पलना।। १ ।।

सतसँग के बचन सार। चेत सुनो और हिये में धार। घट में चलो सतगुरु की लार।
मन माया दलना।। २ ।।

जगत भाव और मोह त्याग। भोगन में तजो राग। सँग सतगुरु तू खेल फाग।
क्यों जग भाटी जलना।। ३ ।।

शब्द जुगत नित कमाय।गुरु स्वरूप ध्यान लाय। राधास्वामी चरन सरन ध्याय।
गुरू चरनन रलना।। ४ ।।

श्याम सेत घाट पार। सेत सूर लख उजार। सत्त अलख अगम निहार।
राधास्वामी से मिलना।। ५ ।।

।। शब्द १० ।।

मन इन्द्री को घट में घेर।
गुरु जुगत कमाओ।।टेक ।।
तीसर तिल में दृष्टि जोड़। मन की गुनावन
देओ छोड़। घट में सुन शब्द शोर।
मन सुरत लगाओ।। १ ।।
गुरु स्वरूप अगुवा बनाय। सहस कँवल दल
पहुँचो धाय। धुन घंटा और संख गाय।
गगन ओर धाओ।। २ ।।
त्रिकुटी सुन गरज धुन। चंद्र रूप लख जाय
सुन। मुरली धुन पड़ी श्रवण।
सतपुरुष ध्यान लावो।। ३ ।।
राधास्वामी कीन्ही दया अपार। काल और
महाकाल रहे हार। काट दिये सब करम झाड़।
हरदम उन गुन गाओ।। ४ ।।
वहँ से भी चली सुरत। अलख अगम जाय
किया निरत। चरनन पर सीस धरत।
राधास्वामी पद पाओ।। ५ ।।

।। शब्द ११ ।।

मनुआँ क्यों सोचे नाहिं।
जग में दुख भारी।।टेक ।।

जल्दी से उठ चेत जाग। सतसँग में तू
जाव भाग। सतगुरु के चरन लाग।
तज करम धरम सारी।। १ ।।
जग में कोइ नाहिं मीत। सतसँग में धरो
चीत। गुरु भक्ती की धार रीत।
मत भरमे प्यारी।। २ ।।
सुरत शब्द उपदेश सार। गुरु से ले
धर के प्यार। गुरु स्वरूप ध्यान धार।
निरखो घट उजियारी।। ३ ।।
पिरथम लख जोत सार। निरखो फिर
सूरज उजार। चंद्र रूप सुन में निहार।
धुन मुरली धारी।। ४ ।।
सत्त अलख अगम निहार। सूरत अब हुई
सार। राधास्वामी पद निरखा अपार।
चरनन बलिहारी।। ५ ।।

।। शब्द १२ ।।

प्यारी ज़रा कर बिचार।
यहाँ सदा नहीं रहना।।टेक ।।
इक दिन देह होत पात। छूटे कुल कुटुम्ब
नात। आज ही सुन निज घर की बात।
क्यों जम के दंड सहना।। १ ।।

सतसँग में तुम बैठो जाय। सतगुरु की सरन आय। भक्ति भाव साज लाय।
सीस चरन देना।। २ ।।
सुरत शब्द जुगत धार। गुरु चरनन में लाय प्यार। निरखो घट में बहार।
नित रस ही लेना।। ३ ।।
सेवा कर सतगुरु रिझाय। मेहर दया उन परख आय। घट में रहे नित हरख छाय।
सुरत शब्द गहना।। ४ ।।
श्याम सेत के जाय पार। सुन धुन मुरली बीन सार। राधास्वामी प्रीतम चरन निहार।
सुनती निज बैना।। ५ ।।

।। शब्द १३ ।।

मन रे क्यों माने नाहिं।
जग सँग क्या लेना।। टेक ।।
या जग के सकल भोग। जानो सब असाध रोग। स्थिर कोई नाहिं होग।
गुरु चरनन चित देना।। १ ।।
धन सम्पत और कुल कुटुम्ब। स्वारथ के सबहि संग। भक्ती में करें भंग।
इन सँग नहिं बहना।। २ ।।

सतसँग की क़दर जान।सतगुरु सँग करो आन। सहज सहज कर पिछान।
सीस चरन देना।। ३ ।।
शब्द जुगत यह सबका सार। नित्त कमाओ धर के प्यार। घट में लख बिमल बहार।
नित्त मगन रहना।। ४ ।।
राधास्वामी सरन धार। परखो उन दया अपार। भौजल के जाव पार।
फिर दुख सुख नहिं सहना।। ५ ।।

।। शब्द १४ ।।

मन रे चल गुरु के पास।
घर का भेद लीजे।।टेक ।।
यह जग है काल देस। सच्चे सुख का नहीं लेस। घर चल धारो हंस भेस।
प्रेम रंग भींजे।। १ ।।
वह घर है अगम अपार। सतगुरु की चलो लार। तन मन देव चरनों पै वार।
नित्त भक्ति कीजे।। २ ।।
अब ही करो सतसंग सार। भूल भरम सब देव निकार। जल्दी कर नहिं देर धार।
नित काया छीजे।। ३ ।।

गुरु का आदि उपदेश मान। चरनन में अब लाओ ध्यान। सूरत घट धुन लगान। अमृत रस पीजे।। ४ ।।

चढ़ चढ़ सुर्त गई पार। बीन बाँसुरी धुन सम्हार। पहुँची राधास्वामी धाम अपार। हरख हरख रीझे।। ५ ।।

।। शब्द १५ ।।

चल री सुर्त गुरु के देस।
धर हिये अनुरागा।।टेक ।।

सतगुरु के जाव पास। देखो सतसँग बिलास। छोड़ो अब जग की आस। चित धर बैरागा।। १ ।।

शब्द का ले उपदेश सार। घट में सुन धुन झनकार। गुरु स्वरुप ध्यान धार। काम क्रोध त्यागा।। २ ।।

लख जग का व्यवहार असार। स्वारथ के सबहि यार। मन हुआ इनसे बेज़ार। गगन ओर भागा।। ३ ।।

नभ में लख जोत अजूब। त्रिकुटी गुरु का स्वरूप। सुन में खिला चंदा अनूप। सोहँग शब्द जागा।। ४ ।।

सत्त पुरुष का दरस पाय। अलख अगम को परसा जाय। राधास्वामी धाम की ओर धाय। चरन सरन लागा।। ५ ।।

।। शब्द १६ ।।

प्यारी क्यों सोच करे।।
प्यारे राधास्वामी तेरे सहाई।।टेक ।।

जब से गुरु दरस पाय। सतसँग में लगी धाय। बचन रहे उन चित समाय। गही राधास्वामी सरनाई।। १ ।।

सतसँग की निरखत बहार। दिन दिन हिये में बढ़त प्यार। करम धरम दिये निकार। घट होत सफ़ाई।। २ ।।

सुरत शब्द अभ्यास सार। नित्त कमावत यही कार। मन के गये सब विकार। गुरु की दया पाई।। ३ ।।

सतगुरु हुए अब दयाल। घट में सुनाई धुन रसाल। काल करम का काटा जाल। सुरत अधर जाई।। ४ ।।

बेनी अश्नान कर। सत पद लखा चढ़ अधर। राधास्वामी चरनन ध्यान धर। निज घर में आई।। ५ ।।

# बचन २९ प्रेम लहर भाग दूसरा

।। शब्द १ ।।

चलो प्रेम सभा से मिलो री सखी।
जहँ राधास्वामी गुन नित गाय रहे।।टेक।।
भक्ती रीत जनाय खोल कर।
शब्द की महिमा सुनाय रहे।। १ ।।
प्रेमी जन जहँ हिल मिल चालें।
गुरु चरनन चित लाय रहे।। २ ।।
तन मन धन गुरु चरनन वारत।
नइ नइ उमँग जगाय रहे।। ३ ।।
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन।
नइ नइ सेवा लाय रहे।। ४ ।।
गुरु को पल पल माहिं रिझावत।
राधास्वामी चरन समाय रहे।। ५ ।।

।। शब्द २ ।।

चलो घट में दौरा करो री सखी।
जहँ अनहद बाजे बाज रहे।।टेक।।
नैनन में तुम जाय बसो। फिर पचरंगी
फुलवार लखो। तिल खिड़की को खोल
धसो। जहँ घंटा संख नित गाज रहे।। १ ।।

जोत उजार लखत सुर्त चाली। बंक परे धुन गगन सम्हाली। गुरु स्वरूप लख हुई निहाली। जहँ सूर चंद बहु लाज रहे।।२।।
सुन धुन में अब सुरत धरो। जहँ तिरबेनी अश्नान करो। हंसन से चित हरख मिलो।जहँ अनेक अखाड़े साज रहे।।३।।
भँवर गुफा मुरली धुन गाओ। सुन २ बीन सत्तपुर धाओ। हंसन संग आरती लाओ। जहँ सतगुरु संत बिराज रहे।।४।।
राधास्वामी दया बना सब काजा।
पूरन भक्ती मिला अब साजा।
काल और महाकाल रहे लाजा।
करम धरम सब दाज रहे।।५।।

।। शब्द ३ ।।

निज घट में खोज पिया को सखी।
क्यों भरमे जगत उजाड़ा री।।टेक।।
सतगुरु से ले घट भेद सही।
कर सतसँग उन का सारा री।। १ ।।
तन मन और इंद्री रोक चलो।
धर सतगुरु चरनन प्यारा री।। २ ।।

धुन घट में सुन सुन अधर चढ़ो।
जहँ बहती निरमल धारा री।। ३ ।।
कल मल धोय हुई सुर्त निरमल।
लखती जोत उजारा री।। ४ ।।
बंक पार धुन गगन सुनी।
सुन में जाय निरख बहारा री।। ५ ।।
महासुन्न परे लख भँवर गुफा।
सतपुर सत दरस निहारा री।। ६ ।।
अलख अगम के पार लखा।
रा धा स्वा मी धाम नियारा री।। ७ ।।

।। शब्द ४ ।।

सतगुरु के मुख सेहरा चमकीला।
अचरज शोभा देत सखी।। १ ।।
फूल गूँथ कर प्रेमन लाई।
महक सुगँध सब लेत सखी।। २ ।।
आरत कर सब मगन हुए।
अब तन मन देते भेंट सखी।। ३ ।।
सूर किया गुरु खेत जिताया।
काल को डाला रेत सखी।। ४ ।।
राधास्वामी द्याल दया की भारी।
सहज मिला पद सेत सखी।। ५ ।।

* * * * *

# बचन ३० प्रेम लहर भाग तीसरा

## होली

।। शब्द १ ।।

चल देखिये सतसँग में,
जहाँ निरमल फाग रचोरी।।टेक ।।
सतगुरु जहँ बचन सुनावें। प्रेमी जन सुन हरखावें। दरशन की शोभा निरखत। मन में गुरु भाव बढ़ोरी।। १ ।।
भक्ती रँग बरसत छिन छिन। हिये प्रेम बढ़त अब दिन दिन।गुरु पै सब वारत तन मन। धन धन गुरु शोर मचोरी।। २ ।।
काल अपने खेल खिलावे। जीवन को सद भरमावे। गुरु निकट न आने पावे। घर इसका आज तजो री।। ३ ।।
ले सुरत शब्द उपदेशा। घट धुन में करो प्रवेशा। अस छूटे काल कलेशा। गुरु पद जाय दरस तको री।। ४ ।।
सुन और महासुन पारा। चढ़ी सुरत पकड़ धुन धारा। राधास्वामी धाम निहारा। जहँ अचरज खेल खिलो री।। ५ ।।

।। शब्द २ ।।

चलो आज गुरु दरबारा।
जहँ होवत सहज उधारा।।टेक ।।
मैं करम धरम भरमानी। भेषन में रही भुलानी। गुरु महिमा नेक न जानी। जो करें जीव निस्तारा ।।१ ।।
धुर दया हुई जब मुझ पर। गुरु भेदी मिलिया आकर। उन महिमा कही जना कर। गुरु चरन करो आधारा।। २ ।।
सतगुरु फिर किरपा धारी। दिया भेद मोहिं निज सारी। सुर्त शब्द जुगत अति भारी। समझाई करके प्यारा।। ३ ।।
मन उमँग सहित घट लागा। सुन शब्द बढ़ा अनुरागा। जग से हुआ चित बैरागा। गुरु रूप हिये में धारा।। ४ ।।
दरशन की उठी अभिलाषा। चल आई सतगुरु पासा। सतसंग का देख बिलासा सुन सुन गुरु बचन सम्हारा।। ५ ।।
क्या महिमा सतसँग गाऊँ। या सम कोइ जतन न पाऊँ। मन के सब भरम हटाऊँ। गुरु अस्तुत करूँ सँवारा।। ६ ।।

गुरु निरख दीनता मेरी। करी मुझ पर
मेहर घनेरी। मैं हुई उन चरनन चेरी।
तन मन धन गुरु पर वारा।। ७ ।।
मन हुआ प्रेम रस माता। गुरु सेव करत
दिन राता। जग जीवन सँग नहिं भाता।
अब मिल गया सतसँग सारा।। ८ ।।
गुरु ध्यान धरत मन मगना। धुन सुनत चढ़त
सुर्त गगना। सतसँग में निस दिन जगना।
मिला राधास्वामी सरन सहारा।। ९ ।।
गुरु चरनन बिनती धारी। मोहिं लीजे बेग
सुधारी। अपना कर दया बिचारी।
भौजल के पार उतारा।। १० ।।
बल काल करम का तोड़ो। सूरत निज
चरनन जोड़ो। माया के परदे फोड़ो।
हरखूँ लख धाम नियारा।। ११ ।।
राधास्वामी सतगुरु प्यारे। तुम गत मत
अगम अपारे। मैं जिउँ तुम नाम अधारे।
दम दम तुम चरन निहारा।। १२ ।।

।। शब्द ३ ।।

चलो सतगुरु घाट सखी री।
लेव मन और सुरत धुलाई।। टेक ।।

जहँ प्रेम की बरखा भारी। सतसँग जल
नितही जारी।सब कल मल धोवत आ री।
घट द्वारा लेत खुलाई।। १ ।।
सतसँग कर करो गुरु सेवा। लो उन से
घट का भेवा। छोड़ो सब देवी देवा।
इक राधास्वामी इष्ट बँधाई।। २ ।।
सुर्त शब्द की धारो करनी। मन सूरत
धुन में धरनी। या बिधि भौसागर तरनी।
नित सतगुरु रूप धियाई।। ३ ।।
अस करो नित्त अभ्यासा। मन सूरत चढ़ें
अकाशा। देखें वहँ बिमल बिलासा।
निरमलता होत सफाई।। ४ ।।
सतगुरु निज दया बिचारी। जीवन का
करें उपकारी। राधास्वामी सरन सम्हारी।
नित राधास्वामी नाम जपाई।। ५ ।।

।। शब्द ४ ।।

चल देखिये गुरु द्वारे।
जहँ प्रेम समाज लगारी ।।टेक ।।

प्रेमी जन जुड़ मिल बैठे। राधास्वामी
महिमा कहते। गुरु दरशन रस नित
लेते। इक इक का भाग जगा री।। १ ।।

मैं नीच अधम नाकारा। सतसँग का लीन्ह सहारा। गुरु लेहैं मोहिं सुधारा। उन चरनन प्रीत पका री।। २ ।।

गुरु बचन सुनत मन मोहा। तब भूल भरम सब खोया। फिर करम धरम भी सोया। यों माया काल ठगा री।। ३ ।।

घट अंतर ध्यान लगाई। सुन सुन धुन अति हरषाई। मन सूरत अधर चढ़ाई। गुरु अचरज दरस तका री।। ४ ।।

गगना में बजी बधाई। बिरोधी सब रहे मुरझाई। राधास्वामी की फिरी दुहाई। उन महिमा छिन छिन गा री।। ५ ।।

।। शब्द ५ ।।

चल खेलिये सतगुरु से।
रँग होली आज सखी री।।टेक।।
दरशन कर नैन निहारी।
गुरु शोभा आज लखी री।। १ ।।
सतसँग के बचन सुहावन।
सुन २ हिये प्रीत जगी री।। २ ।।
सुर्त शब्द जुगत अनमोला।
ले गुरु से आज तरी री।। ३ ।।

खुल खेलूँ फाग नवीना।
गुरु चरनन सुरत धरी री।। ४ ।।
घट प्रेम रंग नित भरती।
गुरु चरनन छिड़क चली री।। ५ ।।
अस खेलत होली भारी।
नभ तज सुर्त गगन चढ़ी री।। ६ ।।
दस द्वारा खोलत चाली।
हंसन संग उमँग मिली री।। ७ ।।
सतपुर सतगुरु से भेंटी।
राधास्वामी चरनन जाय बसी री।। ८ ।।

।। शब्द ६ ।।

जग भाव तजो प्यारी मन से।
सतसंग में चित्त धरो री।।टेक ।।
सब करम धरम दुखदाई।
इन सँग क्यों भरम बहो री।। १ ।।
तज टेक पुरानी प्यारी।
राधास्वामी सरन गहो री।। २ ।।
ले गुरु से शब्द उपदेशा।
सुर्त तिल में आज भरो री।। ३ ।।
धुन सुन २ होत मगन मन।
गुरु चरनन भाव बढ़ो री।। ४ ।।

सुर्त उलटत नभ चढ़ झाँकी।
घंटा और संख सुनो री।। ५ ।।
चढ़ गगन अधर को धाई।
धुन मुरली बीन बजो री।। ६ ।।
राधास्वामी सतगुरु प्यारे।
उन चरनन जाय पड़ो री।। ७ ।।

।। शब्द ७ ।।

मोहिं दरस देओ गुरु प्यारे।
क्यों एती देर लगइयाँ।।टेक।।
मैं माँगत माँगत थकियाँ।
कोई जतन पेश नहिं जइयाँ।। १ ।।
बिन दया तुम्हारी दाता।
यह जीव कहा कर सकियाँ।। २ ।।
अब परदा देओ उठाई।।
तुम दरशन छिन छिन तकियाँ।। ३ ।।
मन इन्द्री ज़ोर चलावत।
जब तब मोहिं नाच नचइयाँ।। ४ ।।
दूतन से बस नहिं चालत।
मैं रहूँ नित्त मुरझइयाँ।। ५ ।।
निज मन से खूँट छुड़ाओ।
मेरी सूरत गगन चढ़इयाँ।। ६ ।।

सुन में लख चंद्र उजारा।
हंसन सँग केल करइयाँ।। ७ ।।
मुरली धुन गुफा सम्हालूँ।
सतपुर जाय बीन बजइयाँ।। ८ ।।
लख अलख अगम दरबारा।
राधास्वामी चरन समइयाँ।। ९ ।।

।। शब्द ८ ।।

सतसँग की क़दर न जानी।
मन बिरथा बैस गँवाई।।टेक ।।
दुरलभ नर देही पाई।
याहि सुफल करो मेरे भाई।। १ ।।
गुरु चरन पकड़ दृढ़ आई।
तब दया मेहर कुछ पाई।। २ ।।
निज घर का देहिं सँदेसा।
घट धुन में सुरत लगाई।। ३ ।।
जग भोग से कर बैरागा।
गुरु चरनन प्रीत बढ़ाई।। ४ ।।
शब्दा रस तोहि पिला कर।
मन सूरत अधर चढ़ाई।। ५ ।।
राधास्वामी दीन दयाला।
भौ सागर सहज लँघाई।। ६ ।।

* * * * *

।। शब्द ९ ।।

चरनन में चित्त लगाओ।
जग आसा दूर हटाओ।। १ ।।
तब ध्यान रूप रस पाओ।
धुन शब्द सुनत हरखाओ।। २ ।।
इंद्री रस भोग घटाओ।
मन चंचल थीर कराओ।। ३ ।।
गुरु चरनन प्रेम बढ़ाओ।
धुन सँग सुर्त अधर चढ़ाओ।। ४ ।।
लख जोत सूर और चंदा।
धुन मुरली गुफा सुनाओ।। ५ ।।
सतपुर में बीन बजाओ।
फिर अलख अगम को धाओ।। ६ ।।
ले मेहर दया सतगुरु की।
राधास्वामी चरन समाओ।। ७ ।।

।। शब्द १० ।।

तुम सोचो अपने मन में।
या जग में दुक्ख घनेरा।।टेक ।।
यहँ चार दिना का रहना।
फिर चलना छोड़ बखेड़ा।। १ ।।

सब स्वारथ सँग आय अटके।
कोइ साँचा संग न हेरा।। २ ।।
गुरु हैं हितकारी तेरे।
उनके सँग करो निबेड़ा।। ३ ।।
सतसँग कर उनका चित से।
ले उनसे जुगत सबेरा।। ४ ।।
हित से करो नित अभ्यासा।
गुरु शब्द का बाँधो बेड़ा।। ५ ।।
चढ़ उतरो भौजल पारा।
सत शब्द सुनो धुन नेड़ा।। ६ ।।
राधास्वामी सरन सम्हारो।
छूटे सब मेरा तेरा।। ७ ।।

## बचन ३१ प्रेम लहर भाग चौथा

।। शब्द १ ।।

दरस देओ प्यारे,
अब क्यों देर लगइयाँ हो।।टेक ।।
पिरथम जब मोहिं दरशन दीन्हे।
मन और बुद्धि मेरे हर लीन्हे।
बिरह अगिन हिये में धर दीन्हे।
सुलगत नित्त तपइयाँ हो।। १ ।।

बचन सुना मेरी प्रीत बढ़ाई।
शब्द लखा परतीत दृढ़ाई।
करम भरम सब दूर हटाई।
घट में कार कमइयाँ हो।। २ ।।
शब्द रूप की सुन २ महिमा।
घट में जागी उमँग नवीना।
रैन दिवस नहिं पाऊँ चैना।
मीना सम जल बिन तड़पइयाँ हो।। ३ ।।
राधास्वामी सतगुरु पिता हमारे।
जियत रहूँ उन चरन अधारे।
मेहर से लिया मोहिं आप सम्हारे।
उन चरनन पर बल २ जइयाँ हो।। ४ ।।

।। शब्द २ ।।

चलो घर प्यारे,
क्यों जग में नित्त फसइयाँ हो।।टेक।।
देह संग नित दुख सुख सहते।
मन इंद्री भोगन में बहते।
सतगुरु दया धार अब कहते।
चेतो तुम गहो सरन गुसइयाँ हो।। १ ।।
सतगुरु घर का भेद बतावें।
शब्द संग मन सुरत चढ़ावें।

काल करम से खूँट छुड़ावें।
उन संग पार चलइयाँ हो।। २ ।।
अधर धाम सतगुरु का डेरा।
पहुँचे वहाँ जिन धुन घट हेरा।
सतगुरु दया सुरत ले घेरा।
प्यारे राधास्वामी चरन समइयाँ हो।। ३ ।।

।। शब्द ३ ।।

गुरु बचन सम्हारो,
क्यों मन सँग भरमइयाँ हो।।टेक ।।
मन की कहन ज़रा मत मानो।
उस को पूरा बैरी जानो।
दृष्टि जोड़ सुर्त घट में तानो।
अनहद शब्द सुनइयाँ हो।। १ ।।
सतगुरु हैं तेरे साँचे मीता।
उन सँग काल करम दोउ जीता।
शब्दा रस नित घट में पीता।
चरनन सुरत धरइयाँ हो।। २ ।।
राधास्वामी दाता हुए सहाई।
मेहर से मेरी सुरत जगाई।
चरनन में लिया जकड़ लगाई।
उन सँग काज बनइयाँ हो।। ३ ।।

* * * * *

# बचन ३२ प्रेम लहर भाग पाँचवाँ

।। शब्द १ ।।

यह देश मुझे नहिं भावे। यहाँ दुख सुख नित ही सहना। कोइ भेद देओ वा घर का। जहाँ सदही आनँद लेना। मैं उसके चरन पड़ूँ री ।। १ ।।
सतगुरु घर भेद सुनावें। चलने की जुगत लखावें। जो सरनी उनकी आवें। तिन को ले धुर पहुँचावें। मैं उन मिल काज करूँ री।। २ ।।
मोहिं मिल गये दाता प्यारे।उन चरन सीस पर धारे। सतसँग कर बचन सुना रे। दरशन कर पाप कटा रे। हिये में उन प्रेम भरूँ री ।। ३ ।।
गुरु मेहर करी मो पै भाई। सुर्त शब्द जुगत बतलाई। यह देश काल का गाई। मन सूरत अधर चढ़ाई। घट में धुन शब्द सुनूँ री।। ४ ।।
चढ़ चढ़ सुर्त ऊँचे चाली। धुन सुन सुन हुई मतवाली।गुरु दृष्टि मेहर की

डाली। हुए दूर सकल दुख साली।
अब राधास्वामी चरन तकूँ री।।५ ।।

।। शब्द २ ।।

हमें घर जाने दे।
मन क्यों तू विघन कराय।।टेक।।
जनम जनम जग में भरमाया।
भोगन संग रहा अटकाय।।१ ।।
अब के तैं भल औसर पाया।
गुरु चरनन में प्रीत लगाय।।२ ।।
जो यह कहन न मानो मेरी।
बार बार चौरासी धाय।।३ ।।
विषयन का तुम संग तियागो।
भोग बासना दूर हटाय।।४ ।।
गुरु की दया ले घट में चालो।
चढ़ो अधर तुम धुन रस पाय।।५ ।।
निरमल होय मिले जाय गुरु से।
नित्त नवीन पिरेम जगाय।।६ ।।
सतगुरु संग चढ़त ऊँचे को।
सत्तलोक में आरत लाय।।७ ।।
चरन सरन राधास्वामी हिये धर।
आज लिया निज काज बनाय।।८ ।।

* * * * *

।। शब्द ३ ।।

भोग बासना मन में धरी।
मोसे सतसँग किया न जाय।।टेक।।
मैं चाहूँ छोड़ूँ भोगन को।
देख भोग मन अति ललचाय।। १ ।।
सतसँग बचन सुनूँ मैं कैसे।
मन रहे अनेक तरंग उठाय।। २ ।।
चित चंचल मेरा चहुँ दिस धावे।
सुरत शब्द में नहिं ठहराय।। ३ ।।
निरभय होय भरमे संसारा।
नई कामना नित्त जगाय।। ४ ।।
बिन राधास्वामी अब कोइ नहिं मेरा।
जो यह बेड़ा पार लगाय।। ५ ।।

## बचन ३३ प्रेम लहर भाग छठा

।। शब्द १ ।।

दया के सिंध सतगुरु।
जीवन के हितकारी हो।।टेक।।
चरनन में लगाय मोको।
दीन्ही भक्ति करारी हो।। १ ।।

ओट गही मैं उनकी अबके।
सहज मिला पद चारी हो।।२ ।।
मन इंद्री बहु बिघन लगाते।
देते दुख मोहिं भारी हो।।३ ।।
सतगुरु दया प्रबल जब कीन्ही।
मन माया दोउ हारी हो।।४ ।।
गहरी प्रीत बसी जब हिये में।
भोग लगे सब खारी हो।।५ ।।
सतगुरु रूप निरखती चाली।
शब्द में लागी तारी हो।।६ ।।
धुन घंटा और संख सुनाई।
निरखी जोत उजारी हो।।७ ।।
गुरु पद जाय लखा त्रिकुटी में।
फिर अक्षर धुन धारी हो।।८ ।।
भँवरगुफा मुरली धुन पाई।
सतपुर बीन सम्हारी हो।।९ ।।
अलख अगम के पार चढ़ा के।
हुई अब सब से न्यारी हो।।१० ।।
रा धा स्वा मी दरशन पाये।
हुई उन चरनन प्यारी हो।।११ ।।

* * * * *

॥ शब्द २ ॥

राधास्वामी दाता दीन दयाला।
किया भारी उपकारा हो॥टेक॥
शब्द भेद दे जीव चितावें।
करें सहज छुटकारा हो॥ १ ॥
सहज अभ्यास करें सब कोई।
जुगत कही निज सारा हो॥ २ ॥
चरन सरन दे जीव उबारें।
काटें करमन भारा हो॥ ३ ॥
अपना बल दे कार करावें।
देते गुप्त सहारा हो॥ ४ ॥
कस कस महिमा गाऊँ उनकी।
कीन्ही दया अपारा हो॥ ५ ॥
मैं अति नीच निकाम अनाड़ी।
आन पड़ी उन द्वारा हो॥ ६ ॥
दया मेहर से बचन सुनाए।
लीन्हा मोहिं सुधारा हो॥ ७ ॥
ध्यान धरूँ नित घट में उनका।
देखूँ रुप पियारा हो॥ ८ ॥
सुरत लगाय शब्द सँग धाऊँ।
निरखूँ जोत उजारा हो॥ ९ ॥

त्रिकुटी होय चढ़ी ऊँचे को।
न्हाई बेनी धारा हो।। १० ।।
भँवरगुफा का लखा उजारा।
महासुन्न के पारा हो।। ११ ।।
आगे चढ़ कर सुनी बीन धुन।
सत्तपुरुष दरबारा हो।। १२ ।।
आरत कर कर मगन हुई अब।
लखा वार और पारा हो।। १३ ।।
ले दुरबीन चली आगे को।।
राधास्वामी दरस निहारा हो।। १४ ।।
दया मेहर उन क्या करूँ बरनन।
मैं चरनन बलिहारा हो।। १५ ।।

।। शब्द ३ ।।

प्रेम भक्ति गुरु धार हिये में।
आया सेवक प्यारा हो।। टेक ।।
उमँग उमँग कर तन मन धन को।
गुरु चरनन पर वारा हो।। १ ।।
गुरु दरशन कर बिगसत मन में।
रूप हिये में धारा हो।। २ ।।
आठ पहर गुरु संग रहावे।
जग से रहता न्यारा हो।। ३ ।।

मन माया को आँख दिखावे।
गुरु बल सूर करारा हो।। ४ ।।
शब्द डोर गह चढ़ता घट में।
पहुँचा गगन मँझारा हो।। ५ ।।
आगे चल सुनी सारँग किंगरी।
मुरली बीन सितारा हो।। ६ ।।
रा धा स्वा मी मेहर से दीन्हा।
निज पद अगम अपारा हो।। ७ ।।

।। शब्द ४ ।।

जीव उबारन जग में आये।
राधास्वामी दीन दयाला हो।।टेक ।।
दरशन दे हिये प्रीत जगाई।
सब को किया निहाला हो।। १ ।।
सतसँग में निज भेद सुनाया।
सुरत शब्द मत आला हो।। २ ।।
जुगत बताय लगाया घट में।
बोल सुनाया बाला हो।। ३ ।।
मन और सुरत समेटे तिल में।
खोला घट का ताला हो।। ४ ।।
घट में प्रेम बढ़ावत दिन दिन।
काटा माया जाला हो।। ५ ।।

करम धरम सब दूर हटाए।
सबहि बिकार निकाला हो।। ६ ।।
पाँचों दूत रहे मुरझाई।
हारा काल कराला हो।। ७ ।।
निरमल होय चढ़ी सुर्त घट में।।
झाँका गगन शिवाला हो।। ८ ।।
मगन होय सुर्त धुन रस लेती।
पीती प्रेम पियाला हो।। ९ ।।
सुन में जाय मानसर न्हाई।
धारा रुप मराला हो।।१० ।।
महासुन्न में थक कर बैठा।
महाकाल मतवाला हो।। ११ ।।
भँवरगुफा में धस गइ सूरत।
सोहं शब्द सम्हाला हो।।१२ ।।
सत्तलोक में चढ़ कर पहुँची।
निरखा पुरुष निराला हो।।१३ ।।
अलख अगम गुरु मेहर कराई।
आगे मारग चाला हो।।१४ ।।
मगन हुई निज दरशन पाये।
राधास्वामी महा किरपाला हो।।१५ ।।

* * * * *

॥ शब्द ५ ॥

राधास्वामी दयाल सुनो मेरी बिनती।
जल्दी दरस दिखाओ हो॥टेक॥
तड़प रही मैं बहुत दिनों से।
अब घट द्वार खुलाओ हो॥ १ ॥
तुम समरथ क्यों देर लगाई।
जल्दी मेहर कराओ हो॥ २ ॥
मैं अति दीन पड़ी तुम द्वारे।
तुम बिन कोइ न सहारो हो॥ ३ ॥
सारी बैस आस में बीती।
अब तो दया बिचारो हो॥ ४ ॥
बिन दरशन निज रूप अपारा।
नहिं मेरा होत उधारो हो॥ ५ ॥
जब लग सुरत चढ़े नहिं घट में।
मन से नहिं छुटकारो हो॥ ६ ॥
चढ़ कर पहुँचूँ दसवें द्वारा।
निरखूँ भँवर उजारो हो॥ ७ ॥
सत्तपुरुष के चरन परस के।
निज घर जाय सिहारो हो॥ ८ ॥
परम शांत में जाय समाऊँ।
सबसे होय नियारो हो॥ ९ ॥

तब आसा पूरन होय मोरी।
तुम्हरे चरन बलिहारो हो।।१०।।
राधास्वामी प्यारे दया उमगाओ।
कीजे मम उपकारो हो।।११।।

## बचन ३४ प्रेम लहर भाग सातवाँ

।। शब्द १ ।।

स्वामी प्यारे, क्यों नहिं दरशन देत।।टेक।।
प्रथम दया मोपे कीन्ही भारी।
दिया चरनन में हेत।।१।।
अब तक़सीर बनी क्या मोसे।
नेक सुद्ध नहिं लेत।।२।।
मैं बलि जाउँ चरन पर तुम्हरे।
डारूँ तन मन रेत।।३।।
तुम्हरी दया होय जब न्यारी।
काल करम रहें खेत।।४।।
करूँ पुकार सुनो मेरे प्यारे।
सुरत चढ़ाओ आज पद सेत।।५।।
वहिं मोहिं दरस देओ स्वामी प्यारे।
जहँ राधास्वामी की अचरज नेत।।६।।

* * * * *

।। शब्द २ ।।

भक्ति कर लीजिये,जग जीवन थोड़ा।।टेक।।
चार दिनों का खेल यह। देह तजना ज़रूरी।। सतगुरु का सतसंग कर। तज मान ग़रूरी।। हिये में आज बसाय ले। तू चरन हुज़ूरी।। अंतर दृष्टि खुलाय कर। लखना सत नूरी।। सतगुरु सँग तू बाँध ले। प्यारी अब के जोड़ा।।१ ।।
बंद छुड़ावन आइया। सतगुरु संसारा।। आज्ञा उनकी मानिये। हिये धर कर प्यारा।। शब्द की जुगत कमाय कर। कीजे निरवारा।। नाम बिना सब जीव। बहे चौरासी धारा।। भाग जगा मोहिं मिल गये। गुरु बंदी छोड़ा।।२ ।।
दया करी गुरु प्रीतमा। मोहिं संग लगाई ।। घर का भेद सुनाय कर । सुर्त अधर चढ़ाई।। घंटा संख सुनाय कर। फिर जोत लखाई।। वहँ से गगन चढ़ाय कर। धुन गरज सुनाई।। चंद्र रूप लख। काल से अब नाता तोड़ा।।३ ।।

भँवरगुफा में जाय कर। सुनी मुरली प्यारी।। सत्तलोक में पुरुष का। जाय रूप निहारी । अलख अगम का रूप लख। सुर्त चढ़ गई पारी।। मेहर दया गुरु पाय कर। हुइ सबसे न्यारी।। राधास्वामी दरशन पाय कर। सुर्त हो गई पोढ़ा।।४ ।।

।। शब्द ३ ।।

गगन में बाजत आज बधाई। टेक ।।
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे।
संत रूप धर आये।
जगत में भक्ती रीति चलाई।।१ ।।
निज घर का स्वामी भेद सुनाया।
सुरत शब्द मारग समझाया।
जिन माना तिन चरन लगाई।।२ ।।
प्रेम बढ़ा करनी करवाई।
करनी कर बहु मेहर बढ़ाई।
काल करम से खूँट छुड़ाई।।३ ।।
चरन सरन दे लिया अपनाई।
प्रीत प्रतीत जिव हृदे बसाई।
शब्द संग सुर्त अधर चढ़ाई।।४ ।।

गगन माहिं गुरु पद दरसाया।
सतपुर सतगुरु रूप लखाया।
राधास्वामी धाम दिया पहुँचाई।। ५ ।।

## बचन ३५ बिनती और प्रार्थना

।। शब्द १ ।।

हे मेरे प्यारे सतगुरु।
मोहिं दरशन दीजे।। १ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
मोहिं अपना कीजे।। २ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
मेरा मन हर लीजे।। ३ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
तन छिन छिन छीजे।। ४ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
मेरा कारज जल्दी कीजे।। ५ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
मेरी सुरत शब्द सँग सीजे।। ६ ।।
प्यारे राधास्वामी दीनदयाला।
मेरी आशा पूरन कीजे।। ७ ।।

।। शब्द २ ।।

हे मेरे प्यारे सतगुरु।
तुम दाता अपर अपारा।। १ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
मोहिं नाम देओ निज सारा।। २ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
मैं अधम नीच नाकारा।। ३ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
किरपा कर लेव उबारा।। ४ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
तुम समरथ दीन दयारा।। ५ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
मोहिं जग से कीजे न्यारा।। ६ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
दिखलाओ गुरु दरबारा।। ७ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
तुम बिन नहिं और सहारा।। ८ ।।
हे मेरे प्यारे सतगुरु।
अपना कर लेओ उबारा।। ९ ।।
प्यारे राधास्वामी परम दयाला।
मुझ दीन का करो गुज़ारा।।१० ।।

* * * * *

॥ शब्द ३ ॥

गुरु धरा सीस पर हाथ।
मन क्यों सोच करे॥ १ ॥
गुरु रक्षा हरदम संग।
क्यों नहिं धीर धरे॥ २ ॥
गुरु राखें राखनहार।
उनसे काज सरे॥ ३ ॥
तेरी करें पच्छ कर प्यार।
बैरी दूर पड़े॥ ४ ॥
गुरु दाता दीन दयार।
चरन लग जगत तरे॥ ५ ॥
उन महिमा अकह अपार।
वर्णन कौन करे॥ ६ ॥
सोइ चाखे अमी रस सार।
चरनन सुरत धरे॥ ७ ॥
घट बाजे अनहद सार।
सुन सुन अधर चढ़े॥ ८ ॥
गुरु देवें बिघन हटाय।
उनसे काल डरे॥ ९ ॥
माया दल मारें आय।
मोह मद अगिन जरे॥ १० ॥

बिन राधास्वामी गुरु समरत्थ।
को अस दया करे।।११ ।।
वही हैं बड़ भागी जीव।
जो उन सरन पड़े।।१२ ।।
धर हिये में गहिरी प्रीति।
संग में आन अड़े।।१३ ।।
मेरा जागा अस बड़ भाग।
जग जिव अचरज करे।।१४ ।।
गुरु कीन्ही मेहर अपार।
बैरी जल जल मरे।।१५ ।।
मेरे मात पिता गुरु देव।
महिमा कौन करे।।१६ ।।
प्यारे राधास्वामी दीनदयाल।
छिन छिन सार करें।।१७ ।।

।। शब्द ४ ।।

बिनती करूँ चरन में आज।
बेग सँवारो मेरा काज।। १ ।।
तुम सतगुरु मेरे परम उदार।
मुझ ग़रीब को लेओ सुधार।। २ ।।
तन मन मेरा बँधा जगत में।
बीती जात उमर खट पट में।। ३ ।।

भजन ध्यान कुछ बन नहिं आवत।
छिन छिन मन भोगन में धावत।। ४ ।।
क्यों कर रोकूँ मन को तन में।
न्यारा होय सुनूँ कस धुन मैं।। ५ ।।
बिन तुम दया नहीं कुछ होई।
राधास्वामी करो मेहर अब सोई।। ६ ।।
मैं अति निरबल चरन अधीना।
तुम सतगुरु मेरे अति परबीना।। ७ ।।
मैं हूँ छिन छिन भूलनहार।
तुम्हरी सरन गही अब हार।। ८ ।।
बख़शो भूल और चूक हमारी।
भौ सागर से लेओ उबारी।। ९ ।।
गुन गाऊँ तुम चरन धियाऊँ।
राधास्वामी सरन समाऊँ।। १० ।।

।। शब्द ५ ।।

सुनो बीनती स्वामी महाराज।
अपना कर मेरी राखो लाज।। १ ।।
मन इन्द्री मोहिं अति भरमावत।
चित चंचल मेरा थिर न रहावत।। २ ।।
दया तुम्हार निरख रहा दम दम।
फिर भी यह मन धावत हर दम।। ३ ।।

रोक रोक याहि चरन लगाता।
चुप नहिं रहे फिरे मद माता।। ४ ।।
अनेक गुनावन रहे उठाई।
तरह तरह के रंग दिखाई।। ५ ।।
कोइ बिधि सुरत न लगने पावे।
धुन रस ले मन नहिं तृप्तावे।। ६ ।।
बहु दिन अस खटपट में बीते।
काल करम अब तक नहिं जीते।। ७ ।।
मैं नहिं जानूँ मौज तुम्हारी।
क्यों नहिं इनको मार निकारी।। ८ ।।
मैं निर्बल क्या लड़ने जोगा।
दया करो काटो यह रोगा।। ९ ।।
निरमल होय मन बैठे घर में।
सुरत बिहंगम चढ़े अधर में।।१० ।।
साँची प्रीत लगे घट धुन में।
अमृत रस पीवे चढ़ सुन में।।११ ।।
निर्भय होय जगत को त्यागे।
मान मनी तज घर को भागे।।१२ ।।
निस दिन रहूँ आनन्द में चूर।
प्रेम दात दीजे भरपूर।।१३ ।।

दृढ़ कर पकड़े चरन तुम्हारे।
तुम बिन नहिं कोइ और अधारे।।१४ ।।
जल्दी करो देर क्यों धारी।
राधास्वामी अब मोहिं लेओ सम्हारी।।१५ ।।

।। शब्द ६ ।।

चरन में बिनती करूँ बनाय।
सुरत मेरी दीजे आज चढ़ाय।। १ ।।
होय मन धुन रस में सरशार।
जगत के सबही ख़्याल निकार।। २ ।।
काल और करम मिटाऊँ झार।
गगन चढ़ देखूँ विमल बहार।। ३ ।।
होय वहाँ निरभय करूँ बिलास।
चरन में गुरु के रह कर पास।। ४ ।।
सुनूँ फिर चढ़ कर धुन रारंग।
मानसर न्हाऊँ हंसन संग।। ५ ।।
बिना तुम मेहर नहीं कुछ होय।
जतन मेरा काम न आवे कोय।। ६ ।।
दया बिन कैसे यह पद पाय।
मेहर मो पै पूरी करो बनाय।। ७ ।।
जाऊँ फिर वहाँ से महासुन पार।
भँवर का देखूँ सेत उजार।। ८ ।।

परस फिर सत्तपुरुष चरना।
अलख और अगम सुरत भरना।। ९ ।।
लखूँ फिर धाम अनामी जाय।
परम गुरु राधास्वामी दरशन पाय।।१० ।।
चरन में बिनती करूँ अनंत।
मिले मोहिं राधास्वामी प्यारे कंत।। ११ ।।
सरन गह बैठूँ होय निचिंत।
दया से राधास्वामी भाग जगंत।।१२ ।।

।। शब्द ७ ।।

चरन में राधास्वामी करूँ पुकार।
सरन दे लीजे मोहिं उबार।। १ ।।
बहुत दिन भटकी भरमन में।
नेष्टा धारी करमन में।। २ ।।
सुमिर रही बहु दिन कृत्रिम नाम।
भेद बिन सरा न कोई काम।। ३ ।।
दया हुइ चरनन में आई।
भेद निज घट का यहाँ पाई।। ४ ।।
प्रीत मेरी सेवा में लागी।
शब्द धुन सुन सूरत जागी।। ५ ।।
परख कर तोड़ जगत की प्रीत।
करूँ नित सतसँग धर परतीत।। ६ ।।

दया ले मन इन्द्री रोकूँ।
शब्द सुन मन सूरत पोखूँ।। ७ ।।
टेक राधास्वामी हिरदे धार।
आस सब जग की देउँ निकार।। ८ ।।
भजन कर मगन रहूँ मन में।
नाम गुरु सुमिरूँ छिन छिन में।। ९ ।।
दया कर राधास्वामी परम उदार।
करें मेरा बेड़ा इक दिन पार।।१० ।।

।। शब्द ८ ।।

राधास्वामी दीन दयाला। मोहिं दरशन दीजे।। मेरे प्यारे गुरु दातारा। निज किरपा कीजे।। १ ।।
मेरे सतगुरू समरथ साईं। क्यों देर लगाई।। मैं तरसूँ तड़पूँ निस दिन। सुर्त जल्दी देव चढ़ाई।। २ ।।
मैं औगुन हारा भारी। धर छिमा करो उपकारी।। तुम अपनी ओर निहारो। मैं बालक सरन तुम्हारी।। ३ ।।
मेरा काज करो अब बिधि से। तुम राधास्वामी अपर अपारी।। मैं दीन ग़रीब भिखारी। तुम द्वारे आन पड़ा री।। ४ ।।

अब मेहर हिये उमगाओ। जल्दी निज रूप दिखाओ।। मेरे घट में प्रेम बढ़ाओ। तब तन मन शांत धराओ ।। ५ ।।

तुम मात पिता गुरु दाता। मैं नीच विषय मद माता।। मन चरनन रस रहे राता। नित राधास्वामी महिमा गाता ।। ६ ।।

मुझ से कुछ बन नहिं आई। क्योंकर मेरा काज बनाई।। तुम राधास्वामी होओ सहाई। तब सभी बात बन आई ।। ७ ।।

# बचन ३६ बसंत और होली

## बसंत

### ।। शब्द १ ।।

आज आई बहार बसंत।
उमँग मन गुरु चरनन लिपटाय।। १ ।।
दया धार गुरु जग में आए।
भक्ती की फुलवार खिलाय।। २ ।।
प्रेम बदरिया बरषा लाई।
नइ नइ धुन घट शब्द सुनाय।। ३ ।।
सभी सुहागिन खेलन आईं।
गुरु सँग अचरज फाग रचाय।। ४ ।।

तन मन धन की धूल उड़ावत।
प्रेम प्रीत का रंग घुलाय।। ५ ।।
गुरु चरनन पर बारम्बारा।
डार डार रँग हिये हरखाय।। ६ ।।
भक्ति दान फगुआ लिया गुरु से।
इक इक अपना काज बनाय।। ७ ।।
राधास्वामी दीन दयाल कृपाला।
सब को लिया निज चरन लगाय।। ८ ।।

।। शब्द २ ।।

चेतो चेतो सखी ऋतु आई बसंत।
खोजो सतगुरु प्यारे कंत।। १ ।।
अब तन मन अरपो चरन संत।
सुरत शब्द का पाओ पंथ।। २ ।।
राग भोग मन से तजंत।
चरन सरन गुरु दृढ़ करंत।। ३ ।।
गुरु मूरत हिये में बसंत।
शब्द डोर ले नभ चढ़ंत।। ४ ।।
शब्द शब्द का कर बृतंत।
पहुँची चढ़ कर देश संत।। ५ ।।
सत्तलोक सतगुरु मिलंत।
बाजन लागीं धुन अनंत।। ६ ।।

अलख अगम के पार परंत।
राधास्वामी धाम मिला बे-अंत।। ७ ।।
महिमा राधास्वामी कस कहंत।
राधास्वामी दीना पूरा मंत।। ८ ।।

।। शब्द ३ ।।

ऋतु बसंत आये सतगुरु जग में।
चलो चरनन पर सीस धरो री।। १ ।।
प्रेम प्रीत करो उन चरनन में।
अपने जीव का काज करो री।। २ ।।
काल करम दोउ अति बलवाना।
बचो इनसे गुरु सरन गहो री।। ३ ।।
मन इंद्री सँग बहुत ठगाई।
भूल भरम तज होश करो री।। ४ ।।
सतगुरु बचन सुनो धर काना।
मान मनी तज संग रलो री।। ५ ।।
उमँग अंग ले कर गुरु सेवा।
दीन अधीन होय चरन पड़ो री।। ६ ।।
मेहर करें वे भेद लखावें।
तब घट में धुन शब्द सुनो री।। ७ ।।
राधास्वामी द्याल परम हितकारी।
जीव काज निज धाम तजो री।। ८ ।।

मेहर करी मोहिं चरन लगाया।
अचरज भाग जगाय दियो री।। ९ ।।
पियत रहूँ नित धुन रस घट में।
मन सूरत मेरे गगन चढ़ो री।।१० ।।
गुरु पद परस चढ़त ऊँचे को।
सत्तलोक सतपुरुष मिलो री।।११ ।।
अलख अगम का दरशन करके।
प्यारे राधास्वामी धाम बसो री।।१२ ।।

।। शब्द ४ ।।

ऋतु बसंत फूली जग माहीं।
मिल सतगुरु घट खोज करो री।। १ ।।
दीन अधीन होय चरनन में।
प्रेम उमँग हिये बीच धरो री।। २ ।।
सुरत शब्द मारग दरसावें।
शब्द माहिं अब सुरत भरो री।। ३ ।।
दृढ़ परतीत धार हिये अंतर।
दया मेहर ले गगन चढ़ो री।। ४ ।।
राधास्वामी दयाल जीव हितकारी।
हित चित से उन सरन पड़ो री।। ५ ।।
राधास्वामी नाम सुमिर निस दिन में।
मन इन्द्री के भोग तजो री।। ६ ।।

काज करें तेरा पूरा छिन में।
भौ सागर से आज तरो री।। ७ ।।

।। शब्द ५ ।।

ऋतु बसंत फूली जग माहीं।
मन और सुरत चेत हरखाईं।। १ ।।
दया मेहर राधास्वामी की परखी।
कँवल कियारी अंतर निरखी।। २ ।।
धुन फुलवार खिली घट घट में।
काल करम रहे थक खटपट में।। ३ ।।
मन चख रहा अमी रस प्याला।
मगन हुआ घट खोला ताला।। ४ ।।
सुरत चली घर को अब दौड़ी।
नभ पर चढ़ी पकड़ धुन डोरी।। ५ ।।
आगे चढ़ गुरु दरशन पाई।
गरज गरज धुन मेघ सुनाई।। ६ ।।
सुन में जा धुन अक्षर पाई।
मानसरोवर तीरथ न्हाई।। ७ ।।
राधास्वामी द्याल मिले मोहिं आई।
आगे को फिर गैल लखाई।। ८ ।।
महाकाल का तोड़ा नाका।
भँवरगुफा तक सतपुर झाँका।। ९ ।।

सत्तपुरुष के दरशन पाये।
सत्त शब्द धुन बीन सुनाये।।१० ।।
अलख अगम के पार अनामी।
अमी सिंध में जाय समानी।।११ ।।
महिमा राधास्वामी बरनी न जाई।
दया करी मोहिं अंग लगाई।।१२ ।।
चरन कँवल में बासा दीन्हा।
न्यारा कर अपना कर लीन्हा।।१३ ।।
छिन छिन आरत करूँ बनाई।
चरन सरन मैं दृढ़ कर पाई।।१४।।

।। शब्द ६ ।।

निरखो निरखो सखी ऋतु आई बसंत।
खोज करो घर आदि अंत।। १ ।।
देखो देखो सखी यह जग लबार।
धोखा दे रहा मन गँवार।। २ ।।
खोजो खोजो सखी सतगुरु दयार।
करम भरम सब दें निकार।। ३ ।।
पकड़ो पकड़ो सखी तुम उनकी बाँह।
उन बिन रक्षक नहिं जग माहिं।। ४ ।।
धारो धारो सखी तुम उनकी सरन।
सुरत शब्द ले भौ तरन।। ५ ।।

धाओ धाओ सखी सुन सुन्न की धुन।
छिन में मिट जायँ पाप और पुन्न।। ६ ।।
चलो चलो सखी सतगुरु की लार।
पहुँचो राधास्वामी पद दयार।। ७ ।।

।। शब्द ७ ।।

आज आया बसंत नवीन।
सखी री खेलो गुरु सँग फाग रचाय।। १ ।।
भाँत भाँत के फूल खिलाने।
नइ नइ डाल डाल लहराय।। २ ।।
जहँ तहँ खिल रही नई बहारा।
पीत रंग रहा चहुँ दिस छाय।। ३ ।।
सखियाँ सब जुड़ मिल कर आईं।
सतगुरु चरनन प्रेम जगाय।। ४ ।।
पीत रंग बस्तर पहिनाये।
चमक दमक सँग साज सजाय।। ५ ।।
दरशन कर हिये में हरखाईं।
अद्‌भुत शोभा बरनी न जाय।। ६ ।।
सतगुरु मुखड़ा छिन छिन निरखत।
बार बार चरनन बल जाय।। ७ ।।
उमँग उमँग गुरु चरनन लागीं।
हिये में नया नया भाव धराय।। ८ ।।

प्रेम भरी मुख आरत गावत।
तन मन की सब सुधि बिसराय।। ९ ।।
समा बँधा इस औसर ऐसा।
हंस हंसनी रहे लुभाय।।१० ।।
राधास्वामी द्याल प्रसन्न होयकर।
सब को लीन्हा चरन लगाय।।११ ।।
प्रेम दात दे हरख हरख कर।
इक इक का दिया भाग बढ़ाय।।१२ ।।
राधास्वामी महिमा को सके गाई।
वेद कतेब रहे शरमाय।।१३ ।।
जोगी ज्ञानी कहन न जानें।
जोत निरंजन भेद न पाय।।१४।।
प्यारे राधास्वामी परम दयाला।
हम नीचन को लिया अपनाय।।१५।।

## होली

।। शब्द ८ ।।

होली खेलूँगी सतगुरु साथ।
सुरत मन चरन लगाई।। १ ।।
करम जाल को जार।
भरम की धूल उड़ाई।। २ ।।

गुनन गुलाल उड़ाय।
शब्द का रंग बहाई।। ३ ।।
प्रेम नशे में चूर।
चरन गुरु रहूँ लिपटाई।। ४ ।।
सतगुरु बचन पुकार।
जगत में धूम मचाई।। ५ ।।
राधास्वामी महिमा गाय।
सरन में निस दिन धाई।। ६ ।।
राधास्वामी नाम सुनाय।
काल से जीव बचाई।। ७ ।।

।। शब्द ९ ।।

आज मेरे आनँद बजत बधाई,
नइ होली खेलन मन भाई।।टेक।।
ऋतु बसंत आये सतगुरु प्यारे।
तन मन धन सब उन पर वारे।
होली खेलन का अवसर येही।
या से रीझें पुरुष बिदेही।
जगत बिच धूम मचाई।। १ ।।
घट घट प्रेम रंग भरवावें।
अबिर गुलाल घोल घुलवावें।
अटक भटक सबही तुड़वावें।

काल दुष्ट को मार गिरावें।
बोल राधास्वामी की दुहाई।। २ ।।
कुम कुम वरषा चहुँ दिस होई।
हरखत उमँगत मन सुर्त दोई।
सतगुरु पर रंग डारत सोई।
भींजत बिगसत सज्जन लोई।
प्रेम रँग धार बहाई।। ३ ।।
बिन सतगुरु सब धूल उड़ावें।
करम धरम के धक्के खावें।
जम के दूत नित अधिक सतावें।
बार बार मुख गारी लावें।
चौरासी में जाय खपाई।। ४ ।।
हमको सतगुरु लिया अपनाई।
करम भरम सब फूँक जलाई।
दृढ़ परतीत और प्रीत जगाई।
धुर घर का निज भेद लखाई।
सुरत मन अधर चढ़ाई।। ५ ।।
उमँग मेरे हिये में उठत करारी।
लखूँ गुरु दरशन शोभा भारी।
मोहनी छबि पर जाऊँ बलिहारी।

करूँ मैं सेवा इक २ न्यारी।
चरन में हित चित से गठियाई।। ६ ।।
दया मेरे मन में अधिक समाई।
यही जग जीवन आख सुनाई।
बचा चाहो दुक्खन से जो भाई।
आओ राधास्वामी की सरनाई।
जतन कोई और पेश नहिं जाई।। ७ ।।
खेल फिर सतगुरु सँग तू होली।
सुनो और परखो घट की बोली।
काल के बिघन डाल सब रोली।
दया गुरु मारो माया पोली।
हिये में छिन २ राधास्वामी गाई।। ८ ।।

।। शब्द १० ।।

आज सँग सतगुरु खेलूँगी होरी।
मेरे हिये बिच उठत हिलोरी।। १ ।।
सुरत अबीर मलूँ चरनन पर।
प्रेम रंग पिचकारी छोड़ी।। २ ।।
धुन धधकार शब्द की बरषा।
गुनन गुलाल उड़ो री।। ३ ।।
काम क्रोध अहंकार ईरषा।
मुख इनका अब जात जलो री।। ४ ।।

राधास्वामी महिमा सब मिल गावें।
गावत गावत बचन थको री।। ५ ।।
काल करम दोउ मार बिडारे।
भाग गई माया घर छोड़ी।। ६ ।।
ऐसे समरथ राधास्वामी पाए।
लाग रहूँ चरनन चित जोड़ी।। ७ ।।

।। शब्द ११ ।।

फागुन की ऋतु आई सखी।
मिल सतगुरु खेलो री होरी।। १ ।।
अनहद शब्द सुनो घट अंतर।
घंटा संख बजो री।। २ ।।
झाँझ मृदंग बाँसरी बाजे।
मधुर मधुर धुन बीन सुनो री।। ३ ।।
जगत जाल यह काल बिछाया।
बिरह प्रेम बल तोड़ चलो री।। ४ ।।
मान मनी की धूल उड़ाओ।
चरनन में चित जोड़ रहो री।। ५ ।।
ऐसा औसर फिर न मिलेगा।
हित चित से अब संग करो री।। ६ ।।
दृढ़ परतीत और प्रीत सम्हारो।
जैसे चंद्र चकोरी।। ७ ।।

प्रेम रंग सतगुरु बरसावें।
भींज रही सखियाँ सरबोरी।। ८ ।।
ऐसी होली खेल सतगुरु सँग।
राधास्वामी चरनन जाय मिलोरी।। ९ ।।

।। शब्द १२ ।।

सखीरी ऐसी होली खेल।
जा में प्रेम का रंग बहेरी।। १ ।।
सतगुरु दया फोड़ नभ द्वारा।
जोत स्वरुप लखेरी।। २ ।।
बंक नाल धस गढ़ त्रिकुटी पर।
मन और सुरत चढ़ें री।। ३ ।।
घंटा संख मृदंग कींगरी।
मुरली बीन बजे री।। ४ ।।
कोटि सूर और चंद्र प्रकाशा।
सतगुरु मुखड़ा जाय लखे री।। ५ ।।
काल करम सब दूर निकारे।
ज़ोर इनका अब कौन सहे री।। ६ ।।
राधास्वामी द्याल ऐसी होली खिलावें।
उन महिमा कौन कहे री।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द १३ ।।

होली खेलन ऋतु आई।
सखी री क्या भूल रही संसारी।। १ ।।
काम क्रोध और मोह नशे में।
लोभ संग मतवारी।। २ ।।
नर देही फिर हाथ न आवे।
धरमराय करे ख़्वारी।। ३ ।।
याते समझो बूझो अब ही।
सतगुरु सरन उबारी।। ४ ।।
खोज लगाय पड़ो उन चरनन।
प्रीत प्रतीत सम्हारी।। ५ ।।
माया की फिर धूल उड़ाओ।
देखो घट उजियारी।। ६ ।।
सुरत अबीर मलो गुरु चरनन।
प्रेम का रंग बहा री।। ७ ।।
गुनन गुलाल उड़ाय सुनो धुन।
मिरदँग बीन बजा री।। ८ ।।
जगमग जोत सूर चमका री।
झलक चन्द्र और नूर निहारी।। ९ ।।
गुरु दयाल काटें जम जाला।
कर दें तुम छुटकारी।। १० ।।

मगन होय जाओ घर अपने।
रा धा स्वा मी चरन सिहारी।। ११।।

।। शब्द १४ ।।

होली के दिन आये सखी।
उठ खेलो फाग नई।। १ ।।
दया धार आये सतगुरु प्यारे।
प्रेम का रंग बही।। २ ।।
भक्ति दान फगुआ दिया सब को।
प्रीत जगाय दई।। ३ ।।
बिरह गुलाल अबीर तड़प का।
मन पर डाल दई।। ४ ।।
उमँग रंग भर भर अब घट में।
गुरु पर छिड़क दई।। ५ ।।
आओ सखी अब सोच न कीजे।
चरनन लिपट रही।। ६ ।।
दया दृष्टि अब सतगुरु डारी।
अंतर भींज रही।। ७ ।।
दरशन करत हुई मतवारी।
सुध बुध बिसर गई।। ८ ।।
नैनन की पिचकार छुड़ावत।
तिल में उलट गई।। ९ ।।

सहसकँवल चढ़ जोत जगाई।
संख बजाय रही।।१० ।।
लाल गुलाल रूप गुरु देखा।
त्रिकुटी जाय रही।।११ ।।
चंद्र रूप लख निरखी गूफा।
जहँ मुरली बाज रही।।१२ ।।
सत्तलोक जाय पुरुष रूप लख।
अचरज कौन कही।।१३ ।।
हंसन से मिल खेली होली।
बीन बजाय रही।।१४।।
प्रेम रंग की बरषा कीनी।
अमृत धार बही।।१५।।
अलख अगम से भेंटा करके।
रा धा स्वा मी चरन पई।।१६ ।।
अचरज रूप निरख हिये दिरगन।
छिन छिन रीझ रही।।१७ ।।
अद्भुत शोभा रूप अनूपा।
निरखत मगन भई।।१८ ।।
महिमा राधास्वामी बरनी न जाई।
हिया जिया वार रही।।१९ ।।

ऐसी होली खेल राधास्वामी से।
अचल सुहाग लई।। २०।।

।।। शब्द १५ ।।

होली खेल न जाने बावरिया।
सतगुरु को दोष लगावे।। १ ।।
जगत लाज मरजाद में अटकी।
घूँघट खोल न आवे।। २ ।।
प्रेम रंग घट भरन न जाने।
भरम गुलाल घुलावे।। ३ ।।
डगमग भक्ती चाल अनेड़ी।
जग संग झोके खावे।। ४ ।।
निंदा धूल से उड़ उड़ भागे।
सतसँग निकट न आवे।। ५ ।।
पाँच दुष्ट का रँग ले साथा।
नित पिचकार छुड़ावे।। ६ ।।
आदर मान भरा मन भीतर।
दीन अंग नहिं लावे।। ७ ।।
बचन सुने पर चित न समावे।
छिन छिन काल भुलावे।। ८ ।।
मन माया ने जाल बिछाया।
सब जिव नाच नचावे।। ९ ।।

दया करें सतगुरु मन मोड़ें।
तो घर की राह पावे।। १० ।।
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन।
रा धा स्वा मी चरन समावे।। ११ ।।

।। शब्द १६ ।।

होली खेलन आये सतगुरु जग में।
हिल हिल के अब सरन पड़ो री।। १ ।।
नर देही तुम दुरलभ पाई।
जैसे बने तैसे काज करो री।। २ ।।
प्रीत प्रतीत धरो चरनन में।
हित चित से गुरु बचन सुनो री।। ३ ।।
गुरु का ध्यान धरो हिये अंतर।
शब्द भेद ले गगन चढ़ो री।। ४ ।।
सतगुरु रूप निरख मन माहीं।
प्रेम गुलाल अब जाय मलो री।। ५ ।।
पँच इन्द्री पिचकारी छोड़ो।
तन मन चरनन वार धरो री।। ६ ।।
निरमल होय चढ़ो ऊँचे को।
राधास्वामी चरनन लाग रहो री।। ७ ।।

* * * * *

## ।। शब्द १७ ।।

प्रेम रंग बरसावत चहुँ दिस।
होली खेलन आई सूरत प्यारी।। १ ।।
लिपट रही गुरु चरनन हित से।
भींज रही घट अंतर सारी।। २ ।।
गुनन गुलाल उड़ावत मग में।
पँच इंद्री छोड़ी पिचकारी।। ३ ।।
भर भर सुरत अबीर झुकावत।
गुरु सन्मुख अब कुमकुम मारी।। ४ ।।
जगत भोग की धूल उड़ाई।
लाज कान कुल की तज डारी।। ५ ।।
काल करम सिर धौल मार कर।
माया नटनी की चादर फाड़ी।। ६ ।।
काम क्रोध और लोभ बिकारी।
मान ईरखा चित से टारी।। ७ ।।
प्रेम भरी सखियन को सँग ले।
तन मन धन सब गुरु पर वारी।। ८ ।।
बाचक जोगी ज्ञानी करमी।
स्वाँग बना मोहे नर नारी।। ९ ।।
पंडित भेख शेख़ रोज़गारी।
जम दूतन के धक्के खा री।।१० ।।

मेरा भाग जगा गुरु किरपा।
पाय गई निज सरन अधारी।। ११ ।।
प्रेम दान दीन्हा निज घर से।
राधास्वामी चरनन हुई दुलारी।।१२ ।।

।। शब्द १८ ।।

उलट पलट कर खेली होली।
अनहद धुन घट अंतर बोली।। १ ।।
उमँग अबीर गुलाल प्रेम का।
गुरु पर डाला भर भर झोली।। २ ।।
मन और सुरत चढ़े गगना पर।
माया ममता घट से डोली।। ३ ।।
गुरु दरशन कर हुई मगनानी।
अब नहिं देत काल झकझोली।। ४ ।।
आगे चढ़ पहुँची दस द्वारे।
सुन्न शहर की धुन लइ तोली।। ५ ।।
भँवरगुफा सतलोक अटारी।
चढ़ के चली अब शब्द खटोली।। ६ ।।
अलख अगम के पार चढ़ाई।
राधास्वामी चरन अब मिले अमोली।। ७ ।।

## ।। शब्द १९ ।।

सुरत रँगीली खेलत होरी।
प्रेम लगन गुरु चरनन जोड़ी।। १ ।।
केसर रंग प्रीत भर घट में।
बार बार पिचकारी छोड़ी।। २ ।।
भींज रहे सतगुरु सतसंगी।
उमँग बढ़त धुन शोर मचो री।। ३ ।।
अबिर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस।
शब्द संग मन नाच नचो री।। ४ ।।
गुरु दरशन अद्‌भुत हिये निरखत।
सुरत हुई मस्तानी बौरी।। ५ ।।
अजब बिलास लखा घट माहीं।
सुफल जन्म मेरा आज भयो री।। ६ ।।
माया नार रही शरमाई।
काल करम बल आज थको री।। ७ ।।
आरत कर गुरु प्रेम बढ़ाती।
चरन सरन गुरु धार रहो री।। ८ ।।
ऐसा फाग भाग से पइये।
जन्म मरन सब दूर भयो री।। ९ ।।
धन धन भाग मेरे अब जागे।
राधास्वामी मोहिं निज दान दियो री।। १० ।।

प्रेम अंग प्यारी सुरत नवेली।
राधास्वामी प्यारे से आज मिलो री।। ११।।

।। शब्द २० ।।

होली खेलत सतगुरु नाल।
पिरेमी सुरत रँगीली।। १ ।।
प्रेम प्रीत की केसर घोली।
गुरु पै सन्मुख डाल।। २ ।।
बरषत रँग भींजत सुर्त संगी।
चढ़त गगन पर हाल।। ३ ।।
काल कला सब थकित हुई अब।
काटा माया जाल।। ४ ।।
गुनन गुलाल उड़ावत मग में।
सुरत अबीर भर थाल।। ५ ।।
गुरु बल सुरत छड़ी घर चाली।
पहुँची हंसन ताल।। ६ ।।
परम पुरुष के दरशन पाये।
सत्त शब्द पाया धन माल।। ७ ।।
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ धारी।
मुझ पर हुए हैं दयाल।। ८ ।।
भक्ति दान मोहिं फगुआ दीन्हा।
मेटे सब दुख साल।। ९ ।।

॥ शब्द २१ ॥

आज मैं गुरु सँग खेलूँगी होरी॥ टेक॥
भाग जगे गुरु सतगुरु पाये।
मन बिच हरख बढ़ो री॥ १ ॥
बिरह अनुराग रंग घट भरिया।
गुरु पर छिड़क रहूँ री॥ २ ॥
उमँग अबीर गुलाल प्रेम का।
गुरु चरनन पर आन मलूँ री॥ ३ ॥
प्रेम दान बिनती कर माँगूँ।
तन मन धन सब वार धरूँ री॥ ४ ॥
शब्द रूप प्यारे राधास्वामी का।
घट में दरस करूँ री॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

फागुन की ऋतु आई सखी।
आज गुरु सँग फाग रचो री॥ १ ॥
ऐसा समा मिले नहिं कबहीं।
मनुआ उमँग रहो री॥ २ ॥
दृष्टि जोड़ ताको गुरु मूरत।
अद्भुत रूप लखो री॥ ३ ॥
सुरत अबीर की भर भर झोली।
घट घट रंग भरो री॥ ४ ॥

गुरु संग खेल आज नइ होली।
जग बिच धूम मचो री।। ५ ।।
ऐसी होली खेलो मेरे भाई।
करम भरम सब दूर करो री।। ६ ।।
राधास्वामी चरन ध्यान धर हिये में।
जग से आज तरो री।। ७ ।।
होय निहाल जाय जग पारा।
चरनन सुरत धरो री।। ८ ।।

।। शब्द २३ ।।

मैं तो होली खेलन को ठाड़ी।
स्वामी प्यारे झट पट खोलो किवाड़ी।। १ ।।
प्रेम रंग की बरषा कीजे।
भींजे सुरत हमारी।। २ ।।
देर देर बहु देर भई है।
कहँ लग करूँ पुकारी।। ३ ।।
तड़प तड़प जिया तड़प रहा है।
दरशन देओ दिखा री।। ४ ।।
सुन्दर रूप लखूँ अद्भुत छबि।
होवे घट उजियारी।। ५ ।।
ऋतु फागुन अब आय मिली है।
नइ नइ फाग खिला री।। ६ ।।

रा धा स्वा मी परम दयाला।
चरनन लेओ मिला री।। ७ ।।
बिनती करूँ दोऊ कर जोड़ी।
कर लो प्रेम दुलारी।। ८ ।।

।। शब्द २४।।

होली खेलत सतगुरु संग।
पिरेमन रंग भरी।। १ ।।
अबिर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस।
भर भर डालत रंग।। २ ।।
पाँच तत्त पिचकारी छोड़ी।
गुन तीनों हुए तंग।। ३ ।।
मन इंद्री को नाच नचा कर।
करत काल से जंग।। ४ ।।
सतगुरु प्रेम धार हिये अंतर।
गुरु का सीखी ढंग।। ५ ।।
मेहर करी गुरु चरन लगाया।
फूल रही अँग अंग।। ६ ।।
राधास्वामी महिमा नित हिये जिये से।
गावत उमँग उमंग।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द २५ ।।

सुरत आज खेलत फाग नई।। टेक।।
शब्द रुप हिरदे धर अपने।
गुरु रँग राच रही।। १ ।।
धुन की डोर पकड़ घट चढ़ती।
मान ईरषा सकल दही।। २ ।।
राधास्वामी बचन लगें अति प्यारे।
चरनन लाग रही।। ३ ।।
खेलत खेलत गुरु पद पहुँची।
रंग गुलाल बही।। ४ ।।
सुन्न शिखर चढ़ भँवरगुफा पर।
सत्तनाम की मेहर लई।। ५ ।।
हंसन साथ मिली अब रँग से।
अलख अगम के पार गई।। ६ ।।
राधास्वामी द्याल दया निज धारी।
प्रेम का दान दई।। ७ ।।

।। शब्द २६ ।।

सुरत प्यारी खेलन आई फाग।
धार गुरु चरनन में अनुराग।। १ ।।
प्रेम रँग भर भर लइ पिचकार।
छोड़ती चहुँ दिस उमँग सम्हार।। २ ।।

सुरत का लाई अबिर गुलाल।
चरन गुरु कुम कुम भर भर डाल।। ३ ।।
काम और क्रोध उड़ाई धूर।
करम और भरम किये सब दूर।। ४ ।।
गाल दे काल हटाया हाल।
दया ले काटा माया जाल।। ५ ।।
सुरत अब चढ़ती गगन मँझार।
करत वहँ गुरु से हेत पियार।। ६ ।।
मिली सतगुरु से जा सतलोक।
अलख और अगम का पाया जोग।। ७ ।।
चरन राधास्वामी कीन्हा प्यार।
प्रेम का फगुआ लीन्हा सार।। ८ ।।

।। शब्द २७ ।।

क्या सोय रही उठ जाग सखी।
आज गुरु सँग खेलो री होरी।। १ ।।
मोह नींद में बहु दिन बीते।
जागन चौंप धरो री।। २ ।।
सरधा भाव अबीर संग ले।
घट बिच रंग भरो री।। ३ ।।
बिरह भाव के बान चला कर।
मन से आज लड़ो री।। ४ ।।

सुरत शब्द मारग ले गुरु से।
धुन सँग गगन चढ़ो री।। ५ ।।
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन।
सुन्न में सुरत भरो री।। ६ ।।
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर।
सतपुर जाय बसो री।। ७ ।।

।। शब्द २८ ।।

गुरू सँग खेलन फाग चली।
खिलत मेरे घट में कँवल कली।। १ ।।
जोत की लई पिचकार सम्हार।
शब्द रँग बरषा होत अपार।। २ ।।
चाँद और सूरज कुमकुम लाय।
बिमल घट त्रिकुटी रंग भराय।। ३ ।।
सुन्न में भरती सुरत अबीर।
महासुन चढ़ती धर कर धीर।। ४ ।।
भँवर चढ़ मुरली बीन बजाय।
सत्तपुर होली खेली जाय।। ५ ।।
आरती गाई हंसन संग।
धारिया सत्तपुरुष का रंग।। ६ ।।
उमँग कर राधास्वामी धाम चली।
सरन गह राधास्वामी चरन रली।। ७ ।।

॥ शब्द २९ ॥

सखी चल फाग की देख बहार ॥टेक॥
सखियाँ जुड़ मिल खेलन आईं।
गुरु सँग हिये धर प्यार ॥ १ ॥
अबिर गुलाल उड़त चहुँ दिस में।
कुमकुम भर भर मार ॥ २ ॥
प्रेम रंग की बरषा गहरी।
भींज रहे नर नार ॥ ३ ॥
कली कली हिये कँवल खिलानी।
फूल रही फुलवार ॥ ४ ॥
लिपट लिपट गुरु चरनन हित से।
तन मन सुद्ध बिसार ॥ ५ ॥
गावत राग रागनी रस से।
होत शब्द झनकार ॥ ६ ॥
समा बँधा आनँद अति बाढ़ा।
राधास्वामी फाग खिलाया सार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३० ॥

खेल ले सतगुरु सँग तू फाग।
सखी री तेरा भला बना है दाव ॥ १ ॥
ऋतु फागुन भागन से आई।
छोड़ सोवना तू उठ जाग ॥ २ ॥

इंद्री भोग चुरावत चित को।
सहज सहज उनको तज भाग॥ ३ ॥
सुरत अबीर गुलाल शब्द का।
प्रेम रंग ले गुरु पद लाग॥ ४ ॥
वहाँ से चल पहुँची दस द्वारे।
करम भरम सब दीन्हे त्याग॥ ५ ॥
भँवरगुफा होय पहुँची सतपुर।
मुरली बीन सुनावत राग॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन परस हिल मिल कर।
गावत मंगल राग॥ ७ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

आज गुरु खेलन आये होरी।
जग जीवन का भाग जगो री॥ १ ॥
प्रेम घटा अब बरसन लागी।
धारा रंग बहो री॥ २ ॥
सुरत अबीर घुमँड़ रहा चहुँ दिस।
मनुआँ उमँग रहो री॥ ३ ॥
घंटा संख मृदंग बाँसरी।
सारंग बीन बजो री॥ ४ ॥
हरख हरख सब गिरते चरनन।
प्रेम भक्ति गुरु दान दियो री॥ ५ ॥

काल करम का दाव चुकाया।
खोल दई माया की चोरी।। ६ ।।
करम भरम तज जीव सुखारी।
पकड़ शब्द निज घर को दौड़ी।। ७ ।।
अस लीला कहो कौन दिखावे।
राधास्वामी दाता दया करो री।। ८ ।।

।। शब्द ३२ ।।

होली खेले सयानी।
गुरू के रंग रँगानी।।टेक।।
प्रेम प्रीत का रँग घट भर कर।
गुरु पर दिया छिड़कानी।। १ ।।
दृढ़ विश्वास धार गुरु चरनन।
करम और भरम भुलानी।। २ ।।
जग व्यवहार लगा सब झूठा।
सब से हुई अलगानी।। ३ ।।
ममत माया और दुबिधा छोड़ी।
गुरु चरनन लिपटानी।। ४ ।।
जगत भोग तज चरन अमी रस।
पीवत रहत अघानी।। ५ ।।
राधास्वामी सतगुरु मिले रँगीले।
उन सँग फाग खिलानी।। ६ ।।

* * * * *

## ।। शब्द ३३ ।।

सुरत सिरोमन फाग रचाया।
सब जुड़ मिल आज खेलो री होरी।। टेक।।
सखी सहेली धूमत आईं। अबिर गुलाल रंग भर लाईं। गुरु दरशन को घूमत धाईं। देख रूप झूमत मुसक्याईं। मान मनी की मटकी फोड़ी।। १ ।।
सतगुरु परम उदार कृपाला।देख दीनता हुए दयाला। बचन सुनाये अजब रसाला। दया दृष्टि से किया निहाला। अटक भटक सब अब दई तोड़ी।। २ ।।
गुरु चरनन में प्रेम बढ़ावत। रूप अनूप हिये में ध्यावत। उमँग उमँग गुरु आरत गावत।शब्द भेद ले जुगत कमावत। चढ़त अधर गह धुन की डोरी।। ३ ।।
धूम मची अब धरन गगन में। राधास्वामी खेलत फाग अधर में। भींज रहे सब प्रेम रंग में। सुध बिसरी रच रही धुनन में। आज अनोखा फाग रचोरी।। ४ ।।

## ।। शब्द ३४ ।।

सोइ तो सुरत पिया की प्यारी।
जो भींज रही गुरु रँग सारी।। १ ।।
सतगुरु प्रेम रहे मद माती।
अटल भक्ति का प्रन धारी।। २ ।।
जगत भाव तज गुरु चरनन में।
प्रीत नई नई बिस्तारी।। ३ ।।
मगन होय गुरु आज्ञा माने।
माया मन रहे दोउ हारी।। ४ ।।
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई।
मेहर करी गुरु अति भारी।। ५ ।।
घंटा संख लगे घट बजने।
सुन्न शिखर गई भौ पारी।। ६ ।।
मधुर मधुर धुन गुफा सुनाई।
अमर लोक गई गुरु लारी।। ७ ।।
सत्तपुरुष से फगुआ लीन्हा।
अलख अगम जा पग धारी।। ८ ।।
रा धा स्वा मी दीनदयाला।
गोद लिया मोहिं बैठा री।। ९ ।।

* * * * *

।। शब्द ३५ ।

सुरत सिरोमन फाग रचाया।
जग बिच धूम मची री।। १ ।।
बिरह भाव और प्रेम दिवानी।
गुरु के रंग रची री।। २ ।।
जग भय भाव लाज तज डारी।
भक्ती नाच नची री।। ३ ।।
छल बल कपट छोड़ कर बरते।
खेलत फाग सची री।। ४ ।।
प्रीत प्रतीत हिये में धारत।
राधास्वामी चरनन सरन पकी री।। ५ ।।
काल करम दोउ रहे झख मारत।
माया निज बल हार थकी री।। ६ ।।
राधास्वामी सतगुरु मिले दयाला।
उन चरनन में जाय बसी री।। ७ ।।

।। शब्द ३६ ।।

होली खेलत सुरत रँगीली,
गुरु सँग प्रीत बढ़ाई।। टेक।।
सुरत अबीर मलत चरनन पर। प्रेम
रंग बरसाई ।। गुनन गुलाल उड़ावत
चहुँ दिस। शब्द सुनत हरखाई।।
गगन पर करत चढ़ाई।। १ ।।

बिरह उमगाय चढ़त ऊँचे को। गुरु पद सुरत लगाई ।। धुन धधकार सुनत मन सरसा। हिये नया प्रेम जगाई।।
काल दल रहा मुरझाई ।। २ ।।

गुरु मूरत निरखत मगनानी। लाल रूप सुर्त पाई।। सुन्न सिखर जाय फाग रचाया। अमृत धार बहाई।।
भींज रहे गुरु बहिन और गुरु भाई ।। ३ ।।

महासुन्न होय चढ़त गुफा पर। सोहँग मुरली बजाई।। सतपुर जाय मिली सतगुरु से। मधुर बीन धुन आई।।
चरन में राधास्वामी जाय समाई ।। ४ ।।

।। शब्द ३७ ।।

आज सखि गुरु सँग खेलो री होरी।
तेरा सुंदर ब्योंत बनो री।। १ ।।
सतगुरु भेंटे सतसँग मिलिया।
अचरज भाग जगो री।। २ ।।
ऐसा दुरलभ औसर पाया।
नर देह सुफल करो री।। ३ ।।
अब नहिं चेतो तो फिर कब चेतो।
फिर नहिं ऐसा समा मिलो री।। ४ ।।

जैसे बने तैसे अब ही चेतो।
गुरु संग प्रीत धरो री।। ५ ।।
प्रेम गुलाल घोल घट अंतर।
गुरु पर ले छिड़को री।। ६ ।।
सुरत अबीर भरो हिये थाला।
गुरु चरनन पर आन मलो री।। ७ ।।
प्रेम भरी सखियाँ सँग लेकर।
भक्ति रंग बरसत भींजो री।। ८ ।।
अस आरत गुरु चरनन कीजे।
धुन रस ले मन गगन चढ़ो री।। ९ ।।
परम गुरु राधास्वामी दयाला।
उन चरनन में सुरत भरो री।।१० ।।

।। शब्द ३८ ।।

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।
आज जग जिव उबार कराय रहे री।। १ ।।
चार लोक में बजी है बधाई।
मिल हंस सभा गुन गाय रहे री।। २ ।।
घन गरज गरज बजा दया का नगारा।
काल करम मुरझाय रहे री।। ३ ।।
अमृत धार लगी घट झिरने।
धुन घंटा संख सुनाय रहे री।। ४ ।।

धन धन भाग जगा जीवन का।
जो गुरु दरशन पाय रहे री।। ५ ।।
कर सतसंग मिला रस भारी।
प्रीत प्रतीत बढ़ाय रहे री।। ६ ।।
सुरत शब्द का दे उपदेशा।
घट में सुरत चढ़ाय रहे री।। ७ ।।
आरत कर गुरु लीन्ह रिझाई।
तन मन धन सब वार रहे री।। ८ ।।
हुए प्रसन्न राधास्वामी गुरु प्यारे।
उन सतलोक पठाय रहे री।। ९ ।।

।। शब्द ३९ ।।

सखी री मैं निस दिन रहूँ घबरानी।।टेक।।
मन इंद्री की चाल निरख कर। बहु
विधि रहूँ पछतानी।। भोग बासना
छोड़त नाहीं।उन सँग रहे अटकानी।।
दरद कस कहूँ बखानी।। १ ।।
बहु बिधी याहि समझौती दीन्ही।नेक
कहन नहिं मानी।। मैं तो हार हार
अब बैठी। गुरु बिन कौन बचानी।।
कहो मेरी कहा बसानी।। २ ।।

सुमिरन ध्यान में ठहरे नाहीं। थोथा
भजन करानी।। बहु बिधि अपना ज़ोर
लगाऊँ। छोड़े न भरम कहानी।।
छीर तज पीवे पानी।। ३ ।।
गुरु दयाल की मेहर परखती। तौभी
धुन में प्रीत न आनी ।। घट में चंचल
नेक न ठहरे। चिंता में रहे नित्त भुलानी।
कहो कस जुगत कमानी।। ४ ।।
अब थक कर मैं करूँ बीनती।
हे गुरू दृष्टि मेहर की आनी।
छिमा करो और दया उमगाओ।
हे राधास्वामी पुरुष सुजानी।
प्रेम का देओ दानी।। ५ ।।

।। शब्द ४० ।।

प्रेम रंग ले खेलो री गुरु से।
आज पड़ा तेरा दाव री।। १ ।।
गुरु को सब बिधि समरथ जानो।
लाओ पूरन भाव री।। २ ।।
दया करें तुझ पर वे छिन छिन।
दे दे मन को ताव री।। ३ ।।

अस्तुत कर महिमा कर उनकी।
नित्त बढ़ाओ चाव री।। ४ ।।
गुरु से रोस करो मत कबही।
छिन छिन प्रेम बढ़ाव री।। ५ ।।
मौज निहार रज़ा में बरतो।
मन मत दूर हटाव री।। ६ ।।
सुरत जगाय उमँग नइ धारो।
राधास्वामी चरन समाव री।। ७ ।।

## बचन ३७ सावन लावनी और बारहमासा

।। सावन ।।

।। शब्द १ ।।

सावन मास मेघ घिर आये।
गरज गरज धुन शब्द सुनाये।। १ ।।
रिमझिम बरषा होवत भारी।
हिये बिच लागी बिरह कटारी।। २ ।।
प्रीतम छाय रहे परदेसा।
बूझत रही नहिं मिला सँदेसा।। ३ ।।
रैन दिवस रहूँ अति घबराती।
कसक कसक मेरी कसके छाती।। ४ ।।

कासे कहूँ कोइ दरद न बूझे।
बिन पिया दरस नहीं कुछ सूझे।।५ ।।
चमके बीज तड़प उठे भारी।
कस पाऊँ पिया प्रान अधारी।।६ ।।
रोवत बीते दिन और राती।
दरद उठत हिये में बहु भाँती।।७ ।।
ढूँढ़त ढूँढ़त बन बन डोली।
तब राधास्वामी की सुन पाई बोली।।८ ।।
प्रीतम प्यारे का दिया सँदेसा।
शब्द पकड़ जाओ उस देसा।।९ ।।
सुरत शब्द मारग दरसाया।
मन और सुरत अधर चढ़वाया।।१० ।।
कर सतसंग खुले हिये नैना।
प्रीतम प्यारे के सुने वहीं बैना।।११ ।।
जब पहिचान मेहर से पाई।
प्रीतम आप गुरू बन आई।।१२ ।।
दया करी मोहिं अंग लगाया।
दुक्ख दरद सब दूर हटाया।।१३ ।।
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ।
तन मन वारूँ बल बल जाऊँ।।१४ ।।

भाग जगे गुरु चरन निहारे।
अब कहूँ धन धन राधास्वामी प्यारे।। १५ ।।

दिवाली

।। शब्द २ ।।

दिवाला पूजें जीव अजान।
भरमते फिरते चारों खान।। १ ।।
दिवाली संतन घर जागी।
प्रेम रस मन सूरत पागी।। २ ।।
खिला अब चमन नूर हिये में।
बढ़ी अब प्रीत गुरू जिये में।। ३ ।।
साफ़ मैं कीन्हा मन दरपन।
किया तन मन धन गुरु अरपन।। ४ ।।
लगाई बाज़ी गुरु के संग।
हार कर तन मन लिया गुरु रंग।। ५ ।।
बाल जिव मूरत में अटके।
जुगन जुग सहते जम झटके।। ६ ।।
खिलौने खेल गये घर भूल।
पकड़ कर साखा तज दिया मूल।। ७ ।।
जुए में नर देही हारी।
देत जम धिरकारी भारी।। ८ ।।

अभागी जीव न मानें बात।
भरमते नित तम चक्कर साथ।।९ ।।
रैन ज्यों मावस अँधियारी।
रही कल धारा घट जारी।।१० ।।
जगा जिन जीवन धुर भागा।
लगा गुरु चरनन अनुरागा।।११ ।।
सुरत मन नित घट में चढ़ते।
सरन गुरु छिन छिन दृढ़ करते।।१२।।
देखते दीप दान घट में।
निरखते जोत रूप पट में।।१३ ।।
गगन चढ़ देखत उगता सूर।
सुन्न में निरखत चाँदन पूर।।१४ ।।
भँवर में झलका अद्भुत नूर।
परे तिस सत्तनाम भरपूर।।१५।।
लखा फिर अलख अगम घर दूर।
हुई राधास्वामी चरनन धूर।।१६।।
करे जहाँ आरत सेवक सूर।
मेहर गुरु पाया आनँद पूर।।१७ ।।

* * * * *

## लावनी

।। शब्द ३ ।।

तड़पत रही बेहाल। दरस बिन मन
नहिं माने।। कासे कहूँ बिथाय।
दरद मेरा कोई नहिं जाने।। १ ।।
निस दिन हर बार। सोच यहि मोहिं
सतावत।। गुरु से कैसे मिलूँ।
जतन कोइ बन नहिं आवत।। २ ।।
बिन अंतर दीदार। मोर मन शांत न
लावे।। जग के भोग बिलास।
नहीं मोहिं नेक सुहावे।। ३ ।।
छिन छिन घटत शरीर। उमर योंही
बीती जावे।। कस पाऊँ दीदार।
सोच यही मन में आवे।। ४ ।।
बिन सतगुरु की मेहर। बने नहिं कोई
काजा।। याते करूँ पुकार।
दया का दीजे साजा।। ५ ।।
राधास्वामी सुनो पुकार। पाट घट
खोल दिखाओ।। दरशन देकर आज।
हिये की तपन बुझाओ।। ६ ।।

* * * * *

।। शब्द ४ ।।

बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी।। गुरु ज्ञान बिना संसार। अँधेरा भारी।। टेक।।
क्या जन्मे जग में आय। शब्द का खोज न कीना।। अटके देवी देव। संत का मरम न चीन्हा।। दुख सुख भोगें सदा। करम का यह फल लीन्हा।। भोगन में रहे लिपटाय। विषय रस नित ही पीना।। जन्म मरन नहिं छुटे। करम का चक्कर भारी।।बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी।। १ ।।
वे बड़भागी जीव। मिले जिन सतगुरु प्यारे।। कर उनका सतसंग। चरन उन सिर पर धारे ।। सार बचन उर धार। हुए करमन से न्यारे।। सोमत लीन्हा चीन्ह। भरम तज दीन्हे सारे।। बिन गुरु कौन सुनाय। जुगत यह सब से न्यारी।। बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी।। २ ।।

प्रीत बढ़त गुरु चरन। दिनों दिन आनन्द भारा।। मेहर से दिया गुरु भेद। शब्द का अगम अपारा ।। ध्यान धरत गुरु रूप। हुआ घट में उजियारा।। निस दिन सुरत लगाय।सुनत अनहद झनकारा।।बिन गुरु कैसे लगे। सुरत की घट में तारी ।। बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी।। ३ ।।

तिल का द्वारा फोड़। लखा घट जोत उजारा।। सुन धुन घंटा शंख। गगन में बजा नगारा।। गुरु का दरशन पाय। हुआ तन मन से न्यारा।। करम जाल कट गया। जूझ कर काल भी हारा।। बिन सतगुरु की सरन। नहीं अस होय उबारी।। बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी।। ४ ।।

सुन धुन ऊपर चढ़ी। करी हँसन सँग यारी।। महासुन्न के पार। सुनी मुरली धुन न्यारी।। सतपुर पहुँची धाय। लगी बीना धुन प्यारी।। लख अलख

अगम का रूप। हुई सूरत सुखियारी।। राधास्वामी चरनन मिली। हुआ आनँद अति भारी।। बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी।। ५ ।।

बारहमासा

।। शब्द ५ ।।

आया मास असाढ़। बिरह के बादल घट छाये।। नैनन झड़ता नीर। मेघ ज्यों रिमझिम बरखाये।। अन्न और पानी नहिं भावे।। हरदम पिया की याद। बिकल चित चहुँ दिस को धावे।। खटक दरशन की हिये साले।। बिन प्रीतम दीदार। नहीं मन कोइ बिधि कर माने ।। १ ।।

लागा सावन मास। घुमँड़ घन चहुँ दिस रहा बरखाय।। सुन सुन पपिहा बोल। बिरहनी रही जिये में घबराय।। तपन हिये में उठती भारी।। ढूँढ़त रही पिया धाम। खोज कर बैठी थक

हारी।। भेख और पंडित जग भरमान।।
निज घर सुद्ध न लाय।
रहे सब माया सँग अटकान।। २ ।।
तीजा भादों मास। बिरह की दौं लागी
भारी।। देखत अस अस हाल। पिया
आये संत रूप धारी।। सहज में मोहिं
दरशन दीन्हा।। घर का भेद बताय।
दया कर मोहिं अपना कीन्हा।।
शब्द की घट में राह लखाय।।
सतगुरु चरन अधार।
सुरत मन धुन सँग देत चढ़ाय।। ३ ।।
आया मास कुआर। सुरत गुरु चरनन
में लागी।। दिन दिन सेवा करत।
प्रीत हिये अंतर में जागी।। रूप गुरु
लागे अति प्यारा। सुनती चित से
बचन। अमी की ज्यों बरसे धारा।
हिये के मैल भरम निकसे।। मगन
हुई मन माहिं। फूल की
कलियाँ ज्यों बिगसे।। ४ ।।

कातिक काया ताक। सुरत मन घर
की सुध धारी।। गुरु स्वरूप धर
ध्यान। शब्द धुन सुनती झनकारी।
निरख घट अंतर उजियारी।। अचरज
लीला देख। होत अब तन मन
सुखियारी।। गुरू की बढ़ती नित
परतीत।। छिन छिन दया निहार।
उमँगती नइ नइ भक्ती रीत।। ५ ।।
अघहन अघ सब कटे। सुरत मन
निरमल होय आये।। मेहर करी गुरु
देव। तोड़ तिल नभ ऊपर धाये।।
सुनी वहँ घंटा संख पुकार। सहस
कँवल के माहिं। निरख रही निरमल
जोत उजार।। हिये से गुरु महिमा
गाती। निरखत दया अपार।
चरन पर नित बल बल जाती।। ६ ।।
माया जाड़ा लाग। पूस में मुरझाया
काला।। सुन धुन गगना पूर।
सुरत मन झट चढ़ गये बाला।। मेघ
जहँ गरजत घोरम् घोर।। बाजत

धुन मिरदंग। काल दल धर भागा घर
छोड़। सुरत गुरु दरशन कर
हरखाय।। छूटे करम कलेश। दया
गुरु छिन २ रही गुन गाय।। ७ ।।
माघ महीना लाग। खिलत रही चहुँ
दिस फुलवारी।। बेनी तीर चढ़ाय।
सुरत गई तिरलोकी पारी।। खेल रही
हंसन सँग कर प्यार।। मान सरोवर
न्हाय। सुनत रही किंगरी सारँग
सार।। शिखर चढ़ गई महासुन
पार।। सिंह नाग को टार। भँवर गढ़
पहुँची सतगुरु लार।। ८ ।।
फागुन फाग रचाय। पुरुष संग खेलत
सुर्त होरी। मुरली बीन बजाय।।
काल से कुल नाता तोड़ी।। मची
सतपुर में अचरज धूम।। जुड़ मिल
आये हंस। हरख कर आरत गावें
घूम।। प्रेम रंग भींज रहे सब कोय।
अचरज शोभा पुरुष निहारत।।
चरनन सुरत समोय।। ९ ।।

चैत महीना चेत। अधर की सुध ले
सुर्त चाली। पुरुष दई दुरबीन।।
अलख पुर पहुँची दर हाली। मगन हुई
दरस अलख पुर्ष पाय।। अरबन रवि
उजियार। पुरुष के इक इक रोम
लजाय।। ख़बर ले ऊपर को
धाई। अगम पुरुष दरबार।
निरख छबि अदभुत हरखाई।।१० ।।
आया मास बैसाख। चित्त में बाढ़ा
अनुरागा।। अगम लोक के पार।
ध्यान राधास्वामी चरनन लागा।।
सुरत चली धीरे से पग धार।। निरखा
अजब प्रकाश। द्वार पर रवि शशि
नहिं शुमार।। लखा जाय हैरत रूप
अनाम।। अकह अपार अनंत।
परम गुरु संतन का निज धाम।।११ ।।
सबसे जेठा धाम। आदि में वहीं से
सुर्त आई।। काल जाल की फाँस।
फँसी तन मन सँग दुख पाई ।। मिलें
कोई सतगुरु परम उदार। कर

उनका सतसंग प्रेम से।। तब होवे
निरवार। दीन दिल चरन सरन
धारे।। सुरत शब्द की राह।
अधर घर चढ़ जावे पारे।।१२ ।।
बारह मास पुकार। संत की निज
महिमा गाई।। सूरत शब्द लगाय।
मिलन का रस्ता बतलाई।। भाग बढ़
अपना क्या गाऊँ।। मिल गये
राधास्वामी द्याल। दई मोहिं निज
चरनन ठाऊँ।। जिऊँ मैं राधास्वामी
आधारे।। चरनन सुरत लगाय।
गाऊँ मैं धन धन स्वामी प्यारे।।१३ ।।

## बचन ३८ मिश्रित

।। शब्द १ ।।

क्या भूल रही जग माहिं।
घर को जाना है।। १ ।।
यह देश तुम्हारा नाहिं।
काल का थाना है।। २ ।।

सँग त्यागो पंडित भेष।
भरम भुलाना है।। ३ ।।
जो घट का देवे भेद।
वही गुरु स्याना है।। ४ ।।
सुर्त शब्द का भेद बताय।
घर पहुँचाना है।। ५ ।।
तू कर गुरु चरनन प्रीत।
रूप उन ध्याना है।। ६ ।।
सुन घट में धुन झनकार।
शब्द निशाना है।। ७ ।।
धुन डोरी गह मज़बूत।
सुरत चढ़ाना है।। ८ ।।
सुन घंटा संख पुकार।
मृदंग बजाना है।। ९ ।।
सुन किंगरी सारँग सार।
भँवर धुन गाना है।। १० ।।
धर अमर लोक पुर्ष ध्यान।
दरशन पाना है।। ११ ।।
लख अलख पुरुष पद पार।
अगम ठिकाना है।। १२।।

राधास्वामी धाम निहार।
दरस दिवाना है।।१३ ।।
गति पूरी पाई आज।
चरन समाना है।।१४ ।।

।। शब्द २ ।।

ऐसी गहरी पिरेमन नार।
गुरू को लीन्ह रिझाई।। १ ।।
सेवा करत प्रेम से निस दिन।
तन मन दीन्ह चढ़ाई।। २ ।।
गुरु दरशन बिन कल न पड़त है।
छिन छिन मन अकुलाई।। ३ ।।
जब गुरु दरशन करत मगन होय।
फूली तन न समाई।। ४ ।।
आरत कर कर प्रेम बढ़ावत।
गुरु छबि पर बल जाई।। ५ ।।
सुरत लगाय शब्द सँग धावत।
नभ तज गगन चढ़ाई।। ६ ।।
सुन्न सिखर चढ़ भँवरगुफा लख।
अमर लोक धस जाई।। ७ ।।
अलख अगम से मेला कर के।
राधास्वामी चरन समाई।। ८ ।।

* * * * *

।। शब्द ३ ।।

मनुआँ हठीला कहन न माने।
भोगन में रस लेत।। १ ।।
गली गली में भरमत डोले।
करे न गुरु सँग हेत।। २ ।।
सतगुरु दाता भेद बतावें।
सुरत शब्द रस देत।। ३ ।।
यह मूरख भरमन में अटका।
निस दिन रहे अचेत।। ४ ।।
माया सँग नित रहत भुलाना।
कस पावे पद सेत।। ५ ।।
कुटुँब जगत की प्रीत न छोड़े।
मर मर होय पिरेत।। ६ ।।
राधास्वामी जब निज दया बिचारें।
तब छूटे जम खेत।। ७ ।।

।। शब्द ४ ।।

अमी की बरखा हुइ भारी।
भींज रही अंतर सुर्त प्यारी।। १ ।।
सजी जहँ तहँ कँवलन क्यारी।
शब्द गुल फूली फुलवारी।। २ ।।

बासना त्यागी संसारी।
मगन होय चढ़त अधर प्यारी।। ३ ।।
गगन गुरु दरशन कीना री।
हुआ मन चरन अधीना री।। ४ ।।
सुन्न चढ़ निरखी उजियारी।
मिली हंसन सँग कर यारी।। ५ ।।
भँवर धुन लाग रही तारी।
मिला फिर सत्त शब्द सारी।। ६ ।।
दया राधास्वामी की भारी।
सरन दे चरन लगाया री।। ७ ।।

।। शब्द ५ ।।

सरन गुरु मोहिं मिला भेवा।
उमँग कर करती गुरू सेवा।। १ ।।
नित्त मैं सतसँग करूँ बनाय।
चरन गुरु राखूँ हिये बसाय।। २ ।।
सुमिरती रहूँ मैं नित गुरु नाम।
चरन गुरु ध्याय रहूँ नि:काम।। ३ ।।
चरन में प्रीत बढ़ाय रहूँ।
नित्त नइ उमँग जगाय रहूँ।। ४ ।।
धार गुरु चरनन में विश्वास।
जगत की त्यागूँ सब ही आस।। ५ ।।

भेद गुरु दीन्हा मोहिं बताय।
शब्द में राखूँ सुरत लगाय।। ६ ।।
मेहर गुरु जोत रूप झाँकूँ।
गगन चढ़ गुरु मूरत ताकूँ।। ७ ।।
दसम दर झाँकूँ पाट खुलाय।
महासुन चढ़ूँ गुरू सँग धाय।। ८ ।।
गुफा धुन सुनी बाँसरी सार।
अमरपुर दरशन पुरुष निहार।। ९ ।।
अलख और अगम के पार ठिकान।
धरूँ राधास्वामी चरनन ध्यान।।१० ।।
गाऊँ मैं आरत प्रेम भरी।
चरन राधास्वामी पकड़ धरी।।११ ।।
उमँग कर राधास्वामी गुन गाऊँ।
मेहर गुरु परशादी पाऊँ।।१२ ।।

।। शब्द ६ ।।

चलो री सखी सुनो अगम सँदेशा।
छोड़ देव अब जगत अँदेशा।। १ ।।
जग बिच नित दुख सुख सहना री।
जनम मरन से नहिं बचना री।। २ ।।
जग जीवन की प्रीत न साँची।
चाल ढाल उन सब है काँची।। ३ ।।

मन मग़रूर जगत में फंदे।
धन और नामवरी के बंदे।। ४ ।।
परमारथ की सार न जानें।
मान मनी घट माहिं बिराजे।। ५ ।।
उनसे प्रीत करत दुख पावे।
गुरु चरनन में चित्त न आवे।। ६ ।।
जो तुम चाहो अपन उधारा।
तज उन संग गहो गुरु द्वारा।। ७ ।।
भाग तुम्हारा नित नित जागे।
काम किरोध मोह मद भागे।। ८ ।।
परमारथ के बचन सम्हारो।
मन से जग का भाव निकारो।। ९ ।।
करो प्रतीत प्रीत चरनन में।
राधास्वामी नाम पुकारो छिन में।। १० ।।
राधास्वामी रूप अनूप अपारा।
चित्त बसाओ हिये धर प्यारा।। ११ ।।
छिन छिन झाँक रहो हिये अंतर।
राधास्वामी नाम सुनो गुरु मंतर।। १२ ।।
सुनो प्रेम से सतगुरु बानी।
दया मेहर की परख निशानी।। १३ ।।

गुरु दयाल नित दया बिचारें।
छिन छिन मन को आप सम्हारें।।१४ ।।
जगत भोग में रहे मलीना।
माया का रहे सदा अधीना।।१५ ।।
सतसँग जल से साफ़ करावें।
प्रेम दात दे चरन लगावें।।१६ ।।
बिरह बिना यह काज न होई।
मेहनत करे फल पावे सोई।।१७ ।।
या ते सतसँग सतगुरु धारो।
बचन सुनो हिये माहिं बिचारो।।१८ ।।
दिन दिन चरनन प्रीत बढ़ाओ।
करम भरम सब दूर हटाओ।।१९ ।।
मोह जगत तज चित को जोड़ो।
मन और सुरत शब्द सँग मोड़ो।।२० ।।
ऐसे कोइ दिन करो कमाई।
जग दुख सुख सब जाय नसाई।।२१ ।।
सुमिरन ध्यान भजन रस पाई।
भाग आपना लेओ सराही।।२२ ।।
चित से यह उपदेश सम्हारो।
राधास्वामी आरत नित प्रति धारो।।२३ ।।

गुन गाओ तुम राधास्वामी निस दिन।
सरन सम्हार गिरो उन चरनन।।२४ ।।
राधास्वामी सब बिधि करि हैं काज।
सरन पड़े की राखें लाज।।२५ ।।

।। शब्द ७ ।।

भूल भरम में जग अटकाना।
दूर दूर घर से भटकाना।। १ ।।
जल पषान पूजन ठहराया।
कोइ कोइ जिव विद्या भरमाया।। २ ।।
निज घर का कोइ खोज न करता।
जीव काज का सोच न धरता।। ३ ।।
निज घर भेद बतावें संता।
पीव मिलन का लखावें पंथा।। ४ ।।
उनका बचन न कोई माने।
काल जाल में रहे भुलाने।। ५ ।।
मेरा जागा भाग सुहावन।
संत चरन परतीत दिलावन।। ६ ।।
अचरज बचन सुने जब काना।
उमँग बढ़ी और प्रीत समाना।। ७ ।।
प्रीत सहित करता सतसंगा।
धारा हिये में सतगुरु रंगा।। ८ ।।

सुरत शब्द का मारग साँचा।
और रीत परमारथ काँचा।।९ ।।
धर विश्वास लिया उपदेशा।
संतन का अति ऊँचा देशा।।१० ।।
ध्यान धरत सुर्त मन सिमटाओ।
सतगुरु शब्द अधर घर धाओ।।११ ।।
यह संतन की जुगत अमोला।
दीन चित्त कोइ बिरले तोला।।१२ ।।
मथ मथ शब्द लखे परकासा।
घट में पावे अगम बिलासा।।१३ ।।
मैं अति दीन पड़ा गुरु चरना।
प्रेम सहित धारी हिये सरना।।१४ ।।
मेहर हुई निज भाग जगाई।
नित्त करूँ गुरु आरत आई।।१५ ।।
राधास्वामी नाम जपूँ निस बास।
पाऊँ राधास्वामी चरन निवास।।१६ ।।

।। शब्द ८ ।।

देख जग का व्यवहार असार।
करत रहा मन में नित्त बिचार।।१ ।।
कौन घर से यह जिव आया।
कौन याहि जग में भरमाया।।२ ।।

छोड़ जग फिर कहाँ जावेगा।
करम का फल कहाँ पावेगा।। ३ ।।
कौन है प्रेरक घट घट में।
रहा छिप दीखे नहिं पट में।। ४ ।।
कौन बिधि होय मालिक राज़ी।
कौन बिधि मन इन्द्री साधी।। ५ ।।
खोज मैं कीन्हा बहु भाँती।
न आई मन को कहिं शांती।। ६ ।।
भरम में फँस रहे पंडित भेख।
बाँध रहे सब मिल पिछली टेक।। ७ ।।
कोइ कोइ बिद्या में भरमान।
करत पुरुषारथ आपा ठान।। ८ ।।
न जानें को है निज करतार।
रूप अपने का करत बिचार।। ९ ।।
खोज उसका भी कुछ नहिं कीन्ह।
धारना पिंड रिदे में कीन्ह।। १० ।।
रहे अस मन आकाश समाय।
पता निज घर का कोइ नहिं पाय।। ११ ।।
हुआ मन मेरा अधिक उदास।
न आया उन बचनन विश्वास।। १२ ।।

भाग से प्रेमी जन मिले आय।
पता गुरु संगत दीन्ह बताय।।१३ ।।
उमँग कर सतसँग में आया।
भेद निज घर का वहाँ पाया।।१४ ।।
सुरत और शब्द जोग की रीत।
लखी और मन में भई परतीत।।१५ ।।
प्रेम सँग करता नित अभ्यास।
देखता घट में परम बिलास।।१६ ।।
सुरत सतपुर से यहाँ आई।
काल ने जग में भरमाई।।१७ ।।
शब्द की डोरी गह कर हाथ।
उलट घर जावे सतगुरु साथ।।१८ ।।
होय कर जन्म मरन से न्यार।
अमर घर पावे सुक्ख अपार।।१९ ।।
चरन में गुरु के धर परतीत।
बढ़ावे छिन छिन घट में प्रीत।।२० ।।
नाम राधास्वामी हिरदे धार।
कमावे सुरत शब्द की कार।।२१ ।।
कोई दिन अस करनी बन आय।
मगन होय सुरत चरन रस पाय।।२२ ।।

चरन में बिनय करूँ हर बार।
लेओ मन सूरत मोर सुधार।।२३ ।।
दूत सँग भरमत दिन और रात।
उठावत नित नित नये उतपात।।२४ ।।
दया की दृष्टी मो पर डाल।
काट दो मन माया का जाल।।२५ ।।
हुआ मेरे मन में निश्चय आज।
करें मेरा राधास्वामी पूरन काज।।२६ ।।
जगाया राधास्वामी मेरा भाग।
दिया मोहिं चरन सरन अनुराग।।२७ ।।
उमँग कर आरत उन गाऊँ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ।।२८ ।।

।। शब्द ९ ।।

सिंध से आई सूरत नार।
पिंड में आन फँसी नौ द्वार।। १ ।।
भोग इंद्रियन सँग करत बिलास।
जगत में कीन्हा सत विश्वास।। २ ।।
दुक्ख सुख भोगत मन के माहिं।
अहँग बुध धारी तन के माहिं।। ३ ।।
करम और धरम रही भरमाय।
गुनन सँग निस दिन चक्कर खाय।। ४ ।।

भूल गई यहँ आय निज घर बार।
न जाने को है सत करतार।।५।।
पूजते कृत्रिम देव अनित्त।
भरमते जग बिच धर कर चित्त।।६।।
भेष और पंडित आप भुलाय।
दिया सब जीवन को भरमाय।।७।।
संत सतगुरु बिन नहीं उबार।
द्याल घर वही पहुँचावनहार।।८।।
भाग बढ़ हम सब का जागा।
सूत राधास्वामी चरनन लागा।।९।।
जुड़ा राधास्वामी संगत से नात।
बचन सुन मन बुधि पाई शांत।।१०।।
संत मत महिमा जान पड़ी।
सुरत गुरु चरनन आन धरी।।११।।
शब्द का लिया उपदेश सम्हार।
सुरत मन झाँकत मोक्ष दुआर।।१२।।
दया राधास्वामी लेकर संग।
करम और भरम किये सब भंग।।१३।।
बरत और तीरथ दिये उड़ाय।
मोह जग मन से दिया हटाय।।१४।।

प्रीत गुरु चरनन नित्त बढ़ाय।
सुरत मन घट में अधर चढ़ाय।।१५ ।।
सहस दल देखा जोत उजार।
गगन चढ़ निरखा सूर अकार।।१६ ।।
सुन्न चढ़ लखी चाँदनी सार।
भँवर में सेत सूर उजियार।।१७ ।।
अमरपुर कोटन सूर उजास।
पाइया सतगुरु चरन निवास।।१८ ।।
अलख और अगम का देख बिलास।
अनामी धाम लखा परकाश।।१९ ।।
अजब गत राधास्वामी निरख निहार।
मिला अब राधास्वामी सरन अधार।।२० ।।
आरती करती उमँग जगाय।
चरन राधास्वामी हिये बसाय।।२१ ।।

।। शब्द १० ।।

उमर सारी बीत गई जग में।
भरम मेरे धस रहे रग रग में।। १ ।।
ज्ञान मत धार रहा कोइ काल।
शांति नहिं पाई रहा बेहाल।। २ ।।
भाग से गुरु भक्त मिलिया आय।
संत मत भेद दिया दरसाय।। ३ ।।

समझ में आई सत मत रीत।
चरन गुरु धारी हिये परतीत।।४ ।।
उमँग कर दरशन को धाया।
देख सतसंगत हरखाया।।५ ।।
अजब गत राधास्वामी मत जानी।
शब्द की महिमा मन मानी।।६ ।।
करम और भरम किये सब दूर।
जगत के सब मत देखे कूड़।।७ ।।
शब्द बिन सब जग रहा अंधा।
संत बिन को काटे फंदा।।८ ।।
भाग मोहिं निरबल का जागा।
चरन में गुरु के मन लागा।।९ ।।
सुरत और शब्द जुगत धारी।
पिरेमी जन सँग की यारी।।१० ।।
हुआ मेरे मन अस विश्वासा।
करें गुरु पूरन मम आसा।।११ ।।
रहूँ नित गुरु चरनन दासा।
चरन में राधास्वामी पाउँ बासा।।१२ ।।

।। शब्द ११ ।।

प्रेम घटा घट छाय रही।।टेक।।
धुन झनकार शब्द की धारा।
अमृत रस बरसाय रही।।१ ।।

भींज रही सुर्त नार रँगीली।
रसक रसक गुन गाय रही।। २ ।।
प्रिय राधास्वामी चरन धर हिये में।
उमँग उमँग लिपटाय रही।। ३ ।।
अधर चढ़त सुन धुन सुर्त प्यारी।
सुन्न सरोवर न्हाय रही।। ४ ।।
हंसन संग नवीन बिलासा।
निरख निरख मगनाय रही।। ५ ।।
सुनत अधर में मधुर धुन मुरली।
भँवरगुफा पर छाय रही।। ६ ।।
सत्तपुरुष का दरशन करके।
प्रेम नवीन जगाय रही।। ७ ।।
अलख अगम का दरस निहारत।
अचरज भाग सराह रही।। ८ ।।
रा धा स्वा मी चरन सिहारत।
हरख हरख मुसकाय रही।। ९ ।।

।। शब्द १२ ।।

मेरा जिया ना माने सजनी।
जाऊँगी गुरु दरबार।। १ ।।
सेवा करूँ बचन उर धारूँ।
नित्त बढ़ाऊँ प्यार।। २ ।।

गुरु छबि देख मगन हिये होती।
मैं तो छिन छिन जाउँ बलिहार।। ३ ।।
चरन सरन प्रीतम दृढ़ करती।
वोही हैं सत करतार।। ४ ।।
सुरत शब्द का जोग कमाऊँ।
भौसागर उतरूँ पार।। ५ ।।
प्रीत प्रतीत बढ़ी अब हिये में।
काल करम रहे हार।। ६ ।।
जग जीवन को आख सुनाऊँ।
मेरे गुरु का करो दीदार।। ७ ।।
तीरथ मूरत व्रत आचारा।
त्यागो भोग बिकार।। ८ ।।
प्रीत प्रतीत धरो चरनन में।
जो चाहो उद्धार।। ९ ।।
राधास्वामी नाम पुकारो।
छोड़ो जगत लबार।।१० ।।
आस भरोस धरो उन चरनन।
घट में देख बहार।। ११ ।।

।। शब्द १३ ।।

मनुआँ सिपाही चरनन लागा।
घट परतीत पकाय।। १ ।।

नाम तेग़ धारत कर अपने।
काल का सीस कटाय।। २ ।।
परम पुरुष राधास्वामी बल हिये धर।
चोरन मार हटाय।। ३ ।।
इन्द्रियन सँग नित करत लड़ाई।
ठगियन दूर पराय।। ४ ।।
करम भरम सब दूर निकारे।
भक्ती लीन्ह जगाय।। ५ ।।
सुरत शब्द गुरु मत घट धारा।
मन मत दूर बहाय।। ६ ।।
काल मते में जगत फँसाना।
करम धरम अटकाय।। ७ ।।
कुमत अधीन जीव सब भरमत।
नित चौरासी धाय।। ८ ।।
मेरा भाग जगा गुरु किरपा।
सूरत शब्द लगाय।। ९ ।।
सुन सुन धुन हरखत रहूँ मन में।
निस दिन गुरु गुन गाय।। १० ।।
राधास्वामी नाम जपूँ नित हिये में।
चरनन ध्यान लगाय।। ११ ।।

गुरु छबि देख मगन हिये माहीं।
अचरज भाग सराय।।१२ ।।
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ।
गत मत बरनी न जाय।।१३ ।।
मैं तो नीच अधम नाकारा।
कीन्ही मेहर बनाय।।१४ ।।
चरन सरन दे पार उतारा।
रा धा स्वा मी हुए हैं सहाय।।१५ ।।
उमँग उमँग गुरु आरत गाऊँ।
तन मन भेंट चढ़ाय।।१६ ।।
राधास्वामी चरनन पर बल जाऊँ।
रहूँ नित सरन समाय।।१७ ।।

।। शब्द १४ ।।

मेरे लगी प्रेम की चोट। बिकल मन
अति घबरावे।। कोइ कछू कहे समझाय।
चित्त में नेक न आवे।। १ ।।
मात पिता बहु कहें। बहन और भाई
भतीजे।। मूरख हैं सब लोग।
प्रीत उन दिन दिन छीजे।। २ ।।

मैं सतगुरु बल धार। चरन में प्रीत बढ़ाता।। जग से होय निरास। रूप गुरु निस दिन ध्याता।। ३ ।।
दया करी गुरु देव। सुरत अब धुन में लागी।। घट में देख बिलास। सरन में दृढ़ कर पागी।। ४ ।।
राधास्वामी दीन दयाल। दया कर मोहिं अपनाया।। करम भरम को काट। तिरकुटी पार पहुँचाया।। ५ ।।
सुन्न महासुन होय। गई सुर्त सोहँग पासा।। आगे सतपद परस। अलख लख अगम निवासा।। ६ ।।
पहुँची राधास्वामी धाम। मेहर से सतगुरु के री।। दरशन राधास्वामी पाय। दया उन छिन छिन हेरी।। ७ ।।

।। शब्द १५ ।।

दास हुआ चरनन में लौलीन।
ध्यान गुरु लाय ताड़ी।। १ ।।
जगत की दई बासना त्याग।
देख घट उजियारी।। २ ।।

सुरत मन मगन होत सुन सुन।
शब्द धुन झनकारी।। ३ ।।
काम और क्रोध गये घर छोड़।
हुआ तन सुखियारी।। ४ ।।
करम और भरम हुए सब दूर।
हुई जग से न्यारी।। ५ ।।
काल और करम रहे सब हार।
थकी माया नारी।। ६ ।।
सुरत मन हो गये अब निरबंध।
चढ़त नभ के पारी।। ७ ।।
निरख गुरु दरशन त्रिकुटी माहिं।
चरन पर जाऊँ वारी।। ८ ।।
सुन्न और महासुन्न के पार।
सुनी बंसी प्यारी।। ९ ।।
अमरपुर निरख पुरुष का रूप।
अजब गत सुर्त धारी।। १० ।।
अधर चढ़ निरखा राधास्वामी धाम।
मेहर उन करी भारी।। ११ ।।
करूँ क्या अस्तुत उनकी गाय।
चरन पर बलिहारी।। १२ ।।

॥ शब्द १६ ॥

गुरु नैन रसीले निरखे।
मेरे सिमट गये मन प्रान॥ १ ॥
पुरुष अंस मेरी निरमल सूरत।
बसी काल घर आन॥ २ ॥
बिना दया सतगुरु पूरे के।
कस उलटे घर जान॥ ३ ॥
राधास्वामी प्यारे मिले परम गुरु।
उन दीना पता निशान॥ ४ ॥
दृष्टि करी भरपूर मेहर की।
पहुँची अधर ठिकान॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

राधास्वामी सतगुरु पूरे।
मैं आया सरन हज़ूरे॥ १ ॥
मैं औगुन हारा भारी।
तुम बख़्शो भूल हमारी॥ २ ॥
मैं जग में बहु भरमाया।
कहीं घर का पता न पाया॥ ३ ॥
तुम कीन्ही दात अपारी।
निज घर का भेद दिया री॥ ४ ॥

सुर्त शब्द जुगत समझाई।
सुमिरन और ध्यान बताई॥ ५ ॥
जो करे कमाई हित से।
और बचन सुने जो चित से॥ ६ ॥
वह छिन छिन घट में धावे।
और शब्द अमी रस पावे॥ ७ ॥
गुरु मेरा भाग जगाया।
मन सूरत शब्द लगाया॥ ८ ॥
अब मन में रहूँ मगन मैं।
शब्दा रस पिऊँ अपन में॥ ९ ॥
गुरु बचन लगे मोहिं प्यारे।
सुन सुन हुआ जग से न्यारे॥ १० ॥
मेरे औगुन चित न बिचारे।
गुरु कीन्ही दात अपारे॥ ११ ॥
सतसंगत में जब रलिया।
गुरु प्रेमी जन सँग मिलिया॥ १२ ॥
गुरु भक्ती रीत पिछानी।
निश्चय कर मन में मानी॥ १३ ॥
सोई जन है बड़ भागी।
जिन हिरदे भक्ती जागी॥ १४ ॥

राधास्वामी से करूँ पुकारी।
मोहिं दीजे भक्ति करारी।।१५ ।।
नित सुरत शब्द में भरना।
चित रहे तुम्हारे चरना।।१६ ।।
माया से लेओ बचाई।
राधास्वामी नाम धियाई।।१७ ।।
गुरु आरत निस दिन गाऊँ।
राधास्वामी चरन समाऊँ।।१८ ।।

।। शब्द १८ ।।

काहे को डरपे मन नादान।
रहो छिप कँवल कली में आन।। १ ।।
पकड़ ले गुरु की ओट सम्हार।
करम और काल रहें तब हार।। २ ।।
शब्द का मारग ले कर सार।
धुनन की सुन घट में झनकार।। ३ ।।
खेल रहा बालक सम जग माहिं।
जकड़ कर पकड़त नहिं गुरु बाँह।। ४ ।।
इसी से होत भरम भारी।
गुरू का बल हिये नहिं धारी।। ५ ।।
चेत कर करो आज सतसंग।
चित्त में धारो ढंग उमंग।। ६ ।।

बसाओ घट में राधास्वामी प्रीत।
चलो निज घर को भौजल जीत।। ७ ।।

।। शब्द १९ ।।

पूरन भक्ति देओ गुरु दाता।
सुरत रहे तुम चरनन साथा।। १ ।।
मन बिच प्रीत बढ़ाओ दिन दिन।
गुन गाऊँ राधास्वामी छिन छिन।। २ ।।
जग बिच दुख पाए बहुतेरे।
हार पड़ा होय चरनन चेरे।। ३ ।।
काल करम मोहिं नित भरमावत।
मन इंद्री भोगन सँग धावत।। ४ ।।
तुम बिन और न रक्षक मेरा।
लीजे मोहिं बचाय सबेरा।। ५ ।।
भेद तुम्हारा अगम अपारा।
सुरत शब्द मारग अति सारा।। ६ ।।
सो किरपा कर दिया मोहिं दाना।
घट में पाया नाम निशाना।। ७ ।।
अब यह बिनय सुनो मेरे साईं।
राखो मन चरनन की छाईं।। ८ ।।
कर जल्दी खोलो घट द्वारा।
देखूँ नभ में जोत उजारा।। ९ ।।

बंक नाल धस त्रिकुटी फोड़ूँ।
काल करम का बल सब तोड़ूँ।।१० ।।
सुन्न सिखर चढ़ तन मन वारूँ।
चंद्र चाँदनी चौक निहारूँ।।११ ।।
गुरु बल जाउँ महासुन पारा।
सुनूँ गुफा धुन सोहँग सारा।।१२ ।।
सतपुर दरस पुरुष का पाऊँ।
अलख अगम के पार चढ़ाऊँ।।१३ ।।
रा धा स्वा मी चरन निहारूँ।
उमँग सहित उन आरत धारूँ।।१४ ।।
पूरन सरन प्रसादी पाऊँ।
प्रेम सहित नित चरन धियाऊँ।।१५ ।।
उलट जगत में फिर चल आऊँ।
जीवन को निज नाम सुनाऊँ।।१६ ।।
चरन ओट ले राधास्वामी गाओ।
भाग आपना आज जगाओ।।१७ ।।
फिर औसर ऐसा नहिं पाओ।
चौरासी का फेर बचाओ।।१८ ।।
जो कहना नहिं मानो मेरा।
जन्म जन्म दुख सहो घनेरा।।१९ ।।

या से आजहि काज बनाओ।
राधास्वामी २ छिन छिन गाओ।।२० ।।
बड़े भाग पाई राधास्वामी सरना।
भौसागर से सहजहि तरना।।२१ ।।

।। शब्द २० ।।

राधास्वामी चरनन आओ रे मना।
भाग अपना लेव जगाय रे मना।। १ ।।
तन मन धन सँग तुम लाओ रे मना।
गुरु चरनन भेंट चढ़ाओ रे मना।। २ ।।
अब काम क्रोध तज आओ रे मना।
तब राधास्वामी किरपा पाओ रे मना।। ३ ।।
सतसँग कर भाव बढ़ाओ रे मना।
गुरु चरनन सुरत लगाओ रे मना।। ४ ।।
शब्दा रस घट में पाओ रे मना।
गुरु महिमा छिन छिन गाओ रे मना।। ५ ।।
वहाँ अनहद तूर बजाओ रे मना।
दसवाँ दर सहज खुलाओ रे मना।। ६ ।।
सुर्त खैंच अधर को चढ़ाओ रे मना।
धुन मुरली बीन सुनाओ रे मना।। ७ ।।
वहाँ से भी क़दम बढ़ाओ रे मना।
राधास्वामी चरन समाओ रे मना।। ८ ।।

।। शब्द २१ ।।

ऐसी चौपड़ खेलो जग में।
लाल होय पहुँचो गुरु पद में।। १ ।।
माया काल से बाज़ी लाग।
होय हुशियार जगत से भाग।। २ ।।
सुरत गोट चौपड़ में अटकी।
बिन सतगुरु चौरासी भटकी।। ३ ।।
पूरे गुरु से मिल धर प्रीत।
जुग बाँधो कर दृढ़ परतीत।। ४ ।।
प्रेम सहित उन सँग घर चलना।
चोट न खाओ काल बल दलना।। ५ ।।
काल दूत जो बिघन करावें।
मार कूट उन तुरत हटावें।। ६ ।।
खेत जिताय चढ़ावें रंग।
दूर करावें सब बदरंग।। ७ ।।
तीन धार के पासे डाले।
सुखमन होय सुरत घर चाले।। ८ ।।
दाव पड़ा मेरा अब के भारी।
सतगुरु मिल मोहिं आप सम्हारी।। ९ ।।
ऐसा औसर फिर नहिं मिलही।
जम को कूट पार घर चलही।।१० ।।

गुरु सँग जुग सीधा घर जावे।
रस्ते में कोइ बिघन न आवे।।११ ।।
गुरु पद परस लाल हो जावे।
सतपुर जाय सेत पद पावे।।१२ ।।
धुन मुरली और बीन सुनावे।
सतगुरु चरन परस हरखावे।।१३ ।।
अलख अगम घर निरख निहारे।
धाम अनामी अधर सिधारे।।१४ ।।
राधास्वामी चरन धार परतीती।
काल और महाकाल दल जीती।।१५ ।।
अस चौपड़ राधास्वामी खिलाई।
सुरत जीत कर निज घर आई।।१६ ।।

।। शब्द २२ ।।

जो जन राधास्वामी सरना पड़े।
उनके जागे भाग बड़े।। १ ।।
कर सतसँग उन प्रीत बढ़ाई।
मान मोह तज न्यारे खड़े।। २ ।।
जग भय भाव लाज तज दीन्ही।
सतसँग में नित रहत अड़े।। ३ ।।
धर परतीत गहे गुरु चरना।
सहज सहज भौ सिन्धु तरे।। ४ ।।

गुरु बल जीत लिया मैदाना।
मन माया से ख़ूब लड़े।। ५ ।।
काम क्रोध अहंकार लबारा।
लोभ मोह सब मार धरे।। ६ ।।
राधास्वामी काज किया सब पूरा।
उन बिन को अस दया करे।। ७ ।।

।। शब्द २३ ।।

मन रे सतसँग गुरु का करो।
प्रीत प्रतीत निज हिये धरो।। १ ।।
उनका सँग कर समझ सम्हारो।
घट अँधियारा दूर करो।। २ ।।
सुरत शब्द मारग ले उनसे।
सुरत शब्द में नित्त भरो।। ३ ।।
राधास्वामी नाम सुमिर छिन २ में।
गुरु स्वरूप का ध्यान धरो।। ४ ।।
सेवा करो प्रीत से गुरु की।
दीन होय उन चरन पड़ो।। ५ ।।
दया लेओ हरदम तुम उन की।
तब यह भौजल सहज तरो।। ६ ।।
राधास्वामी दया मेहर ले साथा।
काल करम से नाहिं डरो।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द २४ ।।

रागी जन माया के पाले पड़े।।टेक।।
नित प्रति उसके धक्के खावें।
त्रिय तापन की अगिन जरे।। १ ।।
गुरु दरशन में भाव न लावें।
धन वालों के द्वारे खड़े।। २ ।।
जो गुरु बचन सुनावें उनको।
नेक न मानें मान भरे।। ३ ।।
निंदा कर सिर भार चढ़ावें।
नरकन में सहें दुक्ख बड़े।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर से खैंच चरन में।
यह जिव भी भौ पार करे।। ५ ।।

।। शब्द २५ ।।

मन रे क्यों न धरे गुरु ध्याना।
तज मान मोह अज्ञाना।। १ ।।
गुरु सँग प्रीत करो तुम ऐसी।
जस बालक माता लिपटाना।। २ ।।
गुरु स्वरूप लागे अस प्यारा।
जस तिरिया सँग पति हरखाना।। ३ ।।
जब लग घट में प्रेम न होवे।
ध्यान धरत मन रस नहिं पाना।। ४ ।।

दया मेहर सतगुरु की सँग ले।
दीन होय चित भजन समाना।। ५ ।।
मन को रोक सुनो धुन घट में।
सहज सहज तन से अलगाना।। ६ ।।
इस बिधि कार करो तुम निस दिन।
पाओ राधास्वामी चरन ठिकाना।। ७ ।।

।। शब्द २६ ।।

हंसनी क्यों न सुने गुरु बानी।
जग सँग रहत मिलानी।। १ ।।
वक़्त अमोल जाय योंही बीता।
परमारथ की सार न जानी।। २ ।।
सोच बिचार करो अब मन में।
नहिं तो बहुत होय तेरी हानी।। ३ ।।
भोग जगत के त्यागो मन से।
क्यों तू इन सँग भूल भुलानी।। ४ ।।
सतसँग कर परतीत बढ़ाओ।
प्रीत चरन में गुरु के आनी।। ५ ।।
घट का भेद लेव तुम उन से।
सुरत शब्द में नित्त लगानी।। ६ ।।
राधास्वामी काज करें तेरा पूरा।
उनके चरन में सुरत समानी।। ७ ।।

* * * * *

॥ शब्द २७ ॥

अरे मन क्यों नहिं धारे गुरु ज्ञान ॥ टेक ॥
सत चेतन घट माहिं बिराजे।
तू बाहर जड़ सँग भरमान ॥ १ ॥
निज घर तेरा अगम अपारा।
तू रहा जग सँग यहाँ भुलान ॥ २ ॥
धन और मान पाय बहु फूला।
तिरिया सुत सँग मेल मिलान ॥ ३ ॥
जग की हालत नित उठ देखे।
कोई न ठहरे सभी चलान ॥ ४ ॥
फिर फिर बिरधी चाहे यहाँ की।
ऐसा मूरख समझ न लान ॥ ५ ॥
कभी जाग्रत कभी सुपन अवस्था।
गहरी नींद में कभी सुलान ॥ ६ ॥
इन हालों में नित प्रति बरते।
परख न लावे अजब सुजान ॥ ७ ॥
मद माता भोगन में राता।
मोह जाल में रहा फँसान ॥ ८ ॥
करता की रचना नित देखे।
तौ भी उसका खोज न आन ॥ ९ ॥

परगट है क़ुदरत का खेला।
यह पोथी कभी पढ़ी न पढ़ान।।१० ।।
खान पान में बैस बितावत।
मरने की कभी सुद्ध न लान।।११ ।।
काम क्रोध और लोभ लहर में।
बहत रहे निस दिन अनजान।।१२ ।।
जो कोई बचन चितावन कारन।
कहे तो उससे रूसे आन।।१३ ।।
साध संत हुए जिव हितकारी।
परमारथ की राह लखान।।१४ ।।
शब्द भेद दे जुगत बतावें।
सुरत चढ़ावें अधर ठिकान।।१५ ।।
जनम मरन की फाँसी काटें।
काल करम से सहज बचान।।१६ ।।
तिनका बचन सुने नहिं चित दे।
सोचे न अपनी लाभ और हान।।१७ ।।
संत संग नाता नहिं जोड़े।
सतसँग में नहिं बैठे आन।।१८ ।।
कुटुँब जगत का मोह न छोड़े।
क्यों कर पावे नाम निशान।।१९ ।।

जीव हुआ लाचार जगत में।
निरबल निरधन निपट अजान ।। २० ।।
जब लग मेहर न होवे धुर की।
संत मता कस माने आन ।। २१ ।।
राधास्वामी दया करें जिस जन पर।
संत चरन में वही लगान ।। २२ ।।
प्रीत लाय नित करे साध सँग।
सुरत शब्द की कार कमान ।। २३ ।।
शब्द शब्द रस पिये अधर चढ़।
सतगुरु का हिये धर कर ध्यान ।। २४ ।।
दया हुई कारज हुआ पूरा।
रा धा स्वा मी चरन समान ।। २५ ।।

।। शब्द २८ ।।

गुरु सँग प्रीत न कोई करे।
चरनन में नहिं भाव धरे ।। १ ।।
जो सतसंगी बचन सुनावें।
मूरखता कर उनसे लड़े ।। २ ।।
जगत भोग में गया भुलाई।
जम धक्के नित खाता फिरे ।। ३ ।।
माया संग रहा अटकाई।
भौसागर कहो कैसे तरे ।। ४ ।।

राधास्वामी दया करें जब अपनी।
इन जीवन की बिपता टरे।।५ ।।

।। शब्द २९ ।।

भोग

राधास्वामी सेव करत धर प्यारा।
बिंजन अनेक कीन्ह तैयारा।।१ ।।
भर भर थाल धरे स्वामी आगे।
सर्व पदारथ अमी रस पागे।।२ ।।
प्रेम सहित स्वामी ध्यान सम्हारा।
गगन मँडल धुन शब्द पुकारा।।३ ।।
अधर चढ़त निरखा जाय सतपुर।
रूप सुहावन राधास्वामी सतगुरु।।४ ।।
दया करी स्वामी भोग लगाया।
अमी रस स्वाद दीन्ह बरखाया।।५ ।।
उमँग २ सतसंगी मिल कर।
लें परशादी हिये भाव धर।।६ ।।
प्रेम बढ़त घट में अब तिल तिल।
राधास्वामी गुन गावें सब मिल मिल।।७ ।।

* * * * *

## राधास्वामी मत की
## पुस्तकों का सूचीपत्र

### पद्य (हिन्दी)

१ ) सार बचन छंद बंद, पहला भाग
२ ) सार बचन छंद बंद, दूसरा भाग
३ ) प्रेमबानी, पहला भाग
४ ) प्रेमबानी, दूसरा भाग
५ ) प्रेमबानी, तीसरा भाग
६ ) प्रेमबानी, चौथा भाग
७ ) संत संग्रह, पहला भाग
८ ) संत संग्रह, दूसरा भाग
६ ) प्रेम प्रकाश
१० ) बिनती प्रार्थना
११ ) नियमावली

### गद्य ( हिन्दी )

१२ ) सार बचन बार्तिक
१३ ) आख़री बचन स्वामीजी महाराज
१४ ) प्रेमपत्र, पहला भाग
१५ ) प्रेमपत्र, दूसरा भाग
१६ ) प्रेमपत्र, तीसरा भाग
१७ ) प्रेमपत्र, चौथा भाग
१८ ) प्रेमपत्र, पाँचवाँ भाग
१६ ) प्रेमपत्र, छठा भाग

२० )   जुगत प्रकाश
२१ )   सार उपदेश
२२ )   प्रेम उपदेश
२३ )   राधास्वामी मत संदेश
२४ )   राधास्वामी मत उपदेश
२५ )   निज उपदेश
२६ )   प्रश्नोत्तर सन्त मत
२७ )   छाँटे हुये बचन महात्माओं के
२८ )   गुरु उपदेश
२६ )   बचन महाराज साहब
३० )   बचन बाबूजी महाराज, पहला भाग
३१ )   बचन बाबूजी महाराज, दूसरा भाग
३२ )   बचन बाबूजी महाराज, तीसरा भाग
३३ )   बचन बाबूजी महाराज, चौथा भाग
३४ )   जीवन चरित्र, स्वामीजी महाराज
३५ )   जीवन चरित्र, हुज़ूर महाराज
३६ )   जीवन चरित्र, बाबूजी महाराज
३७ )   शब्द कोश संत मत बानी
३८ )   लोक-परलोक हितकारी
३६ )   मौलाना रूम के दृष्टान्त और
औलियाओं की कथाएँ
४० )   समाध पुस्तिका

## Books In English

४१ ) राधास्वामी मत प्रकाश
Radhasoami Mat Prakash

४२ ) डिस्कोर्सेज़ ऑन राधास्वामी फ़ेथ
Discourse On Radhasoami Faith

४३ ) फेलप्स साहब के नोट्स
Phelp’s Notes

४४ ) ए सोलेस टू सतसंगीज़
A Solace to Satsangis